धर्मे ते धीयतां बुद्धिः

मनस्ते महदस्तु च

सातवाँ वर्ष - प्रथम अंक

जून 2022

सनातन संवर्धिनी

डॉ. देश बन्धु

नव निर्वाचित प्रधान

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.), नई दिल्ली

श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति, चण्डीगढ़

जूनापीठाधीश्वर आचार्य प्रवर स्वामी अवधेशानन्द गिरी जी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए प्रधान डॉ. देशबन्धु एवं पदाधिकारी

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी०) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र : दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर)

मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 9820694600, 7977193471

शाखा कार्यालय-1 : सप्तऋषि आश्रम, सप्तसरोवर मार्ग, हरिद्वार, दूरभाष: 7217013571, 7217013573

शाखा कार्यालय-2 : गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर 19-ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष : 0172-2543283

E-mail: sdprsabha@gmail.com

सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में डॉ. शिवकुमार स्मृति श्री सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सालय के उद्घाटन की झलकियां

गोस्वामी गणेशदत्त महाविद्यालय हरियाना (होशियारपुर) में सांईस ब्लाक को पूर्व प्रधान डॉ. शिव कुमार शर्मा की स्मृति में समर्पण के कार्यक्रम की झलकियां

संपादक मण्डल

संरक्षकः डॉ. देश बन्धु **संपादक मंडलः** डॉ. नन्द किशोर शर्मा, डॉ. भारती बन्धु, डॉ. विजय शर्मा ।

परामर्श मंडलः श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी, श्री उपेन्द्र शर्मा, डॉ. गुरदीप शर्मा

वर्णव्यवस्था और सामाजिक समरसता

डॉ नन्द किशोर शर्मा
प्रधान सम्पादक

प्रारंभ में ही निवेदन करना चाहूँगा कि किसी वर्णविशेष या जातिविशेष का उत्कर्ष या अपकर्ष दिखाना इस आलेख का लेशमात्र भी उद्देश्य नहीं है। नाना वर्णों, जातियों और उपजातियों में विभाजित हिन्दू समाज को संगठित करना और उन्हें भावात्मक एकता के सुदृढ़ सूत्र में पिरोना इस आलेख का मूल उद्देश्य है। इस निमित्त यदि किसी व्यक्ति, जाति, वर्ण या वर्ग विशेष का मन आहत हो तो इसके लिए मैं पहले ही नतमस्तक हो कर उससे क्षमाप्रार्थी हूँ।

वर्णव्यवस्था और आश्रम व्यवस्था वैदिक संस्कृति और सनातन धर्म के मूलभूत सिद्धांत हैं। वैसे विश्व के समस्त धर्मों और संस्कृतियों में जातिवाद के बीज मिलते हैं। प्राचीन काल में फारस,रोम और जापान आदि अनेक देशों में जन्म और व्यवसाय पर आधारित जाति-व्यवस्था प्रचलित रही है। किन्तु जन्म और कर्म के आधार पर जैसी जातिपरक परम्पराएँ भारत में उपजीं और समय के प्रवाह के साथ-साथ और अधिक विकसित होती चली गई वैसा विश्व में अन्यत्र संभव न हो सका। अन्य देशों में पाई जाने वाली ऐसी व्यवस्था खुल-खिल न सकी और समय के प्रवाह में पड़ कर समाप्त हो गई। समाज शास्त्र और धर्म शास्त्र के परिपुष्ट आधार पर ही भारतीय वर्णव्यवस्था और जाति वाद निरन्तर गतिमान रहे हैं और आज तक अपना अस्तित्व बनाए हुए है। तत्त्व दर्शी ऋषियों-मुनियों, सन्तों और समाजसुधारकों के उदार और लचीले विचारों और व्यवहारों के फलस्वरूप वर्ण व्यवस्था के हठधर्मी स्वरूप में समय समय पर अनेकविध संस्कार और परिष्कार के माध्यम से निरन्तर परिवर्तन भी होता रहा है। लेख में इस संदर्भ में कुछ प्रामाणिक दृष्टान्त प्रस्तुत किए जाएँगें।

विश्वजनीन सत्य है कि व्यक्ति की यह सहज मनोवृत्ति है कि वह स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ दिखाना चाहता है। इसके लिए उसे कुछ सत्कर्म कर अपनी श्रेष्ठता को प्रमाणित करना होता है। इस प्रकार श्रेष्ठता का मूलाधार व्यक्ति का सत्कर्म होता है। एक बार श्रेष्ठता के प्रमाणित हो जाने पर वह श्रेष्ठ व्यक्ति उस अर्जित श्रेष्ठता को भौतिक सम्पत्ति की भाँति अपने वंशजों में संचरित होते देखना चाहता है। यहीं से जन्म के आधार पर वंशपरंपरा के रूप में व्यक्तियों के विशेष-विशेष समूहों के लिए जातिवाद या वर्णव्यवस्था का बीजवपन होता है ।इस प्रकार सनातन-परंपरा में जन्म और कर्म दोनों ही देश और काल के भेद से वर्ण व्यवस्था और जाति वाद के मूल आधार माने गए हैं। इस सम्बंध में मनुस्मृति में स्पष्ट उल्लेख है कि तप अर्थात् कर्म के प्रभाव से और बीज (जन्म) के प्रभाव से अर्थात् दोनों प्रकार से प्रत्येक युग में उत्पन्न पुत्र मनुष्य-जन्म की उच्चता और अवचता को प्राप्त होते रहते हैं-

तपोबीजप्रभावैस्तु ते गच्छन्ति युगे युगे ।
उत्कर्षं चापकर्षं च मनुष्येष्विह जन्मतः ॥ मनुस्मृति १०/४१

उदाहरण के रूप में महर्षि विश्वामित्र ने अपने तप के प्रभाव से क्षत्रियत्व से ब्राह्मणत्व को प्राप्त किया। इसके विपरीत पिता विश्वामित्र के शाप के कारण तप क्षीण होने पर उनके पचास पुत्रों को जन्मजात क्षत्रियत्व से वंचित होना पड़ा। दूसरी ओर महर्षि पराशर के तेज से मत्स्यराज की पुत्री मत्स्यगन्धा (बाद में जो सत्यवती के रूप में महाराज शान्तनु की महारानी बनीं) के गर्भ से उत्पन्न पुत्र अपने बीज के प्रभाव से महर्षियों में अग्रगण्य महर्षि वेदव्यास के रुप में प्रतिष्ठित हुए। इस प्रकार वर्णविशेष के निर्धारण में जन्म और कर्म दोनों ही सिद्धांत समय -समय पर स्वीकार्य रहे हैं।श्रीमद्भगवद्गीता के चतुर्थ अध्याय में भगवान श्रीकृष्ण ने भी गुण और कर्म के आधार पर इन चार वर्णों की सृष्टि का वर्णन किया है-

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण- कर्म -विभागशः ।
तस्य कर्तारमपि मां विद्धयकर्तारमव्ययम् ॥ गीता-४/१३

यहाँ यह स्पष्ट करना भी प्रासंगिक है कि प्राग्वैदिक और वैदिक समाज में केवल वर्णव्यवस्था का उल्लेख है। जातिवाद के विषैले बीज वैदिक युग के हजारों वर्ष बाद बौद्ध धर्म के समय में अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए वैदिक धर्म के अनुयायियों में आपसी कलह उपजा कर, उनमें फूट पैदा करने के लिए बोए गए थे। जातिवाद का यह दुश्चक्र मुगलों और अंग्रेजों के काल से चलता हुआ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी तुच्छ राजनीतिक स्वार्थों के कारण निरन्तर चलायमान है। वामपंथी विचारधारा ने आपसी फूट की आग में घी डालने का काम किया है। आज हिन्दू समाज हजारों जातियों में बँटा हुआ है। इस संदर्भ में हिन्दी साहित्य के साथ साथ वैदिक वाङ्मय के मूर्धन्य विद्वान डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी जी का कहना है कि हिन्दू समाज जातिगत श्रेष्ठता और उच्चता के मिथ्या अहंकार से इतना अधिक ग्रस्त है कि हर एक जाति अपनी उच्चता प्रदर्शित करने के लिए अपने से नीचे एक और निम्न जाति को खोज लेती है । सभी जातियाँ एक दूसरे पर शोषण और उत्पीड़न के दोष लगा रही हैं और कभी कभी तो एक दूसरे के अहित साधन में भी तत्पर हो जाती हैं। हिन्दू धर्म के लिए यह नितान्त भयावह स्थिति है । एक ओर यह आन्तरिक फूट के कारण विभक्त है तो दूसरी ओर मुस्लिम समाज, इसाई और पारसी हमारे निम्न एवं निर्धन समाज को अनेक प्रकार के प्रलोभन देकर उनका धर्मान्तरण करवा रहा है। इस घोर संक्रमणता का त्वरित उपचार अपेक्षित है। प्रबुद्ध और उदारमना धर्म शास्त्रियों तथा समाज शास्त्रियों को जातिवाद के इस घातक व्रण पर संवेदना, सद्भाव और समरसता का मरहम लगाना होगा। प्रस्तुत आलेख इसी दिशा में एक लघु प्रयास है।

प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था में जहाँ अनेक गुण होते हैं वहाँ कुछ दोष भी होते हैं। एकरूपता के साथ -साथ कुछ विविधता भी होती है। भेदता और अभेदता का यह क्रम सदा से विद्यमान रहा है। सामाजिक तानेबाने को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए किसी भी व्यवस्था के अभेदक तत्त्वों को जन-जन में प्रसारित करके उनके प्रति व्यक्ति की आस्था को सुदृढ़ करना होता है। यह दायित्व प्रत्येक युग के प्रतिबद्ध समाज शास्त्रियों का होता है। अन्यथा भेदता के प्रखर दंश से सामाजिक तानाबाना जीर्ण-शीर्ण हो जाता है। विरोधी और विधर्मी आक्रान्ताओं ने भेदता के इस तीक्ष्ण बाण से ही वैदिक वर्णव्यवस्था को आहत किया है। उन्होंने विभाजनकारी कूटनीति को अपनाते हुए किसी वर्णविशेष में उच्चता का अहंकार तो किसी में निम्नता का अवसाद भर दिया । सनातन धर्म और संस्कृति के कर्णधारों ने समय-समय पर अपने-अपने युग में इसका प्रबल प्रतिवाद भी किया है। पर फिर भी

वे पूर्णतः सफल नहीं हो पाए हैं।

वर्णव्यवस्था का प्रारंभिक उल्लेख ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में मिलता है। यहाँ विराट के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरूतदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रोऽजायत ॥ पुरुष सूक्त-११

ऋग्वेद के पुरूष सूक्त की इस ऋचा में चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन है। ब्रह्मा जी के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पाँवों से शूद्र नामक वर्णों की उत्पत्ति हुई । वास्तव में वैदिक ऋषि ने समाज संरचना और शरीर संरचना में अद्भुत समानता दिखाई है । वैदिक धर्म की सामाजिक वर्ण व्यवस्था पूरी तरह से मानव शरीर की संरचना पर आधारित है। जैसे मानव शरीर के विभिन्न अवयवों में परस्पर सामंजस्य से मानव शरीर का व्यवहार चलता है वैसे ही समाज के इन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार संघटकों में पारस्परिक सद्भाव, सौमनस्य और अनुकूल व्यवहार से समाज चलता है। यदि शरीर के विभिन्न अवयव एक केन्द्रीकृत आवयविक संघटना के अधीन परस्पर प्रतिकूल और विपरीत गामी हो जाएंगे तो शरीर की संपूर्ण संरचना गड़बड़ा जाएगी । ठीक यही स्थिति सामाजिक संरचना की है । पर आज इस वर्ण व्यवस्था का विरोध हो रहा है। कुछ धूर्त आलोचकों द्वारा इसे धूर्त ब्राह्मणों की ब्राह्मणवादी व्यवस्था के रूप में स्थापित किया जा रहा है । इस व्यवस्था पर सबसे बड़ा आक्षेप यह है कि इसमें शूद्रों की उत्पत्ति ब्रह्मा जी के पाँवों से बता कर उन्हें अपमानित और तिरस्कृत किया गया है। यह सरासर अन्याय है। पर वस्तु स्थिति इससे भिन्न है। यदि पाँवों से उत्पत्ति अनुचित है तो मुख से उत्पत्ति भी अनुचित है। क्षत्रिय और वैश्य भी अपनी उत्पत्ति के सम्बन्ध में असन्तोष व्यक्त कर सकते हैं। प्रत्येक वर्ण की उत्पत्ति के विरोध और अविरोध में मनमाने ढंग से तर्क प्रस्तुत किए जा सकते हैं। पर वर्णव्यवस्थापक ऋषि की धारणा इन सब संकीर्णताओं से मुक्त है। पाँवों से शूद्रों की उत्पत्ति बता कर शूद्रों को अपमानित करने की प्रवृत्ति कदापि नहीं है। ऋषि ने तो सृष्टि-उत्पत्ति के क्रम में विराट पुरुष के पाँवों से सम्पूर्ण पृथ्वी की उत्पत्ति दिखाई है। नाभि से अन्तरिक्ष की और सिर से द्युलोक की तथा कान से दिशाओं की उत्पत्ति बताई है-

नाभ्याऽसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।

पद्भ्यां भूमिः दिशः श्रोत्रात् तथा लोकान् 2अकल्पयन् । पुरुषसूक्त-१३

यह सर्वविदित तथ्य है कि माता पृथ्वी तो समस्त विश्व को धारण करती है । ऐसी स्थिति में तो शूद्रवर्ण माता पृथ्वी की भाँति सबसे महान और अन्य सभी वर्णों को धारण करने वाला और इस प्रकार सर्वाधिक महत्वपूर्ण हुआ।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि ऋषि का मन्तव्य किसी वर्णविशेष को हेय दिखाना नहीं रहा है। उसकी दृष्टि में सामाजिक गतिविधियों के कुशल और निर्बाध संचालन में इन चारों वर्णों में सभी का अपना -अपना विशिष्ट महत्व है, योगदान है। सभी की अपनी -अपनी उपयोगिता है। कोई वर्ण किसी अन्य वर्ण से छोटा या बड़ा नहीं है और न ही इन चार वर्णों को छोटा -बड़ा सिद्ध करने की वैदिक ऋषि की कोई मूल प्रवृत्ति रही है। पर छिद्रान्वेषियों ने पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो कर केवल एक वर्ण को ध्यान में रख कर इस व्यवस्था के छिद्रों को ही उजागर किया है। भारतीय वैदिक वर्ण व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करने के लिए विरोधियों ने इस व्यवस्था

के घटक चारों वर्णों में समय-समय पर बहुत अधिक वैमनस्य का कुत्सित भाव भी पैदा किया है । पारस्परिक विरोध और विद्वेष के बीज बोए गए। इस विषय में यह कहते हुए भी मुझे संकोच नहीं हो रहा है कि उच्चता के मिथ्या अहंकार से ग्रसित, संकीर्ण और रूढिवादी मनोवृत्ति वाले, समय की आवश्यकता के अनुरूप धर्म और सामाजिक व्यवस्था में अपेक्षित संशोधन और सुधार न करनेवाले कुछ तथाकथित कट्टरपंथी आर्यों के कारण भी वर्ण व्यवस्था को गहरा आघात लगा है।

आज के इस युग की यह महती आवश्यकता है कि वेद प्रतिपादित इन चार वर्णों के पोषक,परस्पर अविरोधी, समधर्मी और सर्वहितकारी तत्त्वों को हिन्दू समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाए ताकि हमारा हिन्दू समाज भावात्मक एकता के अटूट सूत्र में बँध कर हिन्दू धर्म की विघटनकारी आसुरी शक्तियों का दमन कर सके। मैं पूर्ण विश्वास के साथ इस सत्य और तथ्य को उजागर करना चाहता हूँ कि वैदिक ऋषि ने इन चारों वर्णों में किसी को भी अधिमान नहीं दिया था। उसकी दृष्टि समदर्शी रही है। 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:' का सर्वकल्याणकारी उद्घोष करनेवाली वेद वाणी किसी एक वर्णविशेष के दोहन और शोषण का अधिकार कैसे दे सकती है? यह व्यर्थ का वितण्डावाद वेदनिन्दा करनेवाले कुतर्कियों का षड्यन्त्र मात्र है।

सामन्यत: हमारे चतुर्थ वर्ण को पहले तीन वर्णों से शिकायत है कि उन्हें सेवाधर्म का दायित्व क्यों सौंपा गया। इस सम्बंध में यह कहना है कि सभी वर्णों को जो दायित्व और कार्य सौंपे गए हैं वे ऐकान्तिक और आत्यान्तिक नहीं हैं। उनमें व्यक्ति भेद से परिवर्तन हो सकता है और वैदिक काल से सदा होता आया है। वैदिक ऋषि परम्परा में ऐसे अनेक उदाहरण हैं। अत: आधुनिक शब्दावली में कहा जा सकता है कि वेदवाणी ने चारों वर्णों के लिए केवल एडवाइजरी (दिशा निर्देशिका) प्रस्तुत की है। प्रत्येक युग के समाज शास्त्री अपने-अपने युग और समाज की आवश्यकता के अनुरूप इस दिशानिर्देशिका में परिवर्तन, परिवर्धन और संशोधन कर सकते हैं और करते रहे हैं।

उदाहरण के लिए मनुस्मृति में ब्राह्मण के निम्न छह कर्तव्य बताए गए हैं-

अध्यापनमध्ययनम् यजनं याजनं तथा ।

दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥ मनुस्मृति प्रथम अध्याय ९०

इसी प्रकार अन्य वर्णों के कर्तव्यों का उल्लेख है। सामान्यत: क्षत्रियों का धर्म राष्ट्र रक्षा, वैश्यों का धर्म कृषि कर्म, व्यापार एवं पशुपालन आदि एवं शूद्र का धर्म सेवा बताया गया है। परंतु ऐसा कर्मविभाजन केवल एक निर्देशिका (एडवाइजरी) है। सभी वर्ण अपनी अपनी योग्यता और क्षमता के आधार पर अन्य वर्ण के कार्य भी करते रहे हैं। ब्राह्मण होते हुए भगवान परशुराम ने अपने आयुध परशु के द्वारा हैहयवंशी क्षत्रियों का संहार किया। द्रोणाचार्य, कृपाचार्य और अश्वत्थामा आदि ब्राह्मणों ने महाभारत के युद्ध में कौरवों के सेनापति और योद्धा के रूप में कार्य किया। द्रोणाचार्य ने ब्राह्मण होते हुए कौरवों और पाण्डवों को धनुर्विद्या सिखाई । महाराज शान्तनु के राज्य में बारह वर्ष तक वर्षा नहीं हुई। उनके बडे भाई जो जन्म से क्षत्रिय थे पर वैदिक यज्ञ विद्या के ज्ञाता थे, उन्होंने इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए अपने क्षत्रिय भाई के राज्य के वृष्टि यज्ञ करवाया और अकाल की समस्या का समाधान किया। विश्वामित्र ने राजा हरिश्चन्द्र से सारा राज्य दान में ले लिया । श्रीमद्देवीभागवत पुराण के अनुसार महर्षि वेदव्यास के पुत्र शुकदेवजी ने राजा जनक (विदेह) से अध्यात्म विद्या के परम रहस्य को जाना ।

राजा जनक की राजसभा में महर्षि याज्ञवल्क्य जैसे अनेक ऋषि अध्यात्म चर्चा के लिए आते रहे हैं। विश्वामित्र ने शुन:शेप नामक ब्राह्मण कुमार की वरुण से रक्षा की और उसे अपना पुत्र बना कर क्षत्रियत्व धारण करवाया। विश्वामित्र के शाप के कारण उनके पचास पुत्रों को अपने जन्म जात क्षत्रियत्व से वंचित हो कर निम्न वर्ण में जाना पड़ा। माता पिता का परम भक्त श्रवण मुनि प्रमादवश युवराज दशरथ के शब्द भेदी बाण से मारा गया। मुनि कुमार श्रवण अपना परिचय देते हुए स्वयं को शूद्र माता एवं वैश्य पिता का पुत्र कहता है–

शूद्रायामस्मि वैश्येन जातो नरवराधिप । वाल्मीकि रामायण–अयोध्या काण्ड–63/50–51

सर्वविदित है कि श्रवण के माता पिता के अभिशाप से पुत्र राम के वियोग में महाराज दशरथ की मृत्यु हुई थी।

अब संक्षेप में अंतर्वार्णिक विवाह पर भी चर्चा करना प्रासंगिक रहेगा। वैदिक और स्मृति युग में एक वर्ण का पुरुष दूसरे वर्ण की स्त्री से विवाह कर सकता था । इसी प्रकार एक वर्ण की स्त्री को भी अपने से ऊंचे या नीचे वर्ण के पुरुष के साथ विवाह करने का प्रचलन भी अपवाद रूप में रहा है। इस प्रकार के संयोग से उत्पन्न होने वाली संतान को क्रमश: अनुलोम और प्रतिलोम कहा गया है। मनुस्मृति में शूद्र स्त्री और ब्राह्मण तथा शूद्र पुरुष और ब्राह्मणी के संयोग से उत्पन्न संतान का भी उल्लेख है। ऐसी संतान को हेय दृष्टि से अवश्य देखा गया पर इतना स्पष्ट है कि अंतर्वार्णिक विवाह सदा से होते रहे हैं। आज अंतर्वार्णिक विवाहों का स्थान अंतर्जातीय विवाह ने ले लिया है।

वैदिक युग से लेकर आज तक अंर्तवार्णिक विवाह के अनेक उदाहरण मिलते हैं। राजा जानश्रुति ने ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने के लिए महर्षि रैक्व के साथ अपनी पुत्री जाबाला का विवाह किया था। महर्षि कश्यप के पौत्र तथा महर्षि विभाण्डक के पुत्र ऋष्यश्रृंग का विवाह अंग देश के महाराज लोमपाद की कन्या शान्ता के साथ सम्पन्न हुआ। लोमपाद महाराज दशरथ के मित्र थे। अत: ऋष्यश्रृंग उनके जामाता हुए और शान्ता उनकी बेटी हुई। ऋष्यश्रृंग ने ही महाराज दशरथ के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया था । महर्षि पराशर के पुत्र वेदव्यास जी की माता मत्स्य गन्धा एक धीवर की पुत्री थी। बाद में यही सत्यवती के नाम से कुरुराज शान्तनु की पत्नी बनी। सत्यवती के ब्राह्मण पुत्र कानीन वेदव्यास से ही क्षत्रिय कौरवों का वंश चला। समस्त कौरव और पाण्डव ब्राह्मण वेदव्यास जी के औरस पुत्र होते हुए भी क्षत्रिय ही कहलाए । तत्त्ववेत्ता सत्यकाम एक वैश्या पुत्र होते हुए भी महर्षि बने । भगवान राम ने भिलनी के झूठे बेर खा कर और भगवान कृष्ण ने धोबिन कुब्जा का उद्धार कर तथा नारायण ने पिंगला नाम की वैश्या का उद्धार कर सामाजिक समरसता का ही सूत्रपात किया है।

सार यही है कि भारतीय वर्ण व्यवस्था केवल राष्ट्र और समाज के सुचारू संचालन के लिए बनाई गई थी। पर इनमें किसी तरह का पारस्परिक विरोध या वैमनस्य नहीं था जैसा कि मध्ययुग में कुछ विधर्मियों और कट्टरपंथियों ने तथा आधुनिक युग में वाममार्गी चिन्तकों ने पैदा किया है। हमारे वेद सदा से चारों वर्णों के कल्याण की और पारस्परिक समभाव, सद्‌भाव और सौमनस्य की कामना करते हुए प्रत्येक मूल्य पर सामाजिक समरसता को स्थापित करना चाहते हैं। अपने कथन की प्रामाणिकता के लिए कुछ वैदिक मंत्र उदाहरण रूप में प्रस्तुत हैं–

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचं राजसु नस्कृधि ।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम् ॥ यजुर्वेद–१८/४८

अर्थात् हे अग्निदेव, आप हमारे ब्राह्मणों में तेजस्विता / दीप्ति स्थापित करें, हमारे क्षत्रियों में तेजस्विता स्थापित करें, हमारे देश के वैश्यों और शूद्रों को भी तेजस्विता धारण कराएं। हम सभी अपनी अपनी तेजस्विता धारण कर अपने राष्ट्र को सुदृढ़ और सुरक्षित बनाएँ । एक अन्य मंत्र में वैदिक ऋषि का स्पष्ट कथन है कि हम मंत्र दृष्टा ऋषियों ने इस कल्याणमयी वेद वाणी का समस्त लोगों के कल्याण के लिए उपदेश दिया है । हम ऋषिगणों ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, प्रिय-अप्रिय आदि सभी जनों के कल्याण के लिए इस दिव्य वेद वाणी को कहा है -

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च ॥ यजुर्वेद-२६/२

इसी प्रसंग में आगे कहा गया है कि हे मानवो , आप लोग इस वेद वाणी का अनुसरण करते हुए ,परस्पर सहयोग से एक दूसरे का हित करते हुए अपने अपने अभीष्ट मनोरथ को पूरा करें ।

अथर्ववेद में भी ऋषि समाज और राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। वह पूरे समाज में समरसता स्थापित करना चाहता है। वह स्वयं को सभी वर्णों में समान भाव से प्रिय बनाना चाहता है -

प्रियं मा कृणु देवेषु प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये। अथर्ववेद-१९/६२/१

यह तभी संभव है जब ऋषि सभी वर्णों को समान भाव से कल्याणमयी दृष्टि से देखता हो । सभी का समान भाव से उद्धार चाहता हो। कोई भी व्यक्ति शोषण और उत्पीड़न करने वाले ऋषि को अपना प्रियजन नहीं कह सकता। हमारे वेदों और धार्मिक ग्रन्थों में समता-मूलक समाज की स्थापना की गई है और समस्त हिन्दुओं को एकता के सूत्र में बाँधा है। पर कुछ तथाकथित वाममार्गी चिन्तकों ने हमारे धार्मिक ग्रन्थों के अनेक प्रक्षिप्त और आपत्तिजनक प्रसंगों को आधार बनाकर और उनकी गल्त व्याख्या करके समाज को गुमराह किया है और एक वर्ग विशेष में यह धारणा बना दी है कि सनातन धर्म, वैदिक धर्म या हिन्दू धर्म वर्णव्यवस्था और जातिवाद के माध्यम से उनके हितों का विरोधी है। ऐसे षड्यन्त्रकारी निम्न उद्धरण का उदाहरण देते हैं- 'स्त्री शूद्रौ न अधीयताम्।' मैं डंके की चोट से कहता हूँ कि यह किसी भी वेद और स्मृति का प्रामाणिक सत्य नहीं है। केवल प्रक्षिप्त अंश है जो बाद में जोड़ा गया है। हम सब को ज्ञात है कि लेखन की सुविधा न होने के कारण प्रारम्भ में वेद और स्मृतियाँ हजारों वर्षों तक गुरु-शिष्य परम्परा में मौखिक रूप में प्रचलित रहे हैं। कुछ संकीर्ण विचारधारा के अतिवादी हिन्दुओं द्वारा अपने आप को महिमा मंडित करने के लिए और कुछ वैदिक धर्म के कट्टर विरोधियों द्वारा इस प्रकार की झूठी और आधार हीन ,मिथ्या और कलुषित अवधारणाएं घड़ने की दिशा में योजनबद्ध ढंग से वैदिक वाङ्मय और स्मृति ग्रन्थों में अनेक प्रकार के प्रक्षेपों को जोड़ा गया है ताकि हिन्दू समाज में आपसी द्वेष और फूट पैदा की जा सके ।

ये प्रक्षेप वेदों की सर्वकल्याणकारी भावना के विरोधी हैं। शक्ति के बिना भगवान शिव को शव मानने वाले वेद नारी के हितों की अनदेखी कैसे कर सकते हैं। कात्यायनी, मैत्रेयी, गार्गी, लोपामुद्रा, मदालसा, सुवर्चा, वाग्म्भृणी जैसी अनेक विदुषी नारियां अपने वैदिक ज्ञान के बल पर अनेक सूक्तों एवं मंत्रों की रचयिता रही हैं। फिर स्त्रियों को वेद न पढाने की बात कहाँ से आ गई। यह सरासर झूठ है, प्रपंच है, एक सुनियोजित षड्यंत्र है।

ठीक यही स्थिति शूद्रों के विषय में है। ब्राह्मण की तरह वेद का अध्ययन न क्षत्रिय करता था न वैश्य और न ही शूद्र । पर सामान्य रूप में सभी को वेद पढने का अधिकार था । पहले माता पिता के परमभक्त श्रवण का उदाहरण दिया गया है। द्वापर में कौरवों के मंत्री नीति निर्माता विदुर दासी के पुत्र होते हुए भी शासन के सर्वोच्च पद पर विराजमान रहे हैं। विदुरनीति नाम से नीति शास्त्र का एक प्रामाणिक ग्रन्थ है। क्या विदुर जी ने बिना पढ़े ही नीति शास्त्र का ग्रन्थ रच दिया। हमारे मन्तव्य की पुष्टि में महर्षि वाल्मीकि जी का उदाहरण भी दिया जा सकता है। उनके पावन जीवन के विषय में प्रत्येक व्यक्ति जानता है, अतः कुछ अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन का सारांश यह है कि वैदिक वर्णव्यवस्था पर आधारित सामाजिक संरचना और शरीर संरचना में अद्भुत समानता है। शरीर संरचना में सभी अंग एक दूसरे के सहयोगी और पूरक हैं । सभी स्वतंत्र होते हुए भी एक दूसरे के आश्रित हैं। यही स्थिति हिन्दू समाज की है। सभी वर्ण, जातियाँ , उपजातियाँ एक समान हैं। कोई भी न बड़ा है न छोटा । वेद और शास्त्र कहते हैं कि सभी जीव एक ही ईश्वर के अंश हैं। हमें इस सनातन सत्य को स्वीकारना है, अपनाना है। हमारे धर्म शास्त्र हिन्दू समाज को एक सूत्र में बाँधते हैं। पर आज ईसाई मिश्नरी और इस्लाम पहले से अधिक आक्रामक होकर हिन्दुओं का धर्मान्तरण करवा रहे हैं। हमें एकजुट होकर इसका प्रतिवाद करना है। परस्पर सद्भाव और विश्वास दिखाते हुए सामाजिक समरसता को दिनोंदिन सुदृढ़ करना है। तभी हमारे ऋषियों की यह मंगलमयी, मोदमयी एवं सर्वकल्याणकारी सनातनी वाणी साकार हो पाएगी–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) पजी. नई दिल्ली
तथा
श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (रजि.) चण्डीगढ़ के
पंचवर्षीय चुनाव अधिवेशन की कार्यवाही

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजीकृत एवं श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति चंडीगढ़ पंजीकृत का पंचवर्षीय चुनाव अधिवेशन दिनांक 27-02-2022 को गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय हरियाना, होशियारपुर में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अंतरिम प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। बैठक की कार्यवाही का प्रारूप निम्न प्रकार से है:

1. सर्वप्रथम कॉलेज परिसर में प्रतिष्ठित सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के संचालक त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की प्रतिभा पर स्वस्ति वाचन करते हुए माल्यार्पण किया गया।

2. प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान प्रसिद्ध शिक्षाविद एवं समाज सेवी दिवंगत डॉ शिव कुमार शर्मा जी की स्मृति में कॉलेज परिसर में निर्मित विज्ञान भवन को उन्हें समर्पित किया गया।

3. तत्पश्चात सभागार में विभिन्न सनातन धर्म सभाओं, शिक्षण संस्थाओं और महावीर दल के घटकों के प्रतिनिधियों के पंजीकरण और उपस्थिति के उपरान्त सभागार में उनका प्रवेश होने पर कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। डॉ नन्द किशोर शर्मा प्रचार मंत्री ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया तथा प्रतिनिधि सभा के अंतरिम प्रधान इन्द्रमोहन गोस्वामी जी, महासचित श्री उपेन्द्र शर्मा जी, डॉ देशबन्धु जी, महावीर दल के प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी जी, अर्थमन्त्री डी. आर. मदान जी, कार्यालय सचिव श्री सुभाष शर्मा जी शिक्षा समिति के महासचिव डॉ गुरदीप शर्मा जी ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित किया।

4. डॉ. सुभाष शर्मा कार्यालय सचिव ने सभाओं के दिवंगत पदाधिकारियों, सदस्यों और सदस्यों के परिजनों के प्रति श्रद्धांजलि का प्रस्ताव प्रस्तुत किया व तीन बार गायत्री मंत्र उच्चारण करते हुए उसे पारित किया गया।

5. गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज की छात्राओं द्वारा भगवान कृष्ण की भक्ति से परिपूर्ण एक भजन प्रस्तुत किया।

6. सभा के अर्थमंत्री श्री डी.आर. मदान ने पिछले चुनाव अधिवेशन की कार्यवाही को पढ़कर सुनाया और उसे ध्वनिमत से पारित किया गया।

7. प्रतिनिधि सभा की अंतरंग समिति एवं कार्यकारिणी समितियों के पिछले पांच वर्षों में सम्पन्न हुई बैठकों की कार्यवाही का रजिस्टर प्रात: 10 बजे से 12 बजे तक सदस्यों के अवलोकनार्थ रखा गया था। डॉ नन्दकिशोर शर्मा ने इन सभी बैठकों की कार्यवाही को पारित करने का प्रस्ताव रखा जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया।

8. प्रतिनिधि सभा के महासचिव डॉ देशबन्धु ने प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सभाओं, शिक्षण संस्थाओं एवं महावीर दल के घटकों द्वारा किए गए कार्यों की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे सभागार में उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से पारित किया।

9. महासचिव श्री उपेन्द्र शर्मा जी ने प्रतिनिधि सभा के संविधान में किए गए संशोधनों की संस्तुति को संविधान में सम्मलित करने का प्रस्ताव रखा और पूर्व परम्परा का उल्लेख करते हुए यह प्रस्ताव रखा कि यदि कोई

प्रतिनिधि अपना सुझाव देना चाहता है तो दस दिन के अंदर प्रतिनिधि सभा के प्रधान कार्यालय भूपेन्द्र भवन, पहाड़गंज को भेज दें। दस दिन के पश्चात सभी प्रस्तावित संशोधन संविधान का अंग बन जाएँगे।

10. प्रतिनिधि सभा के अंतरिम प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी ने पिछली कार्यकारिणी की ओर से सभी सदस्यों का हार्दिक धन्यवाद किया। धन्यवाद प्रस्ताव में स्थानीय कॉलेज के प्राचार्य डॉ राजीव कुमार तथा स्टाफ का उनके उल्लेखनीय अतिथि सत्कार को रेखांकित करते हुए विशेष धन्यवाद किया गया।

11. इसके पश्चात पिछली कार्यकारिणी के समस्त पदाधिकारी मंच छोड़कर चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ करने के लिए सभागार में सामान्य स्थान पर बैठ गए। पंचवर्षीय चुनाव अधिवेशन को सम्पन्न करने के लिए सदस्यों द्वारा चुनाव अधिवेशन के अध्यक्ष रूप में श्री आनंद शर्मा जी, सीनियर एडवोकेट को मंच पर आमंत्रित किया गया और इसके साथ ही चुनाव अधिकारी के रूप में डॉ आर.पी. भारद्वाज जी पूर्व प्राचार्य और डॉ गुरदीप शर्मा जी, पूर्व प्राचार्य को मंच सौंप दिया गया।

12. डॉ गुरदीप शर्मा जी ने अध्यक्ष की अनुमति से चुनाव की संवैधानिक प्रक्रिया का उल्लेख करते हुए सभा सदों से प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद के लिए नाम आमंत्रित किए। श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी जी, श्री उपेन्द्र शर्मा जी व महन्त स्वरूप बिहारी जी ने समन्वित रूप में सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा और सनातन धर्म शिक्षा समिति के प्रधान पद के लिए डॉ देशबन्धु जी का नाम प्रस्तावित किया। श्री शिव कुमार लोमश, श्री सुधीर गुप्ता, श्री डी.आर. मदान आदि अनेक सदस्यों ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। प्रधान पद के लिए किसी भी सदस्य की ओर से कोई अन्य नाम प्रस्तावित नहीं किया गया। अत: डॉ गुरदीप शर्मा जी व डॉ आर.पी. भारद्वाज जी द्वारा प्रधान पद के लिए डॉ. देशबन्धु जी को सर्वसम्मति से निर्वाचित घोषित किया गया।

13. तत्पश्चात डॉ राजीव कुमार जी ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया कि प्रतिनिधि सभा की समस्त कार्यकारिणी के गठन, विभिन्न समितियों व उप समितियों को बनाने के लिए तथा विभिन्न शिक्षा संस्थाओं में विभिन्न प्रकार के समितियों आदि के गठन एवं समय समय पर परिवर्धन आदि का सम्पूर्ण अधिकार प्रतिनिधि सभा के नवर्निवाचित प्रधान डॉ देशबन्धु जी को दिया जाए जिसका सभी सदस्यों ने एकमत से समर्थन किया और फलस्वरूप यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

14. अंत में नवनिर्वाचित प्रधान डॉ देशबन्धु जी ने अपने आभार प्रदर्शन से समस्त प्रतिनिधियों का धन्यवाद करते हुए यह विश्वास दिलाया कि भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी द्वारा स्थापित तथा त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी द्वारा संचालित इस महान सनातन धर्म संस्था के महान उद्देश्यों और उच्च आदर्शो के संरक्षण और संवर्धन के लिए मैं सदा प्रयासरत रहूंगा।

सभी का धन्यवाद करते हुए कार्यवाही सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा की ओर से कुछ प्रस्ताव भी पारित किए ।

sd/-

आनन्द शर्मा

(चुनाव अध्यक्ष)

sd/-

डॉ गुरदीप शर्मा

(चुनाव अधिकारी)

sd/-

डॉ आर. पी. भारद्वाज

(चुनाव अधिकारी)

EXECUTIVE COMMITTEE SANATAN DHARMA PRATINIDHI SABHA (PANJAB) NEW DELHI

Patrons
Jagatguru Shankryacharya
Swaroopnand Ji Maharaj
Dwarka Peeth, Gujrat-361335

Swami Avdeshanand Giri Ji Maharaj
1. Harihar Ashram, Kankhal, Haridwar
2. Prabhu Prem Ashram,
   Jagadhari Road, Ambala Cantt

Sh. Kewal Krishan Sharma
28, Sector-11 A, Chandigarh-160011
Ph. 9814695519

Sh. Upkar Krishan Sharma
1130, Sector 44 B, Chandigarh
Ph. 9872011329

Sh. Sarvesh Kaushal
1. # 290, Sector 16, Chandigarh
2. A-71 Defence Colony, New Delhi
Ph. 9872000616

General President
Sh. B.K. Goswami
F-4, Kailash Colony, New Delhi-110048
9810178688

President
Dr. Desh Bandhu
#1117, Prabhu Prem Puram,
Ambala Cantt
Ph. 9812053283

Working President
Sh. Inder Mohan Goswami
Adminstrator, Sapt Rishi Ashram,
Sapt Sarovar Marg, Hardiwar
Ph. 9818881045

Sr. Vice President
Mahant Swroop Bihari Sharn
Dhobian Street, Malerkotla-148023
Ph. 7009144857

Vice Presidents
Sh. Virender Katyal
B-51A, Vijay Nagar, Near Hanuman Mandir,
Delhi-110009
Ph. 9818148211

Sh. V.P. Sareen
B-1155, Ansal Palam Vihar, Gurugram
Ph. 9891593800

Sh. Shiv Kumar Lomas
#5-C, 186 New Mandi
Bhalwan Wala, Adda,
Dhuri, Distt. Sangrur
Ph. 9814065786

Sh. Suresh Kumar Bansal
Shop No. 44-A, Grain Market
Bathinda

Dr. R.P. Bhardwaj
100, Choti Baradari, Part-I,
Gara Road, Jalandhar.
Ph. 9888475599

Sh. Abhay Singla
24/C, Civil Lines, Near Joshep School,
Bhagu Road, Bathinda
Ph. 9855462730

Sh. Kewal Krishan Agarwal
29-C, Mall Road, Ludhiana-141001
Ph. 9888375053

Sh. Ashwani K. Sharma
645, St-7, Via Gate No. 1, Vikas Nagar,
Nayagaon, Distt. SAS Nagar-160103
Ph. 7973034044

Dr. Prem Kanwal Bajaj
#2140, Sector 15C, Chandigarh
Ph. 9872042140

Sh. Mahender Kalra
Kalra Niwas, Kalra Colony,
G.T. Road, Palwal
Ph. 9812033212

Sh. Mohan Lal Aggarwal
1161/5, Kalal Mazri,
Ambala City
Ph. 9816202728

Sh. Anand Sharma, Sr. Advocate
102, Hotel Chandan Palace,
Near High Court, The Mall,
Shimla
Ph. 9816002728

Dr. Vivek Sharma
Indra Amar Kuteer, Ghuggar,
Palampur-176061
9816052889

Sh. Sudhri Kumar Gupta
Gali Latowali, Kankhal
Haridwar (Uttrakhand)
9412071804

Sh. Rakesh Oberoi
2-1, Racecourse Road,
Dehradun
9837021114

Sh. Surender Kumar Joshi
2/50 New RSB Colony Manaksar Link Road,
Ward No. 2, Suratgarh-335804
Ph. 9461510351

Sh. Beni Madhav Goswami
9/74 Sector 3, Rajinder Nagar,
Near Anguri Park,
Sahibabad, (Gaziabad)
Ph. 9540532422

General Secretary
Sh. Upinder Sharma
212, Guru Nanak Colony,
Faridkot (Panjab)
Ph. 9463785909

Dr. Gurdip Kumar Sharma
c/o Dr. Nisha Bhargava
Principal's Residence
MCM DAV College
Sector 36A, Chandigarh
Ph. 9417264182

Finance Secretary
Sh. D.R. Madan
C-64, Kalka Ji, New Delhi-110019
Ph. 9811687199

Office Secretary
Sh. Subhash Chander Sharma
103, Supriya Apartment, Sector 10
Dwarka, New Delhi.
Ph. 9810436496

Prachar Mantri
Dr. Nand Kishore Sharma
#10, Ashok Vihar, Mahesh Nagar,
Ambala Cantt.
Ph. 9896589890

Organising Secretary
Sh. Rajiv Kumar Moudgil
1083, Sector 19-B,
Chandigarh
Ph. 9878622100

Press Secretaries
Sh. Shadi Lal Anand
Mohalla Mehtia,
V&P.O. Hariana, (Hoshiarpur)
Ph. 9417757282

Sh. Krishan Kumar Sharma
#651, Ward No. 6, Masjid Gali,
P.O. Palampur, Distt. Kangra - 176061
Ph. 7018247114

Ms. Radhika Nagrath
12 B, HIG Flats, Phase-2,
Shivlok, Haridwar
Ph. 9897035568

Sh. Sunil Dutt Pandey
Satighar Road,
Kankhal, Haridwar
Ph. 9319023555

Sh. Rajan Sharma
318, Model Gram, Ludhiana-141001
Ph. 9814009398

Sh. Dev Dutt Sharma
s/o Sh. Sat Pal Sharma
V&P.O. Boh, Near Indian Bank
Ambala Cantt
Ph. 9416317269

Sh. Akash Sukhla
50-L, Model Town
Jalandhar
Ph. 9814400729

Secretaries
Ms. Lakshmi Singh Tikri
36, Panchsheel Apt., AI, Panchsheel Enclave,
New Delhi-110017
Ph. 9810500193

Sh. Inder Pal Maggon
EU-47B, DDA, Uttari Pitampura,
Delhi-35
Ph. 9818601555

Sh. H.K. Chug
B-2-316, Pink Vihar, Old Sabzi Mandi
G.T. Road, Ludhiana
Ph. 9876100602

Sh. Moninder Sharma
392, Behind Bus Stand,
Gurdaspur
Ph. 9463372411

Sh. Garish Mehan
Purani Dana Mandi, Near Shiv Mandir,
Nawashahar (SBS Nagar)
Ph. 9815088316

Sh. Madan Lal Lehri
21, Ward No. 6, Gali No. 5/2,
Rama Mandi (Panjab)
Ph. 9417406449

Sh. Kewal Krishan Aggarwal
H.No. 4, Veer Colony, Bathinda
Ph. 9814068164

Sh. Adarsh Kumar Sharma
1709 Sector 22-B, Chandigarh
Ph. 9915281557

Mr. Vikrant Sharma
28, Sector 11A,
Chandigarh-160011
Ph. 9814105515

Dr. Rajinder Singh
#25, Tagore Garden,
Ambala Cantt
Ph. 9466596782

Sh. Vipin Kumar Mehta
223-L, Bada Model Town,
Yamunanagar
Ph. 9416590909

Sh. Vijay Kumar Kansal
Near Main Bazar, Ward No. 8,
Naraingarh (Ambala)
Ph. 9466484062

Sh. Udho Ram Cheema
Ganesh Bazar Baijnath,
Teh. & P.O. Baijnath
Ph. 9805476129

Sh. Romesh Chand Aggarwal
Hotel Amar, The Mall,
Solan
Ph. 9418077588

Sh. Satpal Brahmchari
Sh. Radha Krishan Dham,
Bhupatwala, Haridwar.
Ph. 9837471888

Sh. Subhsh Singh Ghai
S. Humum Singh Cottage,
Sharwan Nath Nagar,
Haridwar-249401
Ph. 9897370402

Sh. Krishan Lila
Shop No. 97, New Mandi Yard
Sri Ganganagar (Rajasthan)-335001
9414089001

Sh. Harish Gulati
Alpine Containers Pvt. Ltd.,
Sidco Ind. Complex Bari (Jammu)
Ph. 9419185005

Sh. Parmod Mittal
102, Shakti Nagar,
Bathinda
Ph. 9814035030

Joint Secretaries

Sh. Rishi Anand
15/12 Pant Nagar, Jungpura,
New Delhi-110014
Ph. 9810517035

Sh. Vinod Kumar Mishra
2328, Sector-57, Block G, Sushant Lok-II,
Near Scotish International High School,
Gurugram-122001
Ph. 9818383811

Sh. Ramesh Kumar Sharma
HL-432, Phase 9, S.A.S. Nagar,
Mohali-160062
Ph. 8146990432

Sh. Tilak Raj Sharma
Shahpur Chowk,
Near Arya Girl's Sen. Sec. School,
Pathankot-1455001
Ph. 9814505825

Sh. Janak Raj Bawa
31-A, New Abadi, Krishan Kot,
Ismailabad, Amritsar
Ph. 9646127905

Sh. Sukhdev Chodha
Vill. & P.O. Allawalpur,
Distt Jalandhar
Ph. 9815436332

Sh. Jatinder Bhatia
#3720, Sector 46-C,
Chandigarh
Ph. 9872511114

Sh. Raghav Sharma
Indra Amar Kuteer, Ghuggar,
Palampur-176061
Ph. 9811000666

Sh. Manish Kumar Gupta
#33-34, Chowk Bazaar Subhathu,
Teh & Distt. Solan-173206
Ph. 9816202163

Sh. A.D. Gandhi
1-A, Tribune Colony, Ambala Cantt
Ph. 9896925271

Sh. C.R. Sharma
12, Preet Nagar, Near Shiv Mandir,
Ambala Cantt
Ph. 9729093818

Sh. Satwant Singh
#1131, Guru Arjan Nagar,
Jagadhari
Ph. 9896362509

Sh. Rajesh Bhatia
10/61, N.I.T. Faridabad
9810027151

Sh. Luxmi Narayan Upadhayay
#1 D-30, Jawahar Nagar,
Near Indervatika,
Sri Ganganagar 335001
Ph. 9414090535

Sh. Prem Rattan Pareek
Ward No. 22, Kile Ke pass, Band Gali,
Hanumangarh Town,
Distt. Hanumangarh-335513
Ph. 9414332697

Sh. Rajendra Kumar Gauniyal
39, Adarsh Nagar, Jagjeetpur,
Haridwar
Ph. 9319029708

Sh. Ribhu Kant Goswami
9/74 Sector 3, Rajinder Nagar,
Near Anguri Park,
Sahibaband (Gaziabad)
Ph. 9540166678

Member Executive

Sh. Jai Bhagwan Sharma
#35, Anand Vihar, Nanhera Road,
Ambala Cantt
Ph. 8307599930

Sh. Anil Handa
235, Saffron City, DC Road,
Hoshiarpur-146001
Ph. 9463014940

Dr. R.C. Sharma
4, Ashok Vihar, Mahesh Nagar,
Ambala Cantt
Ph. 9416308663

Sh. Vinod Kumar Katyal
A-126, First Floor, G.T. Karnal Road,
Delhi-110007
Ph. 8851726214

Sh. Balesh Kumar
92-93/2, Prabhu Prem Puram (East),
Kardhan Road, Ambala Cantt
Ph. 9416073008

Sh. Mukul Sharma
18/14 A, Azad Nagar, Krishan Ganj,
Delhi-110007
Ph. 9350552380

Sh. Hari Chand Verma
#13/139 Near Railway Rest House,
Dhuri, Distt. Sangrur
Ph. 9417503454

Dr. Rajiv Kumar
#117, Prashar Niwas Gali No. 7,
Shiv Shakti Nagar,
Sadhu Ashram Ke Piche,
Una Road, Hoshiarpur
Ph. 9417548868

Sh. Rakesh Kumar Gupta
25 B, Gobind Nagar,
Ambala Cantt
Ph. 9416988376

Sh. Mahesh Babbar
G-7 Aliance Colony, Kashipur Road,
Rudrapur (Udham Singh Nagar)
Ph. 9927592000

Sh. Ashok Sharma
#5-R, Gali No. 3, Gautam Nagar,
UNA Road, Hoshiarpur (Pb.)
Ph. 9814816396

Sh. Vinod Bhamma
9, Ward No. 24, Bhai Gurdas Colony,
Near Anand Mehla Satsang Bhawan,
Mansa-151505
Ph. 9216721582

Sh. Vikas Katyal
B-51/A, First Floor, Vijaynagar,
Delhi-110007
Ph. 9350583540

Sh. Prem Nath Sharma
V.P.O. Phadhiarkar, Tikka Lachhoon
Teh. Baijanath (Kangra)
Ph. 9816950868

Sh. Vineet Sharma
Indira Amar Kuteer, Ghughar,
Palampur, Kangra
Ph. 9816930306

Sh. Yash Pal Sharma
Mohalla Karam Singh
Pathankot (Punjab)-145001
Ph. 9888773540

Dr. Satish Sharma
Vill. & P.O. Bundla Tea Estate
Palampur (H.P.)
Ph. 9418110581

Sh. Dinesh Kumar
33-34, Ward No. 5,
Subathu-173206 (Distt. Solan)
Ph. 9816698959

Sh. Parvesh Kumar Sobti
120, Mati Dass Nagar,
Ambala Cantt-133001
Ph. 9350495758

Sh. Jatinder Sharma
#2476, Sector -37C,
Chandigarh
Ph. 9855432476

Sh. Mahesh Gupta
Tractor Market, Pilli Banga
Distt. Hanuman Garh (Rajsthan)
Ph. 9414501249

Sh. Suresh Kumar Mittal
Fashion House
Main Road, Goluwala Niwadan
Teh. Pilibanga, Distt. Hanumangarh
(Rajasthan)
Ph. 9414652546

Sh. Ashok Kumar Sharma
#544, Muhalla Dharampura,
Kadian (Distt. Gurdaspur)
Ph. 9988965039

Sh. Raj Kumar Kaundal
Kothi No. 498, Tara Estate, Abohar
Ph. 9417352575

Sh. Shrikanth Sharma Juj
#EM-181, Kot Pakshian, Jalandhar City
9888900089

Sh. Iswhwar Chand Sharma
14-X, Majithia Enclave, Patiala-147001
Ph. 9417922828

Sh. Devinder Sachdeva
Adarsh Nagar, St. No. 3,
Fazilka
Ph. 9478959000

Sh. Suresh Kumar Jain
Opp. DAV School,
Malerkotla, Distt. Sangrur
Ph. 9814154306

Sh. Rajan Garg, Advocate,
Kothi No. 392, Model Twon,
Phase-1, Bathinda
Ph. 9815175811

Sh. Kamlesh Garg
Sh. Hanuman Mandir, Talab Bazar
Malerkotla-148023
Ph. 8054289190

Sh. Prithvi Chand Pungal, Advocate
Dr. Sadhu Ram Chock,
Ferozepur City 152002
Ph. 9646125498

Sh. Subhash Chander Khurana
37 Gandhi Colony, Near Kochhar Bazar
Model Gram, Ludhiana
Ph. 9914895035

Sh. Arun Sharma
Bhupindra Bhawan, Krishan Market, Paharganj,
New Delhi
Ph. 9820694600

Special Invitees
Sh. Rattan Lal Sharma
s/o Sh. Ram Swaroop Sharma,
Chauri Gali, Near Hanuman Mandir,
Budlada-151502, Distt. Mansa
Ph. 9417121160

Sh. Surinder Kaushal, Advocate
Kaushal Niwas, Mohinder Ganj,
Behind Main P.O., Rajpura, Patiala
Ph. 9815109477

Sh. Anurag Sharma
VPO Padhiarkar, Via Taragarh,
Teh. Palampur, Distt. Kangra-176081
Ph. 9459061161

Sh. Amandeep
Vill. Ghuggar Tanda, Ward No. 4,
P.O. Palampur, Teh. Palampur,
Distt. Kangra-176061
Ph. 9873771818

Sh. Gulshan Rai Passi
Passi Pharmacy, Hariana.
Dasua Road, Hoshiarpur
Ph. 9815435766

Sh. C.M. Vasudeva
2232, Jalvayu Vihar, Sector 67,
Mohali, Panjab
Ph. 9417683555

Sh. Chetan Punj
Ward No. 11, VPO. Rajpur
Teh. Palampur, Distt. Kangra-176061
Ph. 9882117443

Sh. Mahender Rana
#565, Indra Nagar, Nangal Township
Distt. Ropar
Ph. 9914994724

Sh. Deepak Kumar Sahore
Ward No. 3, Vill Bhatoli, P.O. Mehatpur,
Distt. UNA (H.P.)
Ph. 8219979858

Sh. Jagdish Chander Tripath
501, Sangath, Pailaun,
Mattkoteshwar Road,
Amedabad
Ph. 9428330792

Sh. Dushyant Joshi
408, Vinay Endevour, Huddi Circle
Bangalore - 9886886757

Sh. Krishan Kumar Goswami
55, Sector-10 A, Vasundra Enclave,
Gaziabad (UP)
Ph. 9910882603

Sh. Pawan Sharma
452, Ward No. 13, Morinda (Ropar)
Punjab
Ph. 9876731089

Sh. Vijay Bagi
BX-40, Kanshi Nagar, Dalhousie Road,
Pathankot
Ph. 9417575777

Sh. Tilak Raj Sharma
Patkha Mohalla,
Nawashahar (SBS Nagar)
Ph. 9841379083

Sh. Rajan Maini
VPO Hazaipur, Teh. Mukerian,
Distt. Hosiarpur
Ph. 9872164777

Sh. Rakesh Nagpal
Arya Nagar, Dad House Road,
House No. B-1147, Shiva Colony,
Fazilka-152123
Ph. 9592500112

Sh. Krishan Kumar Sareen
Danda Mandi, Near Shiv Mandir,
Nawashahar (SBS Nagar)
Ph. 9815388729

Sh. Sham Sunder Sarda
Sarda Muhalla,
Nawashahr (SBS Nagar)
Ph. 9915906160

Madam Hema Sharma
Sunder Sadan, Ram Bagh,
Railway Mandi, Near BSNL Office,
Hoshiarpur
Ph. 9356412130

Sh. Sumit Khanna
603, Sutrehad, Nagrota Bagwan,
Distt. Kangra-176047
Ph. 9418054416

WORKING COMMITTEE OF SHRI SANATAN DHARAM PRATINIDHI SABHA (PANJAB) NEW DELHI

President
Dr. Desh Bandhu
#1117, Prabhu Prem Puram,
Ambala Cantt
Ph. 9812053283

Working President
Sh. Inder Mohan Goswami
Adminstrator, Sapt Rishi Ashram,
Sapt Sarovar Marg, Hardiwar
Ph. 9818881045

Sr. Vice President
Mahant Swroop Bihari Sharn
Dhobian Street, Malerkotla-148023
Ph. 7009144857

Vice Presidents
Sh. Virender Katyal
B-51A, Vijay Nagar,
Near Hanuman Mandir,
Delhi-110009
Ph. 9818148211

Sh. Shiv Kumar Lomas
#5-C, 186 New Mandi Bhalwan Wala,
Adda,
Dhuri, Distt. Sangrur
Ph. 9814065786

Sh. Suresh Kumar Bansal
Shop No. 44-A, Grain Market
Bathinda

Dr. R.P. Bhardwaj
100, Choti Baradari, Part-I,
Gadha Road, Jalandhar.
Ph. 9888475599

Sh. Kewal Krishan Agarwal
29-C, Mall Road, Ludhiana-141001
Ph. 9888375053

Dr. Vivek Sharma
Indra Amar Kuteer, Ghuggar,
Palampur-176061
9816052889

Sh. Sudhri Kumar Gupta
Latowali, Kankhal (Haridwar)
Uttrakhand
9412071804

Sh. Rakesh Oberoi
2-1, Racecourse Road, Dehradun
9837021114

Sh. Surender Kumar Joshi
2/50 New RSB Colony
Manaksar Link Road, Ward No. 2,
Suratgarh-335804
Ph. 9461510351

General Secretary
Sh. Upinder Sharma
212, Guru Nanak Colony,
Faridkot (Panjab)
Ph. 9463785909

Dr. Gurdip Kumar Sharma
c/o Dr. Nisha Bhargava
Principal's residence
MCM DAV College for Girls
Sector 36-A, Chandigarh
Ph. 9417264182

Finance Secretary
Sh. D.R. Madan
C-64, Kalka Ji, New Delhi-110019
Ph. 9811687199

Office Secretary
Sh. Subhash Chander Sharma
103, Supriya Apartment, Sector 10
Dwarka, New Delhi.
Ph. 9810436496

Prachar Mantri
Dr. Nand Kishore Sharma
#10, Ashok Vihar, Mahesh Nagar,
Ambala Cantt.
Ph. 9896589890

Organising Secretary
Sh. Rajiv Kumar Moudgil
1083, Sector 19-B,
Chandigarh
Ph. 9878622100

Secretaries
Ms. Lakshmi Singh Tikri
36, Panchsheel Apt.,
Al, Panchsheel Enclave,
New Delhi-110017
Ph. 9810500193

Sh. Mohinder Sharma
392, Behind Bus Stand,
Gurdaspur
Ph. 9463372411

Dr. Rajinder Singh
#25, Tagore Garden, Ambala Cantt
Ph. 9466596782

Sh. Vipin Kumar Mehta
223-L, Bada Model Town,
Yamunanagar
Ph. 9416590909

Sh. Subhsh Singh Ghai
S. Humum Singh Cottage,
Sharwan Nath Nagar,
Haridwar-249401
Ph. 9897370402

Joint Secretaries
Sh. Janak Raj Bawa
31-A, New Abadi, Krishan Kot,
Ismailabad, Amritsar
Ph. 9646127905

Sh. Sukhdev Chodha
Vill. & P.O. Allawalpur,
Distt Jalandhar
Ph. 9815436332

Sh. C.R. Sharma
12, Preet Nagar, Near Shiv Mandir,
Ambala Cantt
Ph. 9729093818

Sh. Rajendra Kumar Gauniyal
39 Adarsh Nagar
Jagjitpur, Hardiwar
Ph. 9319029708

Sh. Ribhu Kant Goswami
9/74 Sector 3, Rajinder Nagar,. Near
Anguri Park, Sahibabad, Gaziabad
Ph. 9540166678

Sh. Luxim Narayan Upadhaya
1 D-30, Jawahar Nagar,
Near Indervatika,
Sri Ganganagar 335001
Ph. 9414090535

Member Executive
Dr. Rajiv Kumar
#117, Prashar Niwas Gali No. 7,
Shiv Shakti Nagar,
Sadhu Ashram Ke Piche, Una Road,
Hoshiarpur
Ph. 9417548868

Dr. Satish Sharma
Vill. & P.O. Bundla Tea Estate
Palampur (H.P.)
Ph. 9418110581

EXECUTIVE COMMITTEE SANATAN DHARMA EDUCATION BOARD (Regd.) CHANDIGARH

Patrons
Sh. Avinash Rai Khanna
Former M.P.
Street No. 4C-1, Naryan Nagar
Hoshiarpur
Ph. 9463200544

Sh. Kewal Krishan Sharma
28, Sector-11 A,
Chandigarh-160011
Ph. 9814695519

Sh. Upkar Krishan Sharma
1130, Sector 44 B,
Chandigarh
Ph. 9872011329

President
Dr. Desh Bandhu
#1117, Prabhu Prem Puram,
Ambala Cantt
Ph. 9812053283

Working President
Dr. Gurdip Kumar Sharma
c/o Dr. Nisha Bharagava
Principal's Residence
MCM DAV College for Girls
Sector 36-A, Chandigarh
Ph. 9417264182

Vice Presidents
Sh. Mahender Kalra
Kalra Niwas, Kalra Colony,
G.T. Road, Palwal
Ph. 9812033212

Sh. Sudhir Kumar Gupta
Gali Latowali Kankhal,
Haridwar, (Uttrakhand)
Ph. 9412071804

Dr. Vivek Sharma
Indra Amar Kuteer, Ghuggar
Palampur-176061
Ph. 9816052889

Shri Balraj Bhasin
Bji Ki Havelian, L-VII-1001
Aggar Nagar South End,
Canal Road, Ludhiana
Ph. 9814022564

Sh. Kewal Krishan Agarwal
29-C, Mall Road, Ludhiana-141001
Ph. 9888375053

Mr. Vikran Sharma
28, Sector 11A,
Chandigarh-160011
Ph. 9814105515

Sh. Sudhir Windlas
155, The Mall Road,
Ambala Cantt
Ph. 9416021555

Sh. Jagdish Arora
23, Khandari Road,
Agra-282002
Ph. 9319093810

General Secretary
Dr. Rajinder Singh
25, Tagore Garden,
Ambala Cantt
Ph. 9466596782

Finance Secretary
Dr. Nand Kishore Sharma
#10, Ashok Vihar, Mahesh Nagar,
Ambala Cantt.
Ph. 9896589890

Office Secretary
Sh. C.R. Sharma
12, Preet Nagar, Near Shiv Mandir,
Ambala Cantt
Ph. 9729093818

Organising Secretary
Dr. R.P. Bhardwaj
100, Choti Baradari, Part-I,
Gara Road, Jalandhar.
Ph. 9888475599

Secretaries
Dr. Prem Kanwal Bajaj
#2140, Sector 15-C, Chandigarh
Ph. 9872042140

Sh. Adarsh Kumar Sharma
1709/22-B, Chandigarh
Ph. 9915281557

Sh. Sanjay Goel
612-G, Shakti Nagar
Amrik Singh Road,
Bathinda
Ph. 9417159171

Sh. Yogeshwar Lal
Ward No. 2, Durga Colony,
Naraingarh (Ambala)
Ph. 9416268602

Dr. Satish Sharma
Vill. & P.O. Bundla Tea Estate
Palampur (Kangra) H.P.

Sh. Subhash Singh Ghai
S. Hukam Singh Cottage
Sharwan Nath Nagar
Haridwar-249401
Ph. 9897370402

Joint Secretaries
Sh. Ashok Sharma
#5-R, Gali No. 3, Gautam Nagar,
UNA Road, Hoshiarpur (Pb.)
Ph. 9814816396

Sh. Mohan Lal Aggarwal
1161/5, Kalal Mazri, Ambala City
Ph. 9816202728

Sh. Jagdish Paneja
72, Grain Market,
Ismailabad (Kurukshetra)
Ph. 9416088524

Sh. Krishan Kumar Sharma
651, Ward No. 6, Masjid Gali
P.O. Palampur, Distt. Kangra-176061
Ph. 7018247114

Dr. Pardeep Kumar Joshi
Hazari Bagh, Kankhal,
Haridwar, (Uttrakhand)
Ph. 9411121140

Sh. Rajeev Sharma
#392, Behind Bus Stand,
Gurdaspur
Ph. 9814132625

Sh. B.M. Ralhan
19-C, Udham Singh Nagar
Civil Lines, Ludhiana
Ph. 9417471895

Executive Members
Sh. Inder Mohan Goswami
Administrator, Sapt Rishi Ashriam
Sapt Sarovar Marg, Haridwar
9818881045

Mahant Swroop Bihari Sharn
Dhobian Street,
Malerkotla-148023
Ph. 7009144857

Sh. Upinder Sharma
212, Guru Nanak Colony,
Faridkot (Panjab)
Ph. 9463785909

Sh. D.R. Madan
C-64, Kalka Ji,
New Delhi-110019
Ph. 9811687199

Sh. Subhash Chander Sharma
103, Supriya Apartment,
Sector-10, Dwarka, New Delhi
Ph. 9810436496

Sh. O.P. Arora
Plot No. 21/F, Opposite H.No. 2410,
Rajpura Distt. Patiala
Ph. 9872826039

Dr. R.C. Sharma
4, Ashok Vihar, Mahesh Nagar,
Ambala Cantt
Ph. 9416308663

Sh. Jaideep Nayyar
#326, Madhokpura,
Near Railway Station
Bathinda
Ph. 9815667777

Sh. Jatinder Bhatia
#3720, Sector 46-C,
Chandigarh
Ph. 9872511114

Prof. K.K. Handa
107, Gali No. 3, Pratap Nagar,
Near Naloian Chowk,
Hoshiarpur-146001
Ph. 9417546689

Sh. Satpal Brahmchari
Sh. Radha Krishan Dham,
Bhupatwala, Haridwar
9837471888

Sh. Amit Mayor
EH-113, Opp. Govt. Training College,
Ladowali Road, Jalandhar-144001
Ph. 9888266666

Dr. Bharti Bandhu
1117, Prabhu Prem Puram,
Ambala Cantt
Ph. 9416076765

Madam Hema Sharma
Sunder Sadan, Ram Bagh, Railway Mandi
Near BSNL Office,
Hoshiarpur
Ph. 9356412130

Sh. Narender Agarwal
29-C, Mall Road,
Ludhiana-141001
Ph. 9855131158

Sh. Roshan Lal Khanna
603, Sutrehad, Nagrota Bagwan,
Distt. Kangra-176047
Ph. 9816063168

Sh. Bansi Dhar Makhija
#A-1, A-2, 4 Marla, New Colony,
Palwal-121102
Ph. 9416066143

Sh. Manish Kumar Gupta
33-34, Chowk Bazar Subathu,
Teh & Distt. Solan-173206
Ph. 9816202163

Dr. (Mrs.) Vijay Sharma
126-127, Prabhu Prem Puram,
Ambala Cantt
Ph. 9416463767

Dr. (Mrs.) Paramjit Kaur
H.No. 101, Vidya Nagar,
Opp. Panjabi University Patiala
Ph. 9416862076

Dr. (Mrs.) Madhu Sharma
10, Shalimar Colony,
Ambala City
8053957539

A BIG THANKS TO ALL DONORS FOR THEIR GENEROUS CONTRIBUTION FOR EDUCATIONAL PURPOSES

Contribution received w.e.f. 01.03.2022 till this date

1.	Dr. Bharti Bandu/Dr Desh Bandu (1,07,000) One Lakhs SevenThousand Only	Ambala Cantt	65000* 21000** 21000
2.	Dr. Meenakshi Kaushal	Raipur (Jharkhand)	21000
3.	Sh. Ramesh Sharma	New Zealand	21000
4.	Dr. (Mrs.) Janak Khanna	(SDC Ambala) Panchkula	21000
5.	Mr. Sumit Khanna	Nagrota Bagwan	20000***
6.	Mrs. Suman Seth	Nagrota Bagwan	15000***
7.	Rtn Sudhir Gupta	Ambala Cantt	11000
8.	Mrs Shabnam & Rtn Puneet Nath	Ambala City	11000
9.	Mrs Preeti & Mr Rajesh Sharma	SDV Ambala Cantt	11000
10.	Mr Vaibhav & Mrs Priyanka	Jakarta	11000
11.	Mr Gaurang & Mrs Sumedha	USA	11000
12.	Dr. Ram Kumar Sood	Palampur	11000
13.	Dr. Asha Sharma	SDC, Ambala Cantt	11000
14.	Prof. S.C. Mehta	SDC Ambala Cantt	11000
15.	Mrs. Neha Yagnick	Singapore	11000
16.	Rtn. Dr. Kapil Vohra	Ambala City	11000
17.	Rtn Ravinder Dhawan	Ambala City	10000
18.	C.D.S. Kaushal	Kurukshetra	10000
19.	Rtn Ajay Kurma Katyal	Ambala City	5100
20.	Mrs Suman Seth	Nagrota, Bagwan	5100
21.	Rtn Naresh Dhingra	Ambala Cantt	5100
22.	Mr Vinod Katyal	Delhi	5100
23.	Mr Amit Katyal	Delhi	5100
24.	Sh Ashwani K Sharma	Chandigarh	5100
25.	Mr Pradeep Khera	Ambala Cantt	5100
26.	Rtn. Sanjeev Aggarwal	Ambala Cantt	5100
27.	Dr. Ashima Dhir	Chandigarh	5000
28.	Rtn Munish Dhall	London	5000
29.	Mr Pankaj Oberoi	Jakarta	5000
30.	Rtn Varun Chopra	Ambala Cantt	5000
31.	Rtn Capt Baldev Singh	Ambala Cantt	5000
32.	Rtn Alok Sood	Ambala Cantt	5000
33.	Rtn Rajesh Chaudhary	Ambala Cantt	5000
34.	Rtn Surinder Goel	Ambala Cantt	5000
35.	Sh. Anand Sharma	Shimla	5000

36.	***Deposited in accound from HDFC bank but details not known***		5000
37.	Mrs Rita Gupta in memory of Sh Kuldeep Gupta Ji	USA	5000
38.	Goswami Ganesh Dutt Memorial Society (Regd)	New Delhi	5000
39.	Mrs. Anita	Panchkula	5000
40.	Rtn Dr. S.C. Dhir	Ambala Cantt	3100
41.	Sh. D.R. Madaan	Delhi	3100
42.	Mrs Neelima Khandekar	Ambala Cantt	3100
43.	Gupta Famil Sector 19A	Chandigarh	3100
44.	Rtn Dr. Abhinav Sharma	Ambala Cantt	3100
45.	Rtn Anil Verma	Ambala Cantt	3100
46.	Mr Vineet K Sharma	Palampur	3100
47.	Mrs Shashi Sharma	Chandigarh	3100
48.	Rtn. Subhash Khurana & Mrs. Poonam Khurana	Ambala Cantt	3100
49.	Sh K.J.S. Khurana	Chandigarh	2100
50.	Mr Harvinder Singh	SDC Ambala Cantt	2100
51	Dr. Rakesh Sharma	Mumbai	2551
52.	Prof. P.K. Mathur	SDC Ambala Cantt	3000
53.	Dr. Divya Jain	Karnal (SDC Ambala)	2100
54.	Mr Rakesh Sehgal	Chandigarh	2100
55.	Mr Mohan Singh	Ambala Cantt	2100
56.	Rtn Dr. Chander Mohan Kakkar	Ambala Cantt	2100
57.	Mrs Seema Vasudeva	Kurukshetra	2100
58.	Ms Dhanheshwari	SDV Ambala Cantt	2100
59.	Mrs Girish Mehan	Nawashahar	2100
60.	Mrs. Seema Gupta	SDV Ambala Cantt	2100
61.	Dr R.C. Sharma	Ambala Cantt	2100
62.	Dr. Anil Parti	Chandigarh	2100
63.	Mrs. Aruna Gupta	Gurugram	2100
64.	Rtn Inderjit Guglani	Ambala Cantt	2100
65.	Dr. (Mrs.) Vijay Sharma	Ambala Cantt	2100
66.	Mr. Anil Sharma IMTECH	Chandigarh	2100
67.	Prof. S.C. Vats	Chd, SDC Ambala	2100
68.	Mr. Ankit & Mr. Lakshit Gupta	Bengluru	2100
69.	Dr. Aarti Trehan	Ambala City	2100
70.	Mr. Sumit Chbber	SDC Ambala Cantt	2100
71.	Rtn. Ms. Anjali Wadhawan	Ambala Cantt	2100
72.	Mrs. Jagroop Kaur	SDV Ambala Cantt	2100
73.	Ms. Kavleen Bharej	SDC Ambala Cantt	2000
74.	Mrs. Kulbir Kaur	Jalandhar	2000

75.	Sh. Jagdish Chander	SDC Ambala Cantt	2000
76.	Sh. Anil Chadha	Ambala Cantt	1100
77.	Dr. Rajiv Kumar	Hariana	1100
78.	Mr. Hem Chand	SDC Ambala Cantt	1100
79.	Mr. Sandeep Kumar	Ambala Cantt	1100
80.	Shri Ishwar Chand Sharma	Patiala	1100
81.	Mr. Sanjeev K Sharma	Karnal	1100
82.	Dr. Madhu Sharma	SDC Ambala Cantt	1100
83.	Dr. Ramesh Dhanda	Kurushetra	1100
84.	Ms. Radhika Nagrath	Haridwar	1100
85.	Shri Kanta Prashad	Haridwar	1100
86.	Dr. Jai Gopal Sharma	Kesri (Ambala)	1100
87.	Dr. Sunil Sharma	Ambala Cantt	1100
88.	Mrs. Urvashi Issar	Delhi	1100
89.	Dr. Paramjit Kaur	SDC Ambala	1100
90.	Dr. Tilak Raj Sharma	Yamunanagar	1000
91.	Mr. Dinesh Dewasar	Panchkula	1000
92.	Dr. Dalbir Singh	Ambala City	1000
93.	Sh. Subhash Khurana	Ludhiana	1000
94.	Dr. Ramesh Dogra	Panchkula	750
95.	Ms. Meenu Bhardwaj	SDC Ambala Cantt	501
96.	Sh. Rajan Sharma	Ambala Cantt	501
97.	Sh. Rajiv Kumar	Bassi Daulat Khan	500
98.	Sh. Anil Sharma	Chandigarh	501
99.	Mrs. Sushma Dawar	Ambala Cantt	501

*** For Furniture NKSD School Plp 65000**
****For Library SMSD School Kankhal 21000**
***** For LED Projector Nagrota School 35000**

Looking for your generous contribution to bring smiles on unknown faces. Please do contribute for noble cause of Education to poors.

Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha (Panjab)
Punjab National Bank
Paharganj, New Delhi-55
A/c No. 02822010056000 **IFSC Code:** PUNB0028210

Please share transaction details on 9812053283 for office record

नव संवत्सर मंगलमय हो

डॉ. चित्तरंजन दयाल सिंह कौशल
पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, यूनिवर्सिटी कॉलेज,
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा -२०७९
०२ अप्रैल २०२२

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा विक्रम संवत् का शुभारंभ है। यह सृष्टि का उत्पत्ति-दिवस भी है। भारतीय काल गणना के अनुसार ब्रह्मा जी ने 1 अरब 97 करोड़ 29 ला 49 हजार 124 वर्ष पूर्व इसी दिन सृष्टि की रचना की थी। कलियुग का आरंभ भी इसी दिन हुआ था। इस दिन से कलियुग का 5124 वाँ वर्ष शुरु हो रहा है।

भारत का सर्वमान्य संवत् विक्रम संवत् है।

महाराज शकारि विक्रमादित्य ने भारतीय आर्य संस्कृति व हिन्दू जीवन-दर्शन की पुनः स्थापना के प्रतीक के रूप में विक्रम संवत् को प्रारंभ किया। सभी जगह संवत् पर्व पर मेलों व उत्सवों का आयोजन किया जाता है।

नवे वर्षे नवे मासे नवे पक्षे नवे दिने ।
मुहूर्त्ते च नवे नित्यं नवा शक्तिस्समुद्भवेत् ।।

सनातन धर्म के अनुसार हिंदू नव वर्ष का श्री गणेश चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से होता है।

चैत्रे जगद्गुरु ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति।।
-------- ब्रह्म पुराण

सभी भारतीय नव संवत्सर पर परस्पर शुभकामनाएं देते हैं व बधाई संदेश भेजते हैं। सभी अपने घर-द्वार पर धर्म ध्वजा व पीत-पताका फहरा कर आनन्द मनाते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से व आयुर्वेद के अनुसार प्रातः तैल-मर्दन व शीतल जल से स्नान का विधान है। सरोवर में स्नान करना विशेष फलदायी माना जाता है। निम्ब वृक्ष के पत्र-पुष्प के चूर्ण के साथ काली मिर्च, मिश्री, जीरा,अजवायन, हींग, नमक आदि मिला कर रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जाता है।

पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः।
सुपुष्पाणि समादाय चूर्णं कृत्वा विधानतः।।
मरिचं लवणं हिङ्गुं जीरकेण च संयुतम्।।
------पञ्चाङ्ग-पारिजातम्

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहं
कुर्याद् ध्वजारोहणम्,
स्नानं मङ्गलमाचरेद् द्विजवरैः साकं सुपूजोत्सवैः।
देवानां गुरुयोषितां च विभवा लङ्कारवस्त्रादिभिः,
सम्पूज्यो गणकः फलं च शृणुयात् तस्माच्च लाभप्रदम्।।
----उत्सव-चन्द्रिका

सुयोग्य ब्राह्मण व विद्वान् आचार्य के मार्गदर्शन में यज्ञ व पूजा का संकल्प लेकर सबकी मंगलकामना की जाती है।
सब विघ्नों के विनाश व सुख-शान्ति के लिए सच्चे मन से की गयी प्रार्थना अवश्य फलवती होती है।

भगवंस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहाऽस्तु मे।
संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।।

मिरशाह के अत्याचार से मुक्ति दिलाने वाले संत झूलेलाल का जन्म चैत्र शुक्ल पक्ष में विक्रम संवत् 1007 में सिंध प्रांत के नसरपुर ग्राम में हुआ। आज भी उनका जन्मदिन चैत्र शुक्ल द्वितीया को बड़े उल्लास से मनाया जाता है।

त्रेतायुग में लोक में त्राहि-त्राहि मचा देने वाले रावण का विनाश कर आदर्श राम-राज्य की स्थापना करने वाले श्री राम का राज्यारोहण भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुआ था।

इसी दिन से शक्ति स्वरूपा अन्नपूर्णा माता दुर्गा की नवरात्र उपासना प्रारम्भ की जाती है।

गौरवशाली अध्यात्म और वैदिक ज्ञान का प्रसार करने के लिए "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का पुनः उद्घोष कर महर्षि दयानंद सरस्वती ने इसी दिन आर्य समाज की स्थापना की थी।

सब वर्गों के लोगों को हृदय से लगा कर सेवा और अध्यात्म का संदेश देने वाले गुरु अंगद देव जी का जन्म आज ही के दिन हुआ था।

भारत के संविधान निर्माण में महती भूमिका निभाने वाले डा .भीमराव अम्बेडकर का जन्म आज ही के दिन हुआ था।

भारतीय वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होता है । प्रकृति में भी नव परिवर्तन दिखाई देता है।पेड़-पौधों में नवीन पत्र अंकुरित होने लगते हैं। नवीन रक्त का संचार होता है। नया वित्तीय वर्ष भी शुरु होता है।

वैज्ञानिक व सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय संवत् पूर्णतया सर्वत्र मान्य है।

अन्त में पुनः नव संवत्सर की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

सनातन धर्मः एक व्याख्या

आदित्य आंगिरस
वी वी बी आई एस एण्ड आईएस विभाग
(पंजाब विश्वविद्यालय)
साधु आश्रम, होशियारपुर

ईशावास्य उपनिषद् के 15 एवं 16वें मन्त्र में सूर्य से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि सत्य का वास्तविक रूप सोने के पात्र से ढका हुआ है। अत: हे सूर्य देव! आप से प्रार्थना है कि आप अपने तेजोमय प्रकाश को समेट कर हमें सत्य का सही रूप बताये । क्योंकि यम, पूषा, सूर्य, प्रजापति आप ही हैं। आप अपने प्रकाश को समेट कर जो आप का कल्याणतम स्वरूप है वह हमें दिखायें क्योंकि मेरे भीतर और आप एक ही पुरुष हैं अर्थात आप प्रकाश रूप में मेरे इस भौतिक शरीर में विद्यमान है।

सनातन धर्म के विषय में कुछ भी कहने से पूर्व यह उचित होगा कि 'धर्म' का वास्तविक रूप संभवत: क्या हो सकता है' रूपी प्रश्न का समाधान के विषय में कुछ कहा जाये क्योंकि धर्म (पालि में धम्म) वास्तव में भारतीय संस्कृति और भारतीय दर्शन की प्रमुख संकल्पना है। 'धर्म' शब्द भारतीय दर्शन एवं संस्कृति के अनुसार एक विस्तृत एवं व्यापक अर्थो को समेटने वाला शब्द है जिसका विश्व की भाषाओं और अन्य संस्कृतियों में समतुल्य शब्द का पाना बहुत कठिन है क्योंकि अंग्रेजी में रिलिजन और ऊर्दू आदि भाषाओं में मजहब आदि शब्द धर्म के संदर्भ में प्रयुक्त होते हैं। यह बात मैं इस लिये कह रहा हूं क्योंकि जिस तरह की दर्शन के लिये फिलॉसफी शब्द का प्रयोग किया जाता है वह संस्कृति, आस्था विश्वास आदि को पूर्ण रूपेण द्योतित नहीं करता क्योंकि दर्शन का वास्तविक अर्थ न केवल देने से बढ़कर है अपितु एक् निश्चित जीवन धारा एवं विचार पद्धति को द्योतित करता है। अत: धर्म को अन्य भाषाओं में प्रचलित शब्दों के समानार्थी रूप में रिलिजन या मजहब कहना हमारी मजबूरी है। क्योंकि मजहब का अर्थ संप्रदाय होता है एवं रिलिजन एक संप्रदाय के संदर्भों में प्रचलित है लेकिन धर्म नहीं। मत का अर्थ विशिष्ट विचारधारा को परिलक्षित करना है। साधारण शब्दों में धर्म को व्यापक अर्थ में लिया जाता हैं जिनमें कर्तव्य, अहिंसा, न्याय, सदाचरण, श्रेष्ठतम, सद्-गुण आदि कुछ हैं परन्तु अव्याप्ति दोष होने के कारण धर्म शब्द की व्यापकता को पूर्णता नहीं देता क्यों कि धर्म शब्द कई बार गुण, स्वभाव आदि को भी परिलक्षित करता है। परन्तु बहुधा में धर्म एक परम्परा के मानने वालों का समूह माना जाता है एवं ऐसा माना जाता है कि धर्म की यह अवधारणा मानव को मानव बनाती है। धृ धातु एवं मन् प्रत्यय से बने शब्द धर्म का शाब्दिक अर्थ होता है- धारण करने योग्य सबसे उचित धारणा, अर्थात जिसे सबको धारण करना चाहिये वही धर्म का वास्तविक रूप है।

पुराणों के अनुसार धर्म को ब्रह्मा के एक मानस पुत्र माना गया हैं। प्रचलित अवधारणा के अनुसार वे उनके दाहिने वक्ष से उत्पन्न हुए हैं। धर्म का विवाह दक्ष की 16 पुत्रियों से हुआ था, जिनके नाम हैं- श्रद्धा, मैत्री, दया, शान्ति, तुष्टि, पुष्टि, क्रिया, उन्नति, बुद्धि, मेधा, तितिक्षा, ह्री और मूर्ति। श्रद्धा से नर और काम का जन्म हुआ ; तुष्टि से सन्तोष और क्रिया का जन्म हुआ ; क्रिया से दण्ड, नय और विनय का जन्म हुआ। अहिंसा, धर्म की पत्नी (शक्ति) हैं। धर्म तथा अहिंसा से विष्णु का जन्म हुआ है। धर्म की ग्लानि होने पर उसकी पुनर्प्रतिष्ठा के लिए विष्णु अवतार लेते हैं। विष्णुपुराण में 'अधर्म' का भी उल्लेख है। अधर्म की पत्नी हिंसा है जिससे अनृत नामक पुत्र और निकृति नाम की कन्या का जन्म हुआ। भय और नर्क अधर्म के नाती हैं । यद्यपि भारतीय मनीषा ने धर्म शब्द की व्यापकता को समझा और इस शब्द को विभिन्न संदर्भो एवं रंगों में परिलक्षित करने का प्रयास किया। महात्मा गांधी का मानना था कि धर्म कोई पंथ नहीं बल्कि मानव के अन्तर्निहित मूल्य होते हैं। परन्तु गौतम ऋषि कहते हैं - 'यतो अभ्युदयनिश्रेयस सिद्धि: स धर्म।' अर्थात जिस काम के करने से अभ्युदय और निश्रेयस की सिद्धि हो वह धर्म है। वहीं मनु ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं:

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम् ।

धृति (धैर्य), क्षमा (दूसरों के द्वारा किये गये अपराध को माफ कर देना, क्षमाशील होना), दम (अपनी वासनाओं पर नियन्त्रण करना), अस्तेय (चोरी न करना), शौच (अन्तरंग और बाह्य शुचिता), इन्द्रिय निग्रह: (इन्द्रियों को वश मे रना), धी (बुद्धिमत्ता का प्रयोग), विद्या (अधिक से अधिक ज्ञान की पिपासा), सत्य (मन वचन कर्म से सत्य का पालन) और अक्रोध (क्रोध न करना) ; ये दस मानव धर्म के लक्षण हैं।) जो अपने अनुकूल न हो वैसा व्यवहार दूसरे के साथ नहीं करना चाहिये - यह धर्म की कसौटी है। वहीं

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैव अनुवर्त्यताम्।

आत्मन: प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् ॥

धर्म का सर्वस्व क्या है, यह सुनो और सुनकर उस पर चलो ! अपने को जो अच्छा न लगे, वैसा आचरण दूसरे के साथ नही करना चाहिये। वात्स्यायन ने धर्म और अधर्म की तुलना करके धर्म को स्पष्ट किया है। वात्स्यायन मानते हैं कि मानव के लिए धर्म मनसा, वाचा, कर्मणा होता है। यह केवल क्रिया या कर्मों से सम्बन्धित नहीं है बल्कि धर्म चिन्तन और वाणी से भी संबंधित है। जैन संप्रदाय के अनुसार अहिंसा परमो धर्म: है। जैन ग्रंथ तत्त्वार्थ सूत्र में धर्म का वर्णन है:

उत्तम क्षमा	उत्तम शौच	उत्तम तप
उत्तम मार्दव	उत्तम सत्य	उत्तम त्याग
उत्तम आर्जव	उत्तम संयम	उत्तम ब्रह्मचर्य

वर्तमान काल में भी धर्म के विषय में विभिन्न दृष्टिकोणों से भारतीय एवं पश्चिमी मनीषा ने व्यापक विचार विमर्श किया गया है। बोसांके ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि जहाँ धर्मपरायणता, अनुशक्ति एवं भक्ति मिलती है, वही धर्म का प्राथमिक रूप प्राप्त हो जाता है। धर्म से मोटे तौर पर आशय है अलौकिक शक्ति पर विश्वास है। अलौकिक हम उसे कहते है जो लौकिक जगत से परे है इंद्रियगम्य नहीं है जो अगम और अगोचर है। विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई धर्म की परिभाषाएं निम्नलिति हैं--

मजूमदार और मदन के अनुसार, धर्म किसी भय की वस्तु अथवा शक्ति का मानवीय परिणाम है, जो पारलौकिक है इन्द्रियों से परे है। यह व्यवहार की अभिव्यक्ति तथा अनुकूलन का एक रूप है, जो लोगों को अलौकिक शक्ति की धारणा से प्रभावित करता है। ''डा. राधाकृष्णन, ''धर्म की अवधारणा के अन्तर्गत हिन्दू उन स्वरूपों और प्रतिक्रियाओं को लाते है जो मानव-जीवन का निर्माण करती है और उसको धारण करती है।'' गिलिन और गिलिन के अनुसार ''धर्म के समाजशास्त्रीय क्षेत्र के अन्तर्गत एक समूह में अलौकिक से सम्र्बंधित उद्देश्यपूर्ण विश्वास तथा इन विश्वासों से सम्र्बंधित बाहरी व्यवहार, भौतिक वस्तुएँ और प्रतीक आते है।'' फ्रेजर ''धर्म से मेरा तात्पर्य मनुष्य से श्रेष्ठ उन शक्तियों की संतुष्टि अथवा आराधना करना है जिनके बारे में व्यक्तियों का विश्वास हो कि वे प्रकृति और मानव-जीवन को नियंत्रित करती है तथा उनको निर्देश देती है।'' मानते हैं। वहीं टेलर, ''धर्म का अर्थ किसी आध्यात्मिक शक्ति में विश्वास करना है।'' दुर्खीम, धर्म "पवित्र वस्तुओं से संम्बधित विश्वासों और आचरणों की समग्रता है जो इन पर विश्वास करने वाले को एक नैतिक समुदाय के रूप मे संयुक्त करती है।'' होबेल, ''धर्म अलौकिक शक्ति के ऊपर विश्वास में आधारित है, जो आत्मवाद और मानव को सम्मिलित करता है।'' मैलिनोवस्की ने ''धर्म क्रिया का एक ढंग है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी, और धर्म एक समाजशास्त्रीय घटना के साथ-साथ एक व्यक्तिगत अनुभव भी है।'' कह कर धर्म की व्याख्या की है। होनिगशीम, ''प्रत्येक मनोवृत्ति जो इस विश्वास पर आधारित या इस विश्वास से सम्र्बंधित है कि अलौकिक शक्तियों का अस्तित्व है और उनसे सम्बन्ध स्थापित करना सम्भव व महत्वपूर्ण है, धर्म कहलाती है।'' ऑगबर्न ''धर्म मानवोपरि शक्तियों के प्रति अभिवृत्तियाँ है'' मानते हैं। जानसन, ''एक धर्म प्राणियों, शक्तियों, स्थान अथवा अन्य

वस्तुओं की अलौकिक व्यवस्था से सम्बंधित विश्वासों एवं व्यवहारों की अधिक या कम सामंजस्यपूर्ण व्यवस्था है।'' कह कर धर्म की व्याख्या करते हैं।

इन सभी विचारों को देख कर हम यह कह सकते हैं कि वास्तव में धर्म आत्मोन्नति, आत्म-कल्याण का एक पवित्र मार्ग है जो मनुष्य के अभ्युदय एवं नि:श्रेयस के मार्ग को प्रशस्त करता है। जो इस मार्ग पर चलना चाहें केवल वे ही धर्म के सही एवं वास्तविक स्वरूप को समझ सकते है अन्यथा व्यर्थ पाखड़ों को ढोते-ढोते व्यक्ति व समाज अवसाद की स्थिति में डूबता है। अत: यह कहा जा सकता है धर्म आत्म के उद्धार का, आत्म के उत्थान की एक सुव्यवस्थित पद्धति है जिसका अनुसरण कर हम एक सुंदर समाज का निर्माण कर सकते हैं। महाभारत में धर्म के संदर्भ में एक यक्ष प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा गया है कि ''धर्मस्य तत्त्वम् निहितम् गुहायाम्'' अर्थात् वास्तविक धर्म का तत्त्व अत्यन्त गुप्त होने के कारण विचारणीय है एवं केवल विचार के माध्यम से ही वास्तविक धर्म मनुष्य जान सकता है। अत: धर्म वास्तविक रूप में एक ऐसी आचरणमूलक वैचारिक व्यवस्था है जिसमें तमाम अन्तर्विरोधों को समाहित करने की शक्ति है।

यद्यपि सनातन धर्म के विभिन्न तत्त्वों पर विभिन्न विद्वानों ने विशद विचार किया है एवं मनुष्य धर्म पशु धर्म एवं आपद धर्म के विषय प्रत्येक व्यक्ति ने अपने विचारों को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है परन्तु महाभारत, विशेषकर, श्रीमद्भगवद्गीता में सनातन धर्म के मूल तत्त्वों पर व्यापक रूप से चिन्तन किया गया है। यद्यपि गीता सनातन धर्म का सबसे पवित्र ग्रन्थ माना जाता है परन्तु यदि हम गीता का विशद अध्ययन करें तो हम देखते हैं कि गीता में धर्म की विशेष व्याख्या किस प्रकार की गई है एवं मनुष्य को कर्तव्य बोध करवाने का किस प्रकार प्रयास किया गया है। श्रीमद्भगवदगीता सभी समस्याओं के केवल समाधान प्रस्तुत ही नहीं करता है बल्कि यह आत्म-साक्षात्कार का मार्ग प्रशस्त करता है। श्रीमद्भगवद गीता वस्तुत: एक सुलझी हुई जीवन व्यवस्था के विषय में बात करती है जो केवल अनुभव गम्य एवं विचारणीय है। यदि गीता के प्रथम अध्याय का प्रथम श्लोक पर विचार करें तो हम देखते है कि संजय ने कुरुक्षेत्र जो युद्ध क्षेत्र है को धर्म क्षेत्र कहा है -

धर्म क्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किम कुर्वत संजय ॥ अध्याय १ श्लोक १

यहां धर्मक्षेत्र के अर्थ पर विचार करना एक आवश्यकता बन जाती है। वास्तव में कुरुक्षेत्र का युद्ध दुर्नीति, हठ एवं तामसिक लोभ के प्रति विद्रोह की भावना से लडा गया। अत: संजय का युद्धक्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहना सर्वथा तर्कसंगत लगता है। सनातन धर्म का प्रथम मूल मन्त्र ही यही है कि अनीति एवं अन्याय के विरुद्ध संपूर्ण समाज खड़ा होना चाहिये ताकि समाज में वास्तविक सत्य की प्रतिष्ठा बनी रहे । यद्यपि गीता सर्वथा विपरीत परिस्थितियों में युद्ध के मैदान में युद्ध से होने वाले दुष्परिणामों के विषय में सोचकर मोह ग्रस्त अर्जुन कुल धर्म को बचाने के लिए श्रीकृष्ण से अपनी निराशा रूपी पीड़ा को व्याख्यायित करते हैं परन्तु श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया ज्ञान अर्जुन के लिये न केवल आत्यन्तिक कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है परन्तु वह ज्ञान अर्जुन को अपराध बोध से मुक्ति दिलवाने में सर्वथा समर्थ होता है । अर्जुन युद्ध के परिणाम पर चर्चा करते हुए कहते हैं कि -

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृतस्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥ अध्याय १ श्लोक ४०

युद्ध किसी भी प्रकार समाज कल्याण का मार्ग प्रशस्त नहीं करता अपितु इसके परिणाम स्वरूप लोक में जो अव्यवस्था का प्रतिपादन होगा वह निश्चित ही समाज में अभ्युदय एवं निश्रेयस के मार्ग को प्रशस्त नहीं करेगी। अर्जुन का यह तर्क है कि कुल के नष्ट हो जाने से सनातन धर्म नष्ट हो जायेगा और सामाजिक अव्यवस्था जो फैलेगी वह अलग से मुद्दा बनेगा क्योंकि यह निश्चित है कि धर्म नष्ट होने पर सम्पूर्ण कुल में पाप भी बहुत फैल जाते हैं ।श्री कृष्ण का उपदेश इसी संदर्भ में है कि राष्ट्र की संस्कृति ,उसकी रक्षा, उसकी सेवा अच्छे नागरिक का कर्तव्य पूरा करके की जा सकती है पलायन करके नहीं । व्यक्ति से समाज और समाज से राष्ट्र बनता है । व्यक्ति के उत्थान से समाज का और समाज के

उत्थान से राष्ट्र का उत्थान होता है । अतः यह महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि व्यक्ति के उत्थान के लिए यह आवश्यक है कि वह नैतिक और भौतिक दोनों पक्षों को समान रूप से विकसित करने का प्रयास करे । येन केन प्रकारेण द्वारा अर्जित धन से मनुष्य भौतिक साधन तो प्राप्त किए जा सकता हैं परन्तु नैतिकता के गुणों का विकास न होने से सुशान्ति एवं समर्पण का सर्वथा अभाव रहता है । अतः इन्हीं नैतिक गुणों का विकास कैसे हो, सही जीवन जीने की कला का ज्ञान गीता में दिया गया है जो कि सनातन धर्म में प्रचलित विभिन्न धर्म साधनाओं का निचोड. है जो मनुष्य को स्थितप्रज्ञ बनाने का प्रयास करती है। अतः स्थितप्रज्ञ होने का अर्थ है कि मनुष्य सुख एवं दुख में समान भावना करता हुआ व्यक्ति अपना निश्चित कर्म करने से है । क्योंकि श्रीकृष्ण कर्म मार्ग के रहस्य को जानते हैं एवं अर्जुन को कर्म के विषय में सनातन रहस्य को व्यक्त करते हुए कहते हैं

असक्तिरनभिष्वंगः पुत्रदार गृहादिषु ।

नित्यम् च समचित्तत्वम् इष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ अध्याय १३, श्लोक ९

कि 'पुत्र, स्त्री, घर और धन आदि में आसक्ति ही कर्म का प्रेरक तत्त्व है जो मनुष्य को कर्म पाश में बांधता है एवं इन के प्रति स्वामित्व का अभाव, ममता का न होना तथा प्रिय और अप्रिय की प्राप्ति में सदा ही चित्त का सम रहने में सहायता करता है।' अतः वे अर्जुन को समझाते हुए उसे स्थितप्रज्ञ होने की बात करते है एवं स्थितप्रज्ञ के लक्षणों को बताते है

यो न हृष्यति ने द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।

शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स में प्रियः॥ अध्याय १८ श्लोक ७८

अर्थात् जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है न शोक करता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ सम्पूर्ण कर्मों का त्यागी है वह भक्तियुक्त पुरूष मुझको प्रिय है।

विषया विनिवर्तन्ते निराहरस्य देहिनः

रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्टवा निवर्तते॥ ॥ अध्याय २, श्लोक ५९

इंद्रियों के द्वारा विषयों को ग्रहण न करने वाले पुरूष के भी केवल विषय तो निवृत हो जाते हैं परन्तु उनमें रहने वाली आसक्ति निवृत नहीं होती। इस स्थितप्रज्ञ पुरूष की तो आसक्ति भी परमात्मा का साक्षात्कार करके निवृत हो जाती है।' अतः प्रत्येक मनुष्य को आसक्ति रहित हो कर कर्म करना चाहिये-

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्।

अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥ अध्याय १८ श्लोक ७८

अर्थात् जो निन्दा-स्तुति को समान समझने वाला, मननशील और जिस किसी प्रकार से भी शरीर का निर्वाह होने में सदा ही सन्तुष्ट है और रहने के स्थान में ममता और आसक्ति से रहित है-वह स्थिरबुद्धि भक्तिमान् पुरूष मुझको प्रिय है।

इसी प्रकार वे अपने मत को अधिक विस्तार देते हुए कहते हैं

समः शत्रौ च मित्रे तथा मानापमानयोः।

शीतोष्णसुदुःेषु समः सग्ङविवर्जितः ॥ अध्याय १८ श्लोक ७८

अर्थात् जो व्यक्ति शत्रु-मित्र में और मान अपमान में सम है तथा सर्दी, गर्मी और सुख दुखादि द्वन्द्वों में सम रहता है और आसक्ति से रहित है। क्योंकि मनुष्य कर्मासक्ति से बंधा हुआ स्वधर्म का त्याग करके नाना प्रकार के कर्म करता है जोकि सभी प्रकार के दुःखों का मूल उत्स है। क्योंकि श्री कृष्ण अर्जुन को शाश्वत मनोवैज्ञानिक तथ्य बताते हुए कहते हैं कि

ध्यायतः विषयान् पुसः, संगः तेषूपजायते ।

संगात् सञ्जायते, कामः, कामात् क्रोधः अभिजायते ॥ अध्याय २ श्लोक ६२

अर्थात् 'विषयों का चिन्तन करने वाले पुरूष की उन्हीं विषयों में आसक्ति हो जाती है, आसक्ति से उन विषयों के प्रति कामना उत्पन्न होती है और कामना पूर्ण होने में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से सम्मोह एवं स्मृति विभ्रम की स्थिति बनती है जो मनुष्य मात्र के दुख एवं विनाश को जन्म देता है।

क्रोधात् भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।

स्मितभ्रंशाद बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ अध्याय २ श्लोक ६३

क्रोध से अत्यन्त मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है , मूढ़भाव से भ्रम हो जाता है , भ्रम हो जाने से बुद्धि अर्थात ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश हो जाने से यह पुरूष अपने पतन की ओर अग्रसर हो जाता है । अत: केवल भौतिक सुखों के पीछे व्यक्ति की दौड़ ही उसके दुखों का कारण है। अत: मनुष्य स्थितप्रज्ञ होते हुए जब जीवन आरंभ करता है तो ऐसी स्थिति में, कहा जा सकता है कि वह सनातन धर्म का अनुगामी है। अत: मनुष्य को सहज कर्म करना चाहिये-

सहजं कर्म कौन्तेय सदोषम् अपि न त्यजेत् ।

सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेन अग्निःइव आवृताः ॥ अध्याय १८,श्लोक 47

दोषयुक्त होने पर भी सहज कर्म को नहीं त्यागना चाहिए क्योंकि धुंए से अग्नि की भांति सभी कर्म किसी न किसी दोष से युक्त हैं। अत: मनुष्य को स्थितप्रज्ञ बनने का प्रयत्न करना चाहिये। यह वास्तव में एक ऐसी स्थिति है जो केवल समदर्शी होने की स्थिति का ही परिणाम है। अत: मनुष्य को चाहिये कि वह

अहिंसा, सत्यम्, अक्रोधः, त्यागः शान्तिपैशुनम् ।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं, मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ अध्याय १६, श्लोक 2

सहज कर्म करते हुए यदि लज्जा, दया,सत्य शान्ति आदि सद्गुणों को चित्त में अवश्य धारण करना चाहिये इसके बिना कर्म सहज रूप में नहीं हो सकता।

मन, वाणी और शरीर से किसी भी प्रकार किसी को भी कष्ट न देना, यथार्थ और प्रिय भाषण, अपना उपकार करने वाले पर भी क्रोध न होना, कर्म में कर्तापन के अभिमान का त्याग, अंत:करण की उपरति अर्थात चित्त की चंचलता का अभाव, किसी की भी निन्दा न करना, सब भूत प्राणि मात्र में हेतु रहित दया इंद्रियों का विषयों के साथ संयोग होने पर भी उनमें आसक्ति का न होना, कोमलता, लोक और शास्त्र के विरूद्ध आचरण में लज्जा और व्यर्थ चेष्टाओं का अभाव के द्वारा श्रेष्ठ मनुष्य को अपने को वश में करना सीखना चाहिये एवं वास्तव में यही श्रेष्ठतम कर्म है एवं इससे मनुष्य सहज अवस्था को प्राप्त करता हुआ सहज कर्म की ओर अग्रसर होता है। इसी लिये श्रीकृष्ण जीवन में सहज कर्म की बात करते हुए कहते है कि दोषयुक्त होने पर भी सहज कर्म का त्याग मनुष्य के लिये श्रेयस्कर नहीं हैं। श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं व्यक्ति में विनम्रता का भाव उसे सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिानि ।

शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥ अध्याय ५, श्लोक १८

'ज्ञानी व्यक्ति विद्या और विनययुक्त ब्राहमण मे तथा गौ, हाथी, कुत्ते, और चाण्डाल में भी समदर्शी होते हैं। अत: ऐसे व्यक्ति सम्पूर्ण प्राणियों में एक ही ईश्वर के दर्शन करता है । क्योंकि वह ईश्वर प्रत्येक जीव में स्थित है ।

सर्वभूतस्थम्, आत्मानम्, सर्वभूतानि च आत्मनि ये

ईक्षते, योगयुक्तात्मा, सर्वत्र, समदर्शनः ॥ अध्याय ६, श्लोक २९

'सर्वव्यापी अनन्त चेतन में एकीभाव से स्थिति रूप योग से युक्त आत्मावाला तथा सबमें समभाव से देने वाला योगी आत्मा को सम्पूर्ण भूतों में स्थित और सम्पूर्ण भूतों को आत्मा में कल्पित देता है। ऊँच -नीच, अमीर गरीब, देश जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' की परिकल्पना किसी जाति या राष्ट्र विशेष के लिए ही नहीं वरन विश्व के

लिए भी आवश्यक है। अतः मनुष्य को चाहिये कि वह अपने समस्त कर्मों को ईश्वर में समर्पित कर भय और कर्तापन का अभिमान से दूर रहे केवल इसी प्रकार वह सहज,सरल ,सकारात्मक कार्य करता हुआ ऊर्जावान होता है । अतः मनुष्य का कर्तव्य है कि उसे श्रेष्ठ आचरण करना चाहिए क्योंकि श्रेष्ठतम कर्म ही इस धरा पर लोक में अनुशंसित होता है। क्योंकि

यत् यत् आचरति श्रेष्ठः तत् तत् एव इतरः जनः।

सः यत्प्रमाणम् कुरूते लोकस्तदनुवर्तते ॥ अध्याय ३, श्लोक २१

श्रेष्ठ पुरूष जो जो जैसा आचरण करता है अन्य पुरूष भी वैसा वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है समस्त मनुष्य समुदाय उसी के अनुसार व्यवहार करने है। मनुष्य का स्वभाव होता है कि जिसे वह श्रेष्ठ समझता है उसका अनुकरण करने का प्रयास करता है। उच्च, ख्याति प्राप्त लोगों को श्रेष्ठ आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। अतः बुद्धिमान व्यक्ति को चाहिये कि वह सदा ही ऐसा विचार करते हुए आचरण करे क्योंकि

मन्मनाः भव मद्भक्तः मद्याजी माम् नमस्कुरू ।

मामेवैष्यसि सत्यम् ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥ अध्याय १८ श्लोक ६५

अर्थात् मुझमें अपना सम्पूर्ण रूपेण ध्यान लगाते हुए मेरा भक्त बन, केवल मेरा पूजन करने वाला हो और मुझको प्रणाम कर। ऐसा करने से तू मुझे ही प्राप्त होगा । यह मैं तुझसे सत्यप्रतिज्ञा करता हूँ, क्योंकि तू मेरा अत्यन्त प्रिय है। महत्त्वपूर्ण बात यह भी है ईश्वर की आराधना के लिए किसी भी प्रकार के आडम्बर की आवश्यकता नहीं होती –

पत्रं पुष्प फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।

तत् अहम् भक्त्युपहृतम् अश्नानि प्रशतात्मम॥।

अर्थात् 'जो कोई भक्त मेरे लिए प्रेम से पत्रं, पुष्प, फल, जल, आदि अर्पण करता है, उस शुद्ध बुद्धि निष्काम प्रेम–भक्त का प्रेमपूर्वक अर्पण किया हुआ वह पत्र, पुष्पादि मैं सगुण रूप से प्रकट होकर प्रीतिपूर्वक ग्रहण करता हूँ।' अतः जो व्यक्ति इस प्रकार ईश सेवा करता है ऐसे व्यक्ति की देखभाल वे स्वयं करते हैं –

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ अध्याय ९,श्लोक २२

जो अनन्य प्रेमी भक्त जन मुझ परमेश्वर का निरन्तर चिन्तन करते हुए निष्काम भाव से भजते है, उन नित्य निरन्तर मेरा चिन्तन करने वाले पुरूषों का योग क्षेम मैं स्वयं करता हूँ। वास्तव में यह एक प्रकार की ब्राह्मी स्थिति है जिसे पा कर मनुष्य मोक्ष को प्राप्त करता है। अतः जहां श्री कृष्ण स्वयं ही गुरु रूप में स्थित हो अर्जुन के माध्यम से मानव मात्र को वास्तविक धर्म के विषय में बताते है वहां भोग एवं मोक्ष स्वतः ही सिद्ध होते हैं

यत्र योगेश्वरः कृष्णो तत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्री र्विजयो भूर्तिध्रुवा नीतिर्ममतिर मम ।। अध्याय १८ श्लोक ७८

अर्थात जहां योगेश्वर कृष्ण एवं अर्जुन जैसे धर्नुधर विद्यमान होते हैं केवल वहीं श्री एवं विजय प्रतिष्ठित होते हैं ऐसी मेरी नीति (मानना) है एवं धर्म का वास्तविक रूप यही है कि मनुष्य स्थितप्रज्ञ बनने का प्रयास करे।

सनातन संस्कृति श्रेष्ठतम संस्कृति एक अनुशीलन

डॉ. मोनिका शर्मा
सहायक प्रोफेसर
जी.जी.डी.एस.डी कॉलेज
हरियाना (होशियारपुर)।

श्रूयतां धर्म सर्वस्व श्रुत्वा चैव अनुवर्त्यताम्
आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत्॥

अगर भारत के संदर्भ की बात की जाए तो भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है। संस्कृति किसी समाज एवं राष्ट्र में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन एवं महान् संस्कृति है। पं. मदनमोहन मालवीय भारतीय संस्कृति के संदर्भ में लिखते हैं कि – "भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् वसुधैव कुटुंबकम की पवित्र भावना में निहित है।"

सनातन संस्कृति शब्द सनातन + संस्कृति दो शब्दों के मेल से बना है। सनातन धर्म की व्युत्पत्ति शब्द 'सना' से 'ट्यु' प्रत्यय के योग एवं 'तुट्' के आगम से हुई है। इस प्रकार सनातन का अर्थ है- परम्परानिष्ठ अर्थात हमेशा बना रहने वाला। जिसका न आदि है, न अन्त। सनातन धर्म मूलतः भारतीय धर्म है जो हिंदू धर्म के वैकल्पिक नाम से भी जाना जाता है। जबकि संस्कृति के शाब्दिक अर्थ की बात की जाए तो यह सम उपसर्ग पूर्वक 'कृञ्' धातु से क्तिन प्रत्यय लगने पर बना है। संस्कृति किसी समाज एवं राष्ट्र में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है। यह किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति, समुदाय के समस्त संस्कारों का बोध होता है।

'ऊँ' शब्द को सनातन धर्म के प्रत्येक मंत्र के साथ-साथ सनातन परम्परा का सबसे पवित्र शब्द माना जाता है। ऋग्वेद के अनुसार-

"यह पथ सनातन है। समस्त देवता और मनुष्य इसी मार्ग से पैदा हुए हैं तथा प्रगति की है......।"

संस्कृति संस्कारों के पुंज से बनती है। इसलिए सनातन संस्कृति में सस्कारों की अत्यधिक महत्ता है। संस्कार शब्द का मूल अर्थ है-शुद्धीकरण। प्राचीन काल में प्रत्येक कार्य संस्कार से प्रारम्भ होता था। इन संस्कारों की संख्या चालीस के लगभग थी। किन्तु जैसे-जैसे समय अपना स्वरूप बदलता गया वैसे संस्कार भी धीरे-धीरे विलुप्त होते गये। हमारे धर्मशास्त्रों में मुख्य रूप से सोलह संस्कारों की व्याख्या की गई है। प्रचलित संस्कारों के क्रम में गर्भाधान, पुसंवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह तथा अन्तृयेष्टि ही मान्य है।

संस्कारों हि नाम संस्कार्यस्य गुणाधानेन वा स्याद्योषाण नयनने वा॥

–ब्रहसूत्र भाष्य

अर्थात् व्यक्ति में गुणों का आरोपण करने के लिए जो कर्म किया जाता है, उसे संस्कार कहा जाता है।

यह संस्कार किसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से उसे शरीर, मन एवं मस्तिष्क को पवित्र करने के लिए किए जाते थे। प्राचीन भारत में संस्कारों का मनुष्य के जीवन में विशेष महत्व था। संस्कारों के द्वारा मनुष्य अपनी सहज प्रवृत्तियों का पूर्ण विकास करके अपना एवं समाज दोनों का कल्याण करता था। ये संस्कार इस जीवन में ही मनुष्य को पवित्र नहीं करते बल्कि उसे पारलौकिक जीवन को भी पवित्र बनाते थे।

भारतीय संस्कृति व्यक्ति की सर्वपक्षीय उन्नति करती है। षोड्श संस्कार व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार से स्वस्थ रखते है। पुरुषार्थ चतुष्टय और आश्रम चतुष्टय सिद्धांत भौतिक के साथ-साथ आध्यात्मिक उन्नति करता है। इसके अतिरिक्त वर्ण चतुष्टय् का सिद्धान्त कार्यकुशलता के साथ जुड़ा होने के कारण न केवल व्यक्ति की अपितु समाज और राष्ट्र की उन्नति में सहायक है।

अयं निज: परोवैति गणना लघु चेतसाम्।

उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

भारत वर्ष पाश्चात्य् संस्कृति के प्रभावस्वरूप भौतिक उन्नति एवं पूंजीवाद की ओर आकृष्ठ है। त्याग और तप तथा धैर्य को त्याग राजनैतिक और आर्थिक महत्वकाक्षांओं में युवा वर्ग उलझ रहा है। आतंकवाद, पर्यायवरण असन्तुलन, बेरोजगारी तथा वैश्विक अशांति विकराल रूप धारण करती जा रही है। केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व स्तर पर भी भारतीय संस्कृति में इन सभी समस्याओं का समाधान है। संस्कृत साहित्य और धर्म गन्थों से पुन: भारतीय संस्कृति को अपनाकर हम उन्नत हो सकते हैं। केवल भारतीय संस्कृति मानव को असत्य से सत्य एवं अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमरता की ओर जाने हेतु प्रेरित करती है।

अवनतिं हि गता पुररून्नतिं, समयचक्रवेगात् परिवर्तिता।
विविध रूप धरा भव शिक्षिका, सम्भवन्मम् भारत संस्कृति॥
धृति पवित्र विचार विभूषिता, सकल विश्वहिते सततं रता।
विमलशील दयार्जव पालिका, भारत देश विरोध सुसंस्कृति॥

भक्त शिरोमणि केवट
(रामचरित मानस के सन्दर्भ में)

डॉ. कामदेव झा
प्राचार्य, डी.ए.वी. कॉलेज
पिहोवा (कुरुक्षेत्र)

रामचरित मानस के प्रत्येक पात्र त्रिलोक में अपूर्व एवं विलक्षण हैं। भक्त शिरोमणि केवट भी उनमें अद्वितीय एवं विलक्षण गुणों से सुशोभित होते हैं। संसार में ऐसा कौन सा प्राणी है जो श्री राम का सानिध्य पाना नहीं चाहता हो। जिसके लिये कोटि यत्न कर मुनिगण उस परमतत्त्व का दर्शन हेतु तरसते रहते हैं और प्राप्त नहीं कर पाते हैं। उसी परात्पर ब्रह्म का न केवल सानिध्य प्राप्त किया अपितु श्री राम के चरणारविन्द का चरणोदक-पान किया। ऐसा परम सौभाग्यशाली मानस का पात्र केवट में साक्षात् मोक्षस्वरूप ब्रह्म का दर्शन किया। जिसके लिये अनेक जन्म लेकर भी मुनि जन अन्तकाल में राम-शब्द का उच्चारण अथवा स्मरण तक भी नहीं कर पाते। जिस राम के बल पर सदाशिव काशी में सबको समान अविनाशी गति प्रदान करते हैं। ऐसा सौभाग्य किसी किसी को प्राप्त होता है। मानस में बालि को आत्मज्ञान होने पर अनुभव हुआ कि राम तो परात्पर ब्रह्म हैं। तब तुलसी का बालि अपने मुख से राम से कहा कि-

जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं॥
जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अबिनासी॥

इस प्रकार स्वतः सिद्ध होता है कि केवट का भाग्य कितना बड़ा था जो नेत्रों के समीप खड़े हैं, ऐसे ब्रह्म रूप का दर्शन बहुत कम को मिल पाता है। इसी भाव को तुलसी ने स्पष्ट किया है और कहा है कि -

मम लोचन गोचर सोइ आवा। बहुरि कि प्रभु अस बनिहि बनावा।

ऐसे समय में कौन मूर्ख होगा जो कल्पवृक्ष को काटकर बबूल का वृक्ष लगाएगा। इसी भाव को तुलसी के मानस में स्पष्ट कहा गया है कि-

अस कवन सठ हठि काटि सुरतरु बारि करिहि बबूर ही।

उपर्युक्त मानस के उद्धरण से सिद्ध होता है कि राम के दर्शन की महत्ता क्या है। इसी तरह तुलसी के भक्तराज केवट हैं। जिन्हें राम का सानिध्य प्राप्त हुआ। तुलसी के केवट मानस में एक भक्त शिरोमणि के रूप में स्थापित हुये हैं। तुलसी ने उन्हें एक निकटतम भक्त के रूप में विश्व में विख्यात किया है। केवट के विषय में पौराणिक सन्दर्भ का सहारा लेकर सन्त जन कहते है कि केवट पूर्व जन्म में राजा थे। उन्हें ऋषि का शाप मिला और वे कछुआ बन गये। ऋषि ने उन्हें कहा कि तुम प्रभु श्री हरि विष्णु का पाद स्पर्श करोगे, तब शाप का अन्त होगा। तब से वे क्षीर सागर में कई वर्षों तक श्री हरि का चरण स्पर्श का असफल प्रयत्न करता रहा। एक बार वे विष्णु के जल विहार के समय पाद स्पर्श करना चाहा किन्तु लक्ष्मी को यह अच्छा नहीं लगा। इसके कारण शेषनाग ने उन्हें ऐसा नहीं करने दिया। इस कारण इस जन्म में वें केवट बनकर आए। इसी कारण राम के द्वारा नाव माँगने पर तरह तरह का बहाना बनाकर श्री राम का

चरण स्पर्श का अवसर ढूढ़ रहा है। जब राम नाव माँग रहे हैं तो केवट ने कहा कि हे राम! मैं आप के असली मर्म को जानता हूँ। लोगों का कथन है कि तुम्हारे चरण-रज में कोई मनुष्य बना देने वाली जड़ी है। इसलिये मैं अपनी नाव पर चढ़ने से पूर्व चरण धोकर देखूँगा। मै यह देखूँगा कि सच में कोई रहस्य है। जैसा कि तुलसीदास ने अपनी अमरकृति में लिखा है-

मागी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना॥
चरण कमल रज कहुँ सबु कहई। मानुष करनि मरि कछु अहई।

केवट ने कहा मैं तो आपके चरण रज का भेद जान गया हूँ। इसी कारण आपके छूते ही पत्थर नारी बन गयी थी। मेरी नाव तो लकड़ी की है। कहीं यह नाव मुनि की स्त्री बन गयी तो मै लुट जाऊँगा। इसलिये हे राम! मैं बिना चरण धोये नहीं चढ़ने दूँगा। उन्होंने राम को साफ-साफ मना कर दिया। जैसे कि कहा है

छुअत सिला भइनारि सुहाई। पाहन ते न काठ कठिनाई।
तरनिउ मुनि धरिनी होई जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई॥

केवट का अपना तर्क अपनी जगह सही था कि मेरी नाव तो काठ की बनी है। जब पत्थर मुनि स्त्री अहल्या बन गयी थी तो मेरी नाव तो लकड़ी की हैं पत्थर से कोमल है। इसका भय उसे सता रहा है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर दूँ कि वाल्मीकिरामायण में अहल्या को पत्थर बनने की बात नहीं कही गयी है अपितु उन्हें दुर्निरीदया हो जाने की बात कही गयी है। जो कठिन प्रयत्न से भी अदृश्या हो गयी थी। भस्म में सोती रही।

वाल्मीकि ने अहल्या माता को भस्मशायिनी रूप से पति द्वारा शापित वर्णित किया है। इसी कारण मानस में तुलसी ने भस्म से लथपथ स्थिति को पत्थर के रूप में वर्णन किया होगा। यह भी सत्य है कि तीनों लोगों में किसी भी प्राणी के द्वारा दर्शन करना कठिन था। राम के दर्शन से पूर्व माता अहल्या अदृश्या रूप में हवा खाकर निराहार रहती हुई तप में लीन रही। एक और भी प्रसंग तुलसी कृत रामायण से भिन्न है कि वाल्मीकि रामायण में राम एवं लक्ष्मण दोनों ने अहल्या माता का चरण-स्पर्श किया जबकि मानस में अहल्या माता ने भी राम का चरण स्पर्श किया। भक्त शिरोमणि केवट मानस के उद्धरण की ओर संकेत करता हुआ राम से बता रहा है। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि केवट कितना ज्ञानी एवं शास्त्रमर्मज्ञ थे। जो साक्षात् ब्रह्मस्वरूप राम से अपनी शर्ते मनवा रहा हैं। उन्होंने श्री राम से कहा कि हे राम! मैं तो इस नाव से परिवार का भरण पोषण करा रहा हूँ। कहीं यह नारी बन गयी तो मेरे परिवार की रोजी रोटी चली जाएगी। यदि पार उतरना है तो चरण पखारने दो। जैसे कि कहा भी है-

जों प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहिपद पदुम परवारन कहहू।

भक्त शिरोमणि केवट की वाणी सुनकर स्पष्ट झलक मिलती है कि केवट दृढ़संकल्पी एवं भयमुक्त भक्त के रूप में रामायण के यशस्वी पात्र हैं। एक भक्त की जो भक्ति की पराकाष्ठा होती है, वह पूर्ण रूप से इसमें झलक मिलती है। सन्तों के प्रवचन में जो बात कही गयी है कि क्षीरसागर में कछुआ बनकर पूर्व जन्म में जो कष्ट पाद-स्पर्श में सहा, उन सबका हिसाब किताब केवट राम और भैया लखनलाल से चुकता कर रहे हैं। अपने सिद्धान्त पर अडे हैं। उन्होंने स्पष्ट घोषणा कर दी कि मैं नाव पार कराने की कीमत भी नहीं लूँगा। चाहे लक्ष्मण हमें बाण से मार दे फिर भी बिना पाद-परवारे नहीं चढ़ने दूँगा। जैसा कि मानस में कहा गया है-

पदकमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दशरथ सपथ सब साची कहौं॥
बरु तीर मार हुँ लखनु पै जब लगि न पाय परवारि हौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारि हौं॥

तुलसी का केवट न केवल ज्ञानी हैं अपितु निर्लोभ एवं ऐहिक कामना से रहित प्रतीत होते हैं। वे त्रिलोकज्ञ को सही-सही पहचान रहे हैं। केवट की निश्छल और निष्कपट वाणी को सुनकर करुणानिधान श्री राम सीता और लक्ष्मण की ओर देखकर हँसे। जैसा कि तुलसी ने कहा है-

मुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे।
बिहसे करुणा ऐन चितइ जान की लखन तन॥

केवट के मन के भाव को समझकर करुणानिधान राम ने मन्द मुस्कान के साथ कहा कि वही करो जिससे नाव तुम्हारी बँच जाय। तुम शीघ्र चरण परवार लो और मुझे पार लगा दो। आश्चर्य की बात तो यह है कि जो संसार को भवसागर से पार कराते हैं, वही एक साधारण से भक्त नाविक केवट को नदी पार कराने के लिये निवेदन कर रहे हैं। जैसा कि राम के द्वारा तुलसी ने मानस में कहलवाया है-

कृपा सिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करु जेहि तब नाव न जाई।
बेगि आनु जल पाव पखारू होत बिलंबु उतारहि पाख॥

जिनके एक इशारे पर काल अपनी गति रोक लेता हो, वही राम आज केवट से कह रहे हैं कि मुझे देर न हो जाए। इसलिए शीघ्र पार करा दो। इससे ऐसा लगता है कि भक्त के वश में भगवान हैं। महर्षि बिन्दु ने सही कहा है कि
-

प्रबल प्रेम के पाले पड़कर प्रभु को नियम बदलते देखा।
प्रभु का मान भले टल जाए भक्त का मान न टलते देखा॥

संसार-सागर से पार लगाने वाले किस प्रकार एक केवट से निहोरा कर रहे हैं कि पार लगा दो। तुलसी का चमत्कार तो देखिए कि संसार को भवसागर से पार लगाने वाले कैसे निहोरा करते है-

जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।
सोई कृपालु केवट निहोरा। जेहिं जगु किस तिहु पगहु ते थोरा॥

प्रभु श्री राम की माया से स्वयं भगवती गंगा भी विस्मित हो गयी कि केवट से निहोरा करने वाले मेरे प्रभु राम हैं? जब उनका पद-नख स्पर्श किया तब लगा कि अरे यह तो विष्णु के अवतार राम है। गंगा को विष्णुपदा कहते हैं क्योंकि वे विष्णु के चरणों से निकली हैं। जैसा मानस में कहा है-

पद नख निरखि देवसरि हरषी। सुनि प्रभु वचन मोहँ मति करषी।
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेइ आवा॥

असल में मायापति राम की माया को कौन समझ सका है ? जब शंकर स्वयं मायापति से प्रभावित हो जाते हैं तो भला अन्य का क्या कहना। केवट संसार का भिन्न प्राणी था। जो कृपानिधान की कृपा से ओतप्रोत था। केवट द्वारा चरण पखारे जाने से देवगण भी ललचा रहे हैं और फूलों की वृष्टि कर रहे हैं–

अति आनन्द उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।

बरसि सुमन सुर सकल सिहाही। एहि सम पुन्यपुंज कोउ नाहीं॥

केवट जैसा पुण्यशाली विश्व के लिये अनुकरणीय हैं। भक्त का संसार ही कुछ भिन्न और विलक्षण होता है। भक्ति से मनुष्य मानव से अतिमानव बन जाता है। भक्तशिरोमणि केवट उनमें से एक हैं। केवट राम के परमप्रिय बन गये। भक्ति की शक्ति त्रिलोक में प्रसिद्ध है।

भक्ति के ऐसे ही भाव को देखकर तुलसी दल काव्य के प्रणेता मैथिली वल्लभ शरण परिमल ने लिखा है कि भक्ति के कारण प्रहलाद की रक्षा हेतु प्रभु नरसिंह बनकर खम्भे से प्रकट हुये। यह सब भक्ति का ही प्रतिफल है। इसलिये भगवान् की भक्ति में शक्ति निहित है। जैसा कि तुलसीदास (भाव काव्य) में कवि ने लिखा है–

भाव की प्रबलता में ही कोई प्रहलाद् एक खम्भ से प्रकट कर लेता भगवान है।

तुलसीदल के कवि परिमल ने सच ही कहा है कि भाव का सम्बन्ध ही भक्ति का पर्याय है। यह भक्ति ऐहिक और पारलौकिक मार्ग का सम्बल भी बनती है। इसलिए भक्त के वश में भगवान हाते है। जैसा कि उन्होंने कहा है–

भाव का सम्बन्ध ही तो भक्ति का पर्याय और लोक परलोक दोनों राह का सम्बल है।

केवट की भक्ति महिमा भी अपार है जिसने देवताओं को भी ललचाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने समस्त परिवार को भी श्री राम का चरणामृत पिलाया एवं स्वयं भी पानकर समस्त कल्मष को धो डाला। ऐसे हैं भगवान् श्री रामचन्द्र का कृपा सागर। जिसमें डुबकी लगाकर लोग तर जाते हैं। तो भला भक्त शिरोमणि केवट कैसे वंचित होते। वे कुटुम्ब सहित इस भव–सागर से पार हो गये। उन्होंने अपने पितरों को भी भव–सागर से पार करा दिया। जैसा कि तुलसी ने लिखा है–

पद परवारि जलुपान करि अपि सहित परिवार।

पितर पारु करि प्रभुहि पुनि सुदित गयउ लेइ पार॥

रामायण का पात्र केवट सच में भक्त शिरोमणि हैं। वे अपनी अटूट भक्ति से पितर सहित भव–सागर से पार करा दिया । ऐसी भक्ति को कोटिशः नमन है। निषादराज गुह, लक्ष्मण जी सहित सीता जी एवं श्री रामचन्द्र नाव से उतर कर गंगा की रेत में खड़े हो गये। इसके बाद केवट ने उतरकर दण्डवत् प्रणाम किया। प्रभु श्री राम चन्द्र जी थोड़ा सकुचा गये कि केवट को कुछ दिया नहीं। इसलिए संकोच जैसी उन्हें अनुभूति हुई । श्री राम को तो गंगा पार करवाया। किन्तु उसके स्थान पर केवट ने सर्वस्व प्राप्त कर लिया। अटूट भक्ति के बल पर केवट ने उस अलौकिक और सन्तों के लियें भी दुष्प्राप्य गति की प्राप्ति की। जिसके लिये देवगण भी सतत् लालायित है इसके बावजूद भी श्री राम संकोच का अनुभव कर रहे हैं। जैसा कि तुलसी ने कहा है–

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता। सीय रामु गुह लखन समेता।
केवट उतरि दण्डवत कीन्हा। प्रभुहि सकुच ए हि नहिं कछु दीन्हा॥

मानस का केवट एक असाधारण भक्त थे। उनको इस रहस्य का ज्ञान भक्ति से प्राप्त था। इसी भक्ति के बल पर उन्हें ज्ञात था कि प्रभु राम विष्णु के अवतार हैं। उन्होंने मनुज रूप धारण कर लोककल्याण हेतु अवतरित हैं। उन्होंने मनुज रूप धारण कर लोककल्याण हेतु अवतरित हुये। इसलिये लौकिक धन के प्रति नैराश्य भाव उनमें व्याप्त था। उन्हें तो अनमोल रत्न प्राप्त हो गया था। उन्हें कठोपनिषद् के नचिकेता की तरह लौकिक पदार्थों से विरक्ति एवं परमात्मा प्राप्ति की लालसा प्रबल थी। जिसनें नचिकेता ने यम से कहा था–

कि न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः अर्थात् हे यमराज! यह वित्त (धन) मुझे तृप्त नहीं कर सकता। अतः प्रेयस् पदार्थ को त्यागकर श्रेयस्कर पदार्थ के प्रति अनुराग रखा। उसी प्रकार राम–भक्त केवट की समस्त सांसारिक प्रलोभन से भरी वस्तुओं के प्रतिमोह भंग हो चुका था। असल में जब भक्ति यौवन में उतरती है तो सांसारिक बन्धन स्वतः छिन्न–भिन्न हो जाता है। जैसा कि मुण्डोपनिषद् में भी स्पष्ट कहा गया है। कि उस परात्पर ब्रह्म का दर्शन होते ही समस्त हदय की ग्रन्थियाँ टूट जाती हैं। लौकिक आकर्षण भी नष्ट हो जाते हैं। इस मानस का यह अद्भुत पात्र केवट समस्त वेदोनिषद् के ज्ञाता प्रतीत होते हैं। शायद यही कारण है कि राम से उतराई नहीं ली। जब आये सन्तोष धन सब धन धूरि समान। सन्तोष संसार का परम सुख है। जिसको स्वाद लग गया, वही संसार का अमर व्यक्ति है। जानकी तो श्री राम की भार्या ही थी। तो भला वह कैसे अपने पति के संकोच–भाव को समझ नहीं सकता थी। अपने श्री श्राम के संकोच को भाँपकर अपनी रत्न जटित अंगूठी उतारी। श्री राम ने केवट से कहा कि तुम उतराई ले लो। भक्त शिरोमणि केवट ने प्रभु के चरणों को व्याकुल होकर पकड़ लिये। उन्होंने प्रेम–सागर में डूबकर कहा कि हे प्रभु! यह क्या कर रहे हैं? धन से निस्पृह जीवन वाले भक्त शिरोमणि केवट की व्याकुलता का वर्णन करते हुए मानस में कहा गया। कि केवट परम संतुष्ट व्यक्ति थे। उनके मनोवाञ्छित भक्ति–फल मिल चुके थे। जिसे पाने के लिऐ मुनि जन जन्म–जन्म तप करके भी प्राप्त नहीं कर पाते। उन्हें साक्षात् ब्रह्म रूप राम का दर्शन हो चुका था। चरणोदक–पान कर तृप्त हो चुके थे। जैसा कि कहा गया है–

पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनिमुन्दसरी मन मुदित उतारी।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे अकुलाई॥

भक्त शिरोमणि केवट की सन्तुष्टि त्रिलोक को मोहित करने वाली है। इसे देखकर देवगण भी चकित हैं। जिसे कोटि जन्म तप करके भी नेति नेति कहते हुये मुनिजन देखे जाते हैं। उन्हीं परात्पर ब्रह्म रूप की छवि पाने की बात तो दूर रही। उन्हें माता सीता एवं राम का युगल स्नेह मिला। इससे अनमोल रत्न भला संसार में है क्या? ऐसे हैं भक्त राज केवट का सौभाग्य। केवट कहते हैं कि हे प्रभो! आज मैंने क्या नहीं पाया? मेरे समस्त दोष, दुःख एवं दरिद्रता अग्नि में जल गयी है। मैंने बहुत समय तक मजदूरी की। आज विधाता ने बहुत अच्छी और भरपूर मजदूरी दे दी। हे नाथ! आज मैं सब कुछ पा लिया। सन्त परम्परा में कहा जाता है कि "हम नदी नाल के खेबैया तुम भव सागर के खेबैया। मैं तो अपनी नाव से छोटी–छोटी नदियों से पार लगाता हूँ। हे नाथ! तुम तो भव–सागर से पार लगा देते है। आज मैं तुम्हें पार लगाता हूँ एवं उस गोलोक की नदी से तुम पार लगा देना। दोनों हम लोग एक ही राह के राही हैं। अतः

आज आपको मैं पार लगाता हूँ एवं भव-सागर से तुम मुझे उद्धार कर देना। वही भाव तुलसीदास ने अपने अनमोल पात्र केवट से कहला रहे हैं-

नाथ आजु मैं काह न पावा। मिटे दोष दुख दारिद दावा।
बहुत काल मैं कीन्हि मजूरी। आजु दीन्ह बिधि बनि भलि भूरी॥

उपर्युक्त वचनामृत को सुनकर केवट के वैदुष्य का अनुमान लगाया जा सकता है। ऐसे संतोषी, ज्ञानी केवट का चरित्र संसार के लिये सर्वथा न केवल अनुकरणीय रहतें हैं। अपितु पूज्य भी है मानस में तुलसी ने केवट के चरित्र को गढ़नें में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी है। जो सत्य और निश्छल भक्ति से परिपूर्ण हैं। लोभ और अंहकार का लेश मात्र भी दर्शन नहीं है। हो भी भला कैसे। साक्षात् ब्रह्म रूप राम का दर्शन जो हो रहा है। ऐसे त्रिभुवनपति श्री राम उन्हें कोई सहाज ही नहीं मिले अपितु पूर्व जन्म की तपस्या का प्रतिफल है। तप: पूत भक्त शिरोमणि केवट का भाग्य अनुपम ही है। इन्हीं के भाग्य की खिड़कियों से संसार को श्री राम सीता का दर्शन हुआ। राम के संग लक्ष्मीरूपा सीता एवं शेषावतार लखनलाल की एक झलक भी मिली। तुलसी ने इन तीनों को ब्रह्म, माया एवं जीव रूप में दर्शन किया है। राम ब्रह्म, सीता माया एवं लक्ष्मण जीव हैं। ऐसे तीनों रूपों का दर्शन पाकर केवट ने अपना जीवन तो धन्य किया ही, साथ-साथ अपने पितरों का भी उद्धार करा लिया। भक्त की भाषा भी निराली होती है। कहते हैं कि हे नाथ! अब मुझे कुछ नहीं चाहिए। प्राप्त करने योग्य जो कुछ भी था, प्राप्त कर लिया। अब तो यही चाह है कि आप हम पर सदा अनुग्रह बनाये रखिए। आपके कृपाजल की वृष्टि सदा पड़ती रहे। आप लौटते समय जो कुछ भी मजूरी देंगे वह मैं सघर्ष स्वीकार कर लूँगा। आप का कृपा-प्रसाद सदा प्राप्त होता रहे यही मेरी कामना है। जैसा कि कहा है-

अब कछुनाथ न चाहिअ मोरें। दीनदयाल अनुग्रह तोरें॥
फिरती बार मोहि जो देबा। सो प्रसादु मैं सिर धरि लेबा॥

भक्त शिरोमणि केवट बहुत ही खुबसूरती से प्रभु राम को मना लेने में सफल हो गये। उन्होंने रामभद्र से बिना कुछ लिये सब कुछ पा लिया। यही इस भक्त की भक्ति का वैशिष्टय है। श्री राम की भक्ति में जो रस मिला वह त्रिलोक में भी सर्वथा दुर्लभ है। ऐसी भक्ति केवट ने की वे त्रिलोक में प्रसिद्ध हो गये। केवट को नवधा भक्ति का ज्ञान भी नहीं था, फिर भी वे निश्छल भक्ति से समस्त नवधा-भक्ति को अपने अधीन कर सर्वस्व प्राप्त कर दिया। उनके तप ने प्रभु को भी वशीभूत कर लिया। यही एक सच्चे भक्त की पहचान है। उनमें ज्ञान वैराग्य सब समाहित हो गये थे। कोटि प्रयत्न करने पर राम भक्त केवट ने कुछ भी नहीं लिया। उसे तो जो प्राप्त करना था, कर चुका था। आश्चर्य तो यह है कि मानस के केवट को मजूरी लेने के लिये श्री राम, जानकी एवं शेषावतार लक्ष्मण ने भी आग्रह किया, किन्तु केवट अपनी प्रतीज्ञा से टस से मस नहीं हुआ। शेषावातार लक्ष्मण जैसे सहज क्रोधी भी केवट की भक्ति के समक्ष प्रशान्त महासागर की तरह बने रहे। उन्हें भी आभास हो चला था कि श्री राम शान्त बैठकर उसकी बातें सुन रहे हैं। इस बात का घोतक है कि निश्छल भक्ति के समझ बड़ी से बडी शक्ति भी शान्त हो जाती है। ऐसे थे कवट। इन तीनों के महान् आग्रह करने पर भी साफ-साफ मना कर दिया। शायद श्री राम उनकी तपस्या की परीक्षा ले रहे थे। अन्त में केवट की निश्छल भक्ति को देखकर प्रभु श्री राम ने भक्त शिरोमणि केवट को निर्मल-भक्ति प्रदान कर केवट को विश्व प्रसिद्ध कर दिया। विमल-भक्ति का वरदान प्राप्त करना कोई आम व्यक्ति का कार्य नहीं है। उनके अनन्त

काल तक भक्ति का परिणाम यह विमल भक्ति है। केवट के इस दृश्य पर समस्त देवगण की दृष्टि टिकी हुई थी। उनसे सबको सुखद ईर्ष्या मानो हो रही हो। सच में अद्भुत है केवट की भक्ति प्रसंग। जैसा कि मानस में विमल-भक्ति का प्रसंग है-

बहुत कीन्ह प्रभु लखन सियँ नहि कछु केवट लेइ।
बिदा कीन्ह करुनायतन भगति बिमल वरु देइ॥

संसार में ऐसी निर्मल भक्ति प्रभु से मिलना एक अद्भुत एवं त्रिलोक को लालायित करने जैसा अनमोल प्रसंग है। इस भक्ति के समझ त्रिलोक का वैभव भी तुच्छ है। निश्चय ही भक्तराज केवट रामचरित मानस का अनमोल पात्र है। जिनके चरित्र के श्रवण मात्र से ही समस्त कल्मष नष्ट हो जाते है इति नष्ट है ।

सन्दर्भ सूची

1. श्री रामचरितमानस, किष्किन्धा काण्ड 9.2
2. वही 9.2.3
3. वही छन्द
4. रामचरितमानस, 2.99.2
5. वही 2.99.3
6. वाल्मीकिरामायण, 1.48.30
7. वही 1.49.16
8. वही 1.49.17
9. मानस, 2.99.4
10. वही 2. छन्द
11. वही 2.100
12. वही 2.100.1
13. वही 2.100.2
14 वही 2.100.3
15. वही 2.100.4
16. तुलसीदल (भावकाव्य) 45 (पृ.स. 45)
17. वही 44 पृ.सं. 43
18. मानस 2.101
19. वही 2.101.1
20. कठोपनिषद, 1.1.27
21. मुण्डकोपनिषद्, 2.2.8
22. मानस 2.101.2
23. वही 2.101.3
24. वही 2.101.4
25. वही 2.102

आचार्य शंकर की पुण्य जन्मतिथि के उपलक्ष्य में आयोजित सेमिनार में प्रस्तुत केन्द्रीय संकेत

॥ आचार्यशंकर : सनातनधर्म एवम् आधुनिक सन्दर्भ ॥

डॉ. रमाकान्त आंगिरस
पूर्व विभागाध्यक्ष, कालीदास पीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शंकरं लोकशंकरम्॥

भारतीय इतिहास के रंगमंच पर आचार्य शंकर का जब अवतरण हुआ तब भी सांस्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों का चक्र- जाल भारत के राष्ट्रीय मानस को बुरी तरह उलझाए हुए था। जहां एक ओर राष्ट्र के राजनीतिक आकाश में छोटे छोटे खण्ड राज्यों के धूमकेतु उदित हो रहे थे वहीं सांस्कृतिक और धार्मिक क्षितिज पर दूर दूर तक फैले श्रमण-संस्कृति या बौद्ध धर्म के इतिहास की मार से टूटते हुए धर्मचक्र के खण्डहर, इधर उधर फैले हुए थे। वे उस समय मानवीय प्राण चेतना की गति को प्रेरणा कम दे रहे थे और गतिरोध अधिक पैदा कर रहे थे। वैदिक दर्शन-प्रणालियां अपने अपने संप्रदाय के अनुसार संघर्षरत थीं। तर्कशील विचारक बौद्धों के युक्ति-प्रहारों से ईश्वर की रक्षा करने में व्यस्त थे। मीमांसक कुमारिल और प्रभाकर जैसे विद्वान शून्यवाद और निर्वाण के नैष्कर्म्य या निकम्मेपन की बाढ़ को रोकने के लिए ईश्वरवाद की उपेक्षा करके भी कर्म मीमांसा का बांध लगाने में व्यस्त थे। सांप्रदायिकता सिद्ध, नाथ, कापालिक, गुह्यतन्त्रवाद आदि के अनेक चेहरे लगाकर घर घर में घूम रही थी जिसमें आध्यात्मिकता नाममात्र की थी केवल रहस्यपूर्ण चमत्कारवाद को एक बहुत बड़ी उपलब्धि के रूप में स्थापित कर रही थी। एक ऐसे सन्तमत का उदय भी हो रहा था जो अपनी साधना से प्राप्त अनुभव को , श्रुति और स्मृति से नितान्त अपरिचित होते हुए भी, अपढ़ होते हुए भी, खण्डन करते समय, श्रुति-स्मृति की परम्परा की पूरी जानकारी रखने का दावा कर रहा था। यह सब आज भी वैसे ही हो रहा है। पूर्वाग्रहों एवम् अपनी पूर्व-धारणाओं से ग्रस्त पाश्चात्य विद्वानों के वेदों और शास्त्रों के कई भ्रान्त अनुवादों के आधार पर वैदिक परम्पराओं का इतिहास आज भी रचा जा रहा है। ऊपर से दम्भ यह किया जा रहा है कि हम सब कुछ जानने बूझने के बाद ही कह रहे हैं, लिख रहे हैं। ऐसे लगता है जैसे तत्कालीन सारा समाज ही एक जादुई माया या अविद्या के घेरे में पस्त हो गया था। सांस्कृतिक एकता मुर्झाई सी दशा में एक ऐसे नेतृत्व को तलाश रही थी जो कहीं से आकर लोकजीवन के स्वार्थ को, अनित्यता से जुड़ी इच्छाओं या एषणाओं को परमार्थ की आधारशिला पर नित्यता के साथ जोड़ दे। प्रतिभासिक या सांवृतिक अथवा जगत् की अनित्यता और शून्याद्वय के परमार्थ के बीच जो रिक्तता (या शून्यता) बौद्धों की चिन्तन प्रणालियों ने खड़ी कर दी थी वह राष्ट्र को नंपुसकत्व एवम् निर्वीर्य आध्यामिकता की शान्ति और धार्मिकता की ओर तो ले जा सकती थी पर एक सबल एवम् अग्रगामी राष्ट्रीयता को जन्म देना उसके बस में नहीं था। विश्व मानवता एवम् मानवीय क्षुद्रता के बीच जो स्तम्भ होने चाहिए थे, जो कड़ियां होनी चाहिए थीं, वे तत्कालीन सामान्य समाज के पास नहीं थीं। फलतः विदेशी आक्रान्ता यूची, हूण, शक जातियों के बर्बर आक्रमणों के आगे भारतीय शून्यवादी आध्यात्मिकता को बार बार पदालित होना पड़ा।

इतिहास के इस कठिन मोड़ पर आचार्य शंकर का अवतरण भारतीय मानस के लिए एक नया दिशाबोध था। उन्होंने परम्परा और अपने समकालीन परिवेश का मन्थन कर परमार्थ सत्ता के परमाकाश और प्रातिभासिक सत्ता का एक स्तम्भ खड़ा कर दिया जिस ने शून्यता और धरती के अन्तराकाश को पूर्णता से भर दिया। इस युग की यह बहुत बड़ी उपलब्धि थी कि इस देश के चिन्तक जो केवल द्वैत की भाषा में ही सोचते थे ऋत और अनृत, नित्य और अनित्य, सच और झूठ, शून्य और अशून्य के द्वन्द्व की भाषा ही बोलते थे उन्हें आचार्य शंकर ने उपनिषदों की पूर्णता से परिपूर्ण ब्रह्म या आत्मा के सूत्र को पकड़ा दिया। ब्रह्मसूत्र पर लिखे शारीरक भाष्य या जीवभाष्य की रचना कर के यह समझा दिया कि मानवजीवन का ध्रुव लक्ष्य एक ही है "- जीवन की अनित्यता, संघर्ष एवम् द्वन्द्व के बीच में से गुज़रते हुए अद्वैत की ओर बढ़ जाना।" क्योंकि उस अद्वैत के अनुभव से, जीवन की अखण्डता के अनुभव से ही संघर्षों एवम् द्वन्द्वों में भी एक सार्थक सम्पन्नता का उदय होने लगता है। लीलामय ब्रह्म की लीला की अनेक उन्मुखताओं में भी अखण्डता का रस उमगने लगता है। आचार्य की शिष्य-परम्परा में ही उभरे सर्वज्ञात्ममुनि ने ब्रह्मसूत्र के भाष्यार्थ को समेटते हुए संक्षेपशारीरक में वेदान्त का सारांश प्रकट करते हुए कहा कि अद्वैतदृष्टि का किसी अन्य मत से विरोध बनता ही नहीं। उसमें तो सभी दृष्टियों का स्वतः समन्वय सिद्ध हो जाता है। जितना भी परिणामवाद है सब विवर्तवाद की ही पृष्ठभूमि है। इसीजिए आचार्यश्री ने अपने ब्रह्मवाद को जहां एक ओर टूटी हुई भारतीय दर्शनों की कड़ियों को जोड़ने का समन्वयवादी मार्ग निकाला वहीं अनेक प्रकार की बहिर्मुखी उपासना- पद्धतियों के बिखराव से विशृंखलित समाज को पंचदेवोपासना एवम् षण्मत स्थापना के मार्ग से सूर्य, गणपति, शिव, शक्ति एवम् विष्णु देवताओं का एक ही पंचायतन बनाकर पांचों तत्त्वों को ब्रह्मदेव के ही एक रूप में समन्वित करने की परम्परा डाली। किन्तु उन पांचो देवों के स्वतंत्र रूप पर भी आंच नहीं आने दी।

किन्तु महात्मा बुद्ध के जीवनदर्शन का सन्देश परवर्ती काल में अतिचार की ओर बढ़ता गया। इस बात को एक पूर्वनिश्चित धारणा ही मान लिया गया कि निर्वाण तो प्रव्रज्या या संन्यासमार्ग से ही संभव है। इस बात के सम्मोहन ने बहुत से राग रंजित लोगों को भी वैराग्य- दम्भ का चोला पहना दिया। परिणामतः समाज की क्रियाशील शक्तियों की सहज गति रुक गई। संघ का अर्थ भिक्षु संघ ही होता चला गया जो श्रुति और स्मृति के मूल जीवन-दर्शन के ही प्रतिकूल था। वस्तुतः श्रुति-दर्शन यज्ञकर्म और आत्म-दर्शन के दो बिन्दुओं पर स्थापित था। प्राचीन उपनिषदों में यज्ञकर्म को ही आत्म-दर्शन में परिणत कर दिया जाता था। "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" अर्थात् यज्ञ ही उत्तम कर्म है। इस यज्ञ को ब्रह्मार्पण करने की विधियों का विकास ही उपनिषदों का मन्तव्य था। इसीलिए बृहदारण्यक जैसे उपनिषद् अपने अन्तिम भाग तक में श्रेष्ठ से श्रेष्ठतर सन्तानों की उत्पति के प्रति सतत जागरूक हैं। यज्ञदर्शन के प्रति पर्याप्त रुचि रखते हैं।

इस परम्परा के बढ़ते हुए उच्छेद को देखकर वैदिक दर्शन की लोक में पुन:प्रतिष्ठा का दायित्व, युगधर्मानुकूल लोकजीवन को खड़ा करने का निर्वाह, दौ वैदिक मीमांसाओं ने अपने ऊपर लिया। भगवद्गीता एक ओर यह कह रही थी कि "अर्जुन! यदि मैं ही कर्म करना छोड़ दूं तो ये सारे लोक उजड़ जाएंगे" (उत्सीदेयुरिके लोकाः न कुर्यां कर्म चेदहम्)। दूसरी ओर भगवद्गीता की ज्ञानमीमांसा यह कर रही थी कि इस सृष्टि में ज्ञान से अधिक पवित्र और कुछ है ही नहीं (नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते)।

भारतीय इतिहास के सातवीं आठवीं शताब्दी के इस काल-खण्ड में जहां एक ओर कुमारिल भट्ट जैसे

मनस्वी दार्शनिक ने प्राकृत किया वहां दूसरी ओर श्री गोविन्द भगवत्पाद के शिष्य आचार्यशंकर ने ज्ञान-दर्शन की निधि उत्तरमीमांसा को हाथ में लेकर लोक में ब्रह्मज्ञान की प्रतिष्ठा का व्रत धारण किया। इस विषय में मैं जब लोक में प्रतिष्ठा की बात कहता हूं तो उसका अभिप्राय केवल मठों और मन्दिरों में ब्रह्मज्ञान-प्रतिष्ठा के कार्य तक सीमित नहीं, अपितु उस ज्ञान की प्रतिष्ठा जोगियों, जंगमों, सूफियों कबीर पन्थियों, दादूपन्थियों, रविदासियों के घरों में हुई हैं। यह अलग बात है कि उनके घरों तक इस ज्ञान को पहुंचाने वाले लोग कौन थे ? और उस को पहुंचाने की प्रक्रिया क्या थी ? आचार्य शंकर की शिष्य-परम्परा का दृढ विश्वास है कि "शाक्यमुनि गौतमबुद्ध के तर्कशास्त्र के उद्दण्ड शिष्यरूपी सिंहों के पंजों की चोटों से मूर्च्छित श्रुतिरूपी गाय को अपने पवित्र ज्ञानामृत के अभिषेचन से जिस आचार्य शंकर ने स्वस्थ बना दिया, तथा जो स्वयं शिव होते हुए भी इस पुण्य कार्य के लिए ब्रह्मा आदि प्रमुख देवताओं की प्रार्थना पर कैलास पर्वत से उतरकर श्रीशंकराचार्य का रूप धारण कर इस पुण्यभू पर अवतरित हुए, वे शंकराचार्य इस संसाररूपी जंगल की आग से लोकमात्र की निरन्तर रक्षा करते रहें।"

छन्दोधेनुं यतीन्द्रः प्रकृति

सोऽयंश्रीशंकरार्यो भवदवदहनात् पातुलोकानजस्त्रम्।

अब जरा सनातन धर्म की बात भी समझने का प्रयास होना चाहिए। क्योंकि आचार्य शंकर ने जिस ज्ञानधारा की ओर मुड़ जाने का भारतवासियों अथवा प्राणिमात्र को अपनी तत्त्व विद्या के द्वारा संकेत दिया है वही सनातन है वह आज से पूर्व भी था, आज भी है, आगे भी है। क्योंकि वह "शान्तं शिवमद्वैतं" मानव-कल्पना से प्रसूत काल से अछूता है, अस्पृष्ट है। उस सनातन तत्त्व की ओर उन्मुखता बनाए रखना यही 'धर्म' है जिसको इस देश में पैदा हुए प्रत्येक व्यक्ति को धारण करना होगा। अन्यथा मिथ्या मोह की धारणाओं से चिपका रहने वाला व्यक्ति या समाज सनातनधर्मी कैसे कहलाएगा। मोह नाम है अविद्या का, भ्रम का, अज्ञान का। जो विद्या इस अविद्या को जन्म देती रहे वह स्वयं ही अविद्या है। विद्या तो वह है जो लोक और लोकवासियों को मुक्त करे "विद्या सा या विमुक्तये।" आज की स्वेच्छाचारी सभी विद्याएं ज्योतिष हों, कर्मकाण्ड हों या आधुनिक ज्ञान-विज्ञान, सभी उस सनातन तत्त्व से विमुख हो रहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास जब कहते थे कि "नाते सबै राम के मनियत" तो उसका अभिप्राय इतना ही था कि जो भी विद्याएं सनातन तत्त्व की ओर अभिमुख न हो कर अपने आकर्षण के जाल में उलझाने में व्यस्त हैं उनका सनातन राम से क्या सम्बन्ध हो सकता है ? वे आजीविका-निर्वाह के साधनमात्र हैं जो पशुमात्र को भी सहज प्राप्त हैं।

जब किसी देश के प्रबुद्धवर्ग के लोग बिना श्रम के द्यूत या जुआ-प्रधान विद्याओं की चुस्ती और चालाकी का आश्रय लेकर अधिक से अधिक उपभोग को प्राप्त करना चाहें। दूसरे अनाश्रित अनाथ लोगों की तप से अर्जित सम्पदा को अपव्यय के मार्ग से नष्ट करना चाहें, अमर्यादित होकर तपःसाधाना को यश' प्राप्ति या पुरुषार्थ -प्राप्ति में बाधा सिद्ध करने लगें, क्षणिक उद्वेगों एवम् उत्तेजनाओं से प्रेरणा पाकर धृति, क्षमा और अस्तेय जैसे मूल्यों का तिरस्कार करने लगें तो समझना होगा कि असद् रूपा अविद्या अपने बढ़ते हुए प्रभाव से जनमात्र को सनातन के अनुभव और दर्शन से परे हटा रही है। और लोग एक सामूहिक आत्म हनन की ओर बढ़ रहे हैं। सनातन जो सदातन अथवा सदा रहने वाला है, उससे विमुख होकर जब जब भी मनुष्य ने अस्थिर और अनित्य का आश्रय लिया है तब तब वह अपनी अनियंत्रित माया या अविद्या का स्वयम् शिकार हो गया है। वह चाहे रावण हो, या नित्य नए ध्वंस की तैयारी करने वाला हिटलर हो या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के हवा, पानी, अग्नि, पृथ्वी आकाश को सदा रुग्ण करने वाला, प्रदूषण

फैलाने वाला आधुनिक वैज्ञानिक हो अथवा धर्म के नाम पर अधर्म का प्रतिष्ठापक कोई मसीहा हो। आचार्य शंकर कहते हैं कि अपने स्वरूप के बोध के बिना की गई प्रत्येक क्रिया या आचरण कभी भी सही नहीं हो सकता" अविद्यात्मिक बीजशक्तिः..... मायामयी महासुषुप्तिः यस्यां स्वरूपप्रतिबोधरहिताः शेरते संसारिणो जीवाः (ब्र. सू. भा. 1-4-3) इस अपने स्वरूपबोध की पकड़ को ही संसार की समस्त आधि व्याधि की चिकित्सा का उपाय समझना चाहिए।

वर्तमान में मानवमात्र की सभी शक्तियां भौतिकी या रसायन आदि विद्याओं में संलग्न हो कर नए नए सुख के और दुख के उपायों को ढूंढने में समर्थ हो गई हैं। किन्तु आचार्य शंकर कहते हैं कि मनुष्य चाहे देव योनि में चला जाए या किसी अन्य योनि में, जन्म, जरा, मरण, रोग से पिण्ड नहीं छूटने का। क्योंकि इस अज्ञान से छुटकारा पाना होगा-

"कष्टा खलु सुरनरतिर्यक्प्रेतादिषु संसारदुःखबहुलेषु

प्राणिनिकायेषु जन्मजरामरणरोगादिसंप्राप्तिरज्ञानात्।"

अज्ञान आज की सर्वाधिक जटिलता बन गया है। जिस ज्ञान को रोशनी समझने का नया आविष्कार समझने की भूल करते हैं वही कुछ देर में धुंआ छोड़ने लगता है। और हम मानव-कल्याण के नाम पर नई से नई मरु-मरीचिका बुनते चले जा रहे हैं। आवश्यकता है सभ्यता के जटिल जाल से निकल कर सारस्वत संस्कृति की सरिता में एक स्नान करने की ।

आचार्य शंकर उस सारस्वत संस्कृति की धारा को प्रत्येक घर में, प्रत्येक घट में लाने के लिए अपने साहित्य के प्रत्येक कोण में करुणा से विह्वल दिखाई पड़ते हैं। उनका ब्रह्मसूत्रभाष्य है या 12 उपनिषदों पर भाष्य है, भगवद्गीता पर भाष्य है या सौन्दर्यलहरी, शिवानन्दलहरी, दक्षिणामूतिस्त्रोत्र एवम् अन्य बहुत से लघुस्तोत्रों का अमृतकलश है, सर्वत्र वे आज भी अमृत ब्रह्मतत्त्व से, आत्मानुभूति के परम व्योम से जुड़े हुए , केरल के कालड़ी गांव से मां आर्याम्बा और पिता शिवगुरु, आचार्य गोविन्दपाद के आशीर्वाद से अभिषिक्त होकर न केवल भारत के जन को, अपितु पूंजीवाद के नाना रूपों से विडम्बित जनमात्र को, एक बार आत्म-कल्याण, विश्व-कल्याण, प्राणिमात्र के प्रति सद्भावना एवम् धर्म की विजय-घोषणा के लिए विश्वभर के सनातनधर्मियों का आस्थापूर्ण आवाहन करते दिखाई पड़ते हैं। आचार्य द्वारा अपनी धर्मयात्राओं के अन्त में प्रतिष्ठापित ऋग्वेद का प्रतिनिधि पूर्वदिशा में स्थित गोवर्धन मठ, यजुर्वेद का प्रतिनिधि दक्षिण दिशा में स्थित श्रृंगेरीमठ, पश्चिम में स्थित अथर्ववेद का प्रतिनिधिभूत द्वारिकामठ, एवम् उत्तर दिशा में शोभित सामवेद का प्रतिनिधिभूत ज्योतिर्मठ चारों दिशाओं के प्रबुद्ध जनों को अपने अपने भौतिक ज्ञानों को अध्यात्म तत्त्व से एकीकृत करके सचमुच में संपूर्ण विश्व को एक नीड़ बनाने का प्रयास करने को कह रहे हैं। आचार्य शंकर का यह विश्वनीड़ ही सच्ची ग्लोबलाइजेशन या वैश्वीकरण की प्रक्रिया को जन्म दे सकता है न कि प्रतिस्पर्धा की दौड़ में लगा कोरा यन्त्रवाद।

हम हारेंगे नहीं – गीत

डॉ. श्याम लाल गौड़
आचार्य, श्री जगद्देवसिंह संस्कृत महाविद्यालय
सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार

हम हारे नहीं हम हारेंगे नही, दृढ संकल्प है हमारा हम हारेंगे नहीं।
न हारे हैं न हारेंगे न झुके हैं न झुकेंगे कभी,
अन्याय को रोका है, अत्याचार को मिटाया है।
शत्रु के आगे कभी भी न झुके हैं न झुकेंगे कभी॥
हम हारे नहीं हम हारेंगे नही, दृढ संकल्प है हमारा हम हारेंगे नहीं।
राणा वीर शिवाजी की शिक्षा में न है कमी,
इतिहास भरा पड़ा है जमीं के लिए मिटे हैं हरदम हम सभी।
वीरों की गाथा अरु शौर्य को भूलेंगे नहीं॥
हम हारे नहीं हम हारेंगे नहीं, दृढ संकल्प है हमारा हम हारेंगे नहीं।
भगवा है ध्वज हमारा, माटी चंदन है हम सबकी,
मस्तक झुका के ध्वज को माटी लगा कर तन को।
हाथों में शक्ति अर मन में विश्वास की न है कमी॥
हम हारे नहीं हम हारेंगे नही, दृढ संकल्प है हमारा हम हारेंगे नहीं।
दान में मातृभूमि को शीश देने में तत्पर सभी,
मातृभूमि के लिए कौरवों को क्या मिटा दिए हमने पापी सभी।
शत्रु चाहे हों मुगल या अंग्रेज छोड़ा हमने किसी को नहीं॥
हम हारे नहीं हम हारेंगे नहीं, दृढ संकल्प है हमारा हम हारेंगे नहीं।

मानव जीवन में मुहूर्त की उपयोगिता

डा. रतन लाल
ज्योतिष विभागाध्यक्ष
उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय
हरिद्वार

भगवती प्रसाद बिजल्वाण
शोध छात्र

मुहूर्त की परिभाषा— प्रायः लोग मुहूर्त के अभाव में किसी कार्य को आरम्भ नहीं करते। मुहूर्त की आवश्यकता जीवन में सभी को पड़ती है। किन्तु मुहूर्त किसे कहते हैं? इस विषय में प्रथम विचार करना अत्यन्त आवश्यक है। शब्द व्युत्पति शास्त्र व्याकरण के अनुसार 'मुह' प्रातिपदिक शब्द है। इसमें 'उरट' का आगम करने पर 'मुहुरट' शब्द निष्पन्न होता है। 'अट' का अनुबन्ध लोप होने पर तथा उपधा दीर्घ करने पर 'मुहूर्त' शब्द बनता है। इस विषय में निरूक्तकार यास्क का वचन प्रमाण है। ''मुहुः पुनः पुनः शश्वद् भीक्ष्णमसकृत्समाः '' अर्थात् मुहु शब्द का अर्थ थोडा समय जो शीघ्रता से व्यतीत हो जाता है। ऋग्वेद में भी इसका उल्लेख ''विश्वामित्रनदी संवाद'' के क्रम में किया गया है। सोमरस पान के लिए भी वेदों में इसका तीन बार क्रम से उल्लेख मिलता है। इन दोनों ही स्थानों पर मुहूर्त शब्द का प्रयोग किचिंत् क्षण के लिए ही होता था चारों वेदों में ऋग्वेद में मुहूर्त का अर्थ दिन का एक निश्चित भाग माना गया है। अतः दिन—रात्रि के 30 धाम 2 घटी एक धाम (60÷30=2) यानि दिन में 15 मुहूर्त रात्रि में 15 मुहूर्त होते हैं। पुराणों में स्मृतियाँ में इसका विस्तृत विवेचन किया है। रघुवंशकार महाकवि कालिदास ने 'अज' का जन्म में ब्रह्म मुहूर्त का उल्लेख किया है। ब्राह्मण ग्रन्थों व वारहमिहिर के ग्रन्थों से यह ज्ञात होता है कि मुहूतों के नामों का प्रचलन कम होता था देवताओं के नामों का प्रचलन अधिक होता था। कुमारसभंव में पार्वती के वैवाहिक बधंन में 'मैत्र' मुहूर्त का उल्लेख किया है।

वर्ष मासो दिनं लग्नं मुहूर्तश्चेति पंचकम्।
कालस्यांगानि मुख्यानि प्रबलान्युत्तरोत्तरम्।।[1]

इस संसार में सभी विद्यायें मनुष्य के लिए ज्ञान प्राप्ति हेतु तथा सामाजिक आर्थिक नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास एवम् वृद्धि के लिए हैं। सभी विद्याओं का स्रोत वेदों में ही प्राप्त होता है। 'यतः' 'सर्वाः प्रवृत्तयः'। सर्वज्ञानमयोवेदः। क्योंकि वेदों में प्रतिपादित विद्या ही सर्वश्रेष्ठ है। सभी विद्याओं का मूलतत्व वेद से ही निष्पन्न होता है। आचार्यों ने भी षड़ंग सहित वेदों के अध्ययन से ही सभी विद्याओं की निष्पत्ति स्वीकार की है।

छन्द पादौ तु वेदस्य, हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरूक्तं श्रोत्रमुच्यते।।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य, मुख व्याकरणं स्मृतम्।
तस्मात् सागंमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।[2]

1. वृहद्वकहड़ाचक्रम— 1/1
2. पाणिनीयशिक्षा— 41/4

वेदों के अंग भूत तत्व ज्योतिष को चक्षु भी कहा गया है। 'ज्योतिषमयनं चक्षुः' षड़गं वेदों में ज्योतिषशास्त्र अन्यतम है। भारतीय ज्योतिष विज्ञान संसार का प्राचीनतम विज्ञान है। वेदविहित कर्म को ही धर्म कहा गया है। वेद विहित कर्म दो प्रकार है। श्रौत कर्म तथा स्मार्त कर्मों में सप्तपाकयज्ञा षोडशसंस्कार प्रमुख है। शास्त्रों में वर्णित संस्कार जो कि ज्योतिष शास्त्र की सहायता से ही शुभ काल की प्राप्ति के लिए किये जाते हैं इसलिए संस्कार के बाद वेदाध्ययन का अधिकार प्राप्त होता है। हिन्दुओं के संस्कार उनकी सस्कृति के मूलाधार है। भास्कराचार्य ने भी ज्योतिष की वेदागंता को प्रतिपादित किया है। सिद्धान्त शिरोमणि में ज्योतिष शास्त्र से ही काल का बोध होता है। यह भी कहा गया है।

वेदास्तावद् यज्ञकर्म प्रवृत्ताः यज्ञाः प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतः स्याद् वेदांगत्वं ज्योतिषस्योक्तमस्मात्।।[3]

ज्योतिष का सामान्य ज्ञान भी लोकोपकारक होता है। इसी ज्ञान को मनीषि व्यावहारिक ज्ञान भी मानते है। यह ज्ञान आत्मकल्याण कारण जनकल्याणकारक व लोकोपकारक भी है। इस विषय के गर्गाचार्य का यह मत भी प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद स याति परमां गतिम्।।[4]

संस्कारादि श्रौत स्मार्त कर्मों के लिए शुद्ध काल की अत्यन्त आवश्यक होती है। ज्योति काल का ज्ञान होने के कारण शुभ काल में किए जाने वाली क्रिया विशेष फल प्राप्ति के लिए भी इसकी कल्पना की जाती है। जन्म से लेकर मृत्यु प्रयत्न सभी व्रत, पर्व, षोडशसंस्कार ज्योतिषशास्त्र के अन्तर्गत मुहूर्तों पर आधारित है। ज्योतिषशास्त्र की सहायता से जो कर्म हम सभी शुभ मुहूर्त में अनुष्ठान करते हैं। वह कर्म शुभ फल को देने वाला होता है। संसार में शुभ और अशुभ निमित रूप काल ही है। गृह निर्माण, गृह प्रवेश संस्कार, अग्न्याधान, कृषिवाणिज्य, शस्त्रनिर्माण, क्रय–विक्रय आदि मिश्रित प्रसंगों में शुभ मुहूर्त की अपेक्षा होती है। शुभ मुहूर्त में हमारे द्वारा जिन कर्मों का अनुष्ठान किया जाता है वह कर्म शुभ फलदायक होता है।

कुछ आचार्य नाड़ीद्वय को ही मुहूर्त मानते हैं। मुहूर्त शब्द का अभिप्राय दिन शुद्धि विशेषण अर्थात् शुभ और अशुभ ग्रहों से अपेक्षित तिथि वार, नक्षत्र, योग, करणों में भद्रा आदि को छोड़कर शुद्धकाल मुहूर्त कहा जाता है।

अष्टादशनिमेषास्तु काष्ठस्त्रिशत्तु ताः कलाः।
तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशस्त्रियाम्।।
ते तु त्रिशंदहोरात्रः पक्षस्ते दशपंच च।

3. सिद्धान्तशिरोमणि – 23 श्लोक
4. गर्गसंहिता– 08 श्लोक

पक्षौ पूर्वापरौ शुक्ल कृष्णौ मासस्तु तावभौ।
द्वौ–द्वौ मार्गादिमासौ स्यादृतुस्तैरयनं त्रिभि।
अयने द्वे गतिरूदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः।।[5]

काल ज्ञानः ग्रहों के अथीन ग्रहों से तिथि वारादि की उत्पत्ति के विषय में जाना जाता है।'' ''कालज्ञानं ग्रहाधीनं ग्रहाः कर्मफलप्रदाः'' 'ग्रहा एवं शुभाशुभ फल के दायक है। वस्तुतः यह सारा जगत परमात्मा के अधीन है। तथा ग्रह देवाओं के अंश है। इस कथंन से सम्पूर्ण जगत ग्रहों के अधीन है। ''ग्रंहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीनं नराऽवराः।'' व्योमण्डल में प्रतिदिन भिन्न–भिन्न गति के देदीप्यमान बिम्ब दिखायी पड़ते है, वे सभी ग्रह शब्दों से संबंधित होते है। वेद में ''यद् ग्रहणाति तस्माद् ग्रह इति'' कहा गया है। ग्रह नव संख्यक है।

सूर्यः सौमो महीपुत्रः सोमपुत्रों बृहस्पतिः।[6]
शुक्र शनिचरों राहु– केतवश्च ग्रहाः स्मृता।।[7]

आकाश में सात ग्रह दिखाई पड़ते है। राहु केतु दोनों तम प्रधान ग्रह है। इन ग्रहों में वेद पुराणों से प्रमाणित गणित राशि आदि की भुक्ति व गति कलादि इन सब का ग्रह प्रसिद्व होता है। शुभ अशुभ ज्ञान के लिए उनको प्रकृति का ज्ञान होना भी आवश्यक है। क्योंकि–

क्रूराः खेटा राहुमन्दार्कभौमाः पापा सौम्यस्तैर्युक्तः क्षीण इन्दुः।
पूर्णचन्द्रः सौम्यशुक्रामरेज्याः सौम्या सर्वे चन्द्रयुक्ता बलाढ्या।।[8]

और भी– **शुभाः पूर्णेन्दुः शुक्रेज्यास्तमोऽर्कार्कि–कुजाः खलाः।**
क्षीणेन्दुरशुभो ज्ञस्तु संसर्गादशुभः शुभः।।[9]

ग्रहों के शुभ–अशुभ ज्ञान जन्मकालीन ग्रह गोचर से किया जाता है। ग्रहों की गोचरता एवं ताराओं के बल से चन्द्र बल सम्पन्न चन्द्र के बल से उष्णकान्ति, सूर्य बल प्राप्त करता है। राहु एवं केतु को छोड़कर अन्य सभी ग्रह सूर्य के बल से ही बलवान होते हैं। विवाह के बाद शुभकर्म में गृहनिर्माण में, युद्ध में, मुख्य रूप से पुरूषों में ही चन्द्रबल का विचार करें तथा सीमन्त निषेकादि कर्मों में स्त्रियों के चन्द्र बल से विचार करना चाहिए। गुरू, शुक्र, अस्तादि दोषों का परिहार कर ग्रहों के आधार पर मुहूर्त का निर्णय किया जाता है। रवि एवं च्रन्दमा राश्यात्मक जिसके बाद आते है। वह तिथि है।

''अर्कद्विनिःसृतः प्राची यद्यात्यरहः शशी। तच्चान्द्रमाशैस्तु ज्ञेया द्वादशभिस्तिथिः'' सूर्यसिद्धान्त–मानाध्याय।

5. वृहदवकहडाचक्रम – 7/9
6. तत्रैव – 177 श्लोक
7. याज्ञवल्क्यस्मृति 1/195
8. वृहदवकहडाच्रकम 178 श्लोक
9. तत्रैव–180

दोनों के पक्षों में पंचदश तिथियां शुक्ल पक्ष के अन्त में पूर्णिमा कृष्णपक्ष के अन्त में अमावस्या जाननी चाहिए।

मास शुकलश्च कृष्णश्च द्वौ पक्षौ परिकीर्तितौ।
दर्शान्तात् पूर्णिमा यावत् शुक्लोऽन्य कृष्णपक्षकः।।[10]

उसी प्रकार तिथि का नाम–

प्रतिवच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम्।
चतुर्थी पंचमी षष्टी सप्तमी चाष्टमी तथा।।
नवमी दशमी चैवेकादशी द्वादशी ततः।
त्रयोदशी ततोज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी
पोर्णिमा शुक्लपक्षे तु कृष्णपक्षे त्वमा स्मृता।।[11]

तिथियों की संज्ञा–

नन्दा च भद्रा जया च रिक्ता पूर्णेति तिथयोऽशुभमध्यशस्ताः।
सितेऽसितेशस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरो च सिद्धाः।।[12]

नन्दा तिथि में चित्र, उत्सव, वास्तु तन्त्र क्षेत्र आदि कार्य शुभ होते हैं। भद्रा में विवाह, भूषण शकट, यात्रा, पौष्टिक कार्य माने गये हैं। जया में संग्राम, बलोपयोगी, निर्माण कार्य सिद्ध होते हैं। रिक्ता में शत्रुता (वैर) वध, घात, विष, अग्नि, शस्त्रसंबधी कार्य सिद्ध होते हैं। पूर्णा में सभी प्रकार के मंगल कार्य, यात्रा और शान्तिक तथा पौष्टिक कर्म सिद्ध होते हैं। अमावस्या में केवल पितृ कार्य किये जाते हैं। अन्य शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

नन्दासु चित्रोत्सववास्तुतन्त्रक्षेत्रादि कुर्वीतेतथैव नृत्यम्।
विवाहभूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि
जयासु संग्रामबलोपयोगि कार्याणि सिद्धयन्त्यपि निर्मितानि।
रिक्तासु विद्वद्वधघातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादि च यान्ति सिद्धिम्।।
पूर्णासु मांगल्यविवाहयात्रा सुपौष्टिकं शान्तिककर्म कार्यम्।
सदैव दर्शे पितृकर्मयुक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमगंलानि।।[13]

10 तत्रैव– 43

11 तत्रैव– 58/60

12 मुहूर्तचिन्तामणि–03

तिथियों के नाम स्वामि तथा तिथियों में किये जाने वाले कार्य अधोलिखित तालिका के द्वारा स्पष्ट हो जाते हैं।[14]

तिथि नामानि	तिथय	फलानि फलानि	स्वामिन	संज्ञा	शुक्लपक्ष	कृष्णपक्षफलानि	वर्जित पदार्था
वृद्धिः	प्रतिपदा	सिद्धिदात्री	अग्नि	नन्दा	अशुभ	शुभ	कुष्माण्ड
सुमंगला	द्वितीया	कार्यसाधिनी	ब्रह्म	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेरीफलम्
स्बला	तृतीया	आरोग्यम्	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लवणम्
खला	चतुर्थी	लानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	थ्तला
श्रीमती	पंचमी	शुभ	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	अम्ल
कीर्तिः	षष्ठी	अशुभ	कार्तिकेय	नन्दा	मध्यम	मध्यम	तैलम्
मित्रपदा	सप्तमी	शुभ	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आमलकम्
बलवती	अष्टमी	व्याधि	महेश	जया	मध्यम	मध्यम	नारिकेलम्
उग्रा	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफलम्
धर्मिणी	दशमी	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवलः
नन्दा	एकादशी	शुभदा	विश्वदेव	नन्दा	शुभ	अशुभ	गोधूमचूर्णम्
यशोवती	द्वादशी	सर्वसिद्धि	विष्णु	भद्रा	शुभ	अशुभ	मासद्विदलम्
जयकरा	त्रयोदशी	सर्वसिद्धि	काम	जया	शुभ	अशुभ	बैंगनशाकम्
क्रूरा	चतुर्दशी	डग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
सौम्या	पूर्णिमा	पुष्टिदा	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	–	द्यूत
दर्श	अमावस्या	अशुभ	पितरः	पूर्णा	–	अशुभ	स्त्रीसंगम

निष्कर्ष – मानव जीवन में मुहूर्त की आवश्यकता सभी को पड़ती है। वेद शास्त्रों में भी मुहूर्त की उपयोगिता का उल्लेख मिलता है। मुहूर्त ज्योतिष का स्थान संहिता स्कंध में आता है। ''मुहुः पुनःपुनः शश्वद् भीक्ष्णमसकृत्समाः ''अर्थात वह समय जो शीघ्रता से व्यतीत हो जाए उसे मुहूर्त कहते है। जिसकी अवधि ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दो घटी का एक मुहूर्त होता है। मुहूर्तो का उद्देष्य कार्य की निर्विध्नता पूर्वक सफलता के लिए शुद्धतम काल का निर्धारण करना है। दैनिक जीवन में मुहूर्त बहुत उपयोगी है। जिसमें हमें अपना अभीष्ट कार्य सम्पादित करना है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त सभी व्रत, पर्व, षोडशसंस्कार ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत मुहूर्तो पर आधारित है। ज्योतिष शास्त्र की सहायता से जो कर्म हम सभी शुभ मुहूर्तों में अनुष्ठान करते है। वह कर्म शुभ फल को देने वाला होता है। मुहूर्त शब्द का अभिप्राय दिन शुद्धि विशेषण अर्थात शुभ और अशुभ ग्रहों से अपेक्षित तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करणों में भद्रा आदि को छोडकर शुद्ध काल मुहूर्त कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र का कथन है। कि शुभ मुहूर्त में किये गये कर्म अवश्य ही शुभ फलदायी होते है। इस लिए हमें शुभाशुभ कर्मो को प्रारंभ करते समय मुहूर्त का चयन आवश्यक ही कल्याणकारी एवं मगंलकारी सिद्ध होगा।

सप्त ऋषि आश्रम हरिद्वार में खुला डॉ. शिवकुमार स्मृति श्री सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र

डा. शिवकुमार स्मृति श्री सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र खुला

हरिद्वार (एसएनबी)। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के दिवंगत अध्यक्ष डा. शिवकुमार शर्मा की याद में रविवार को सप्तऋषि आश्रम में डा. शिवकुमार श्री सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र खोला गया। जिसका उद्घाटन श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा के सचिव महंत स्वामी देवानन्द सरस्वती ने किया।

इस अवसर पर हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरिम अध्यक्ष इंद्र मोहन गोस्वामी, महासचिव डाक्टर देशबंधु, श्री सनातन धर्म महावीर दल के राष्ट्रीय प्रधान महंत स्वरूप बिहारी शरण, सनातन धर्म शिक्षा समिति के राष्ट्रीय महासचिव डा. गुरदीप सिंह, डा. नंदकिशोर शर्मा, सुभाष राई, जगदेव सिंह संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य डा. राजेंद्र कुमार गोनियाल, सप्तऋषि आश्रम के प्रबंधक विनोद सैनी आदि उपस्थित थे। डा. शिवकुमार शर्मा का भावपूर्ण स्मरण करते हुए महंत स्वामी देवानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि शिवकुमार महामानव थे।

इस अवसर पर सभा के अंतरिम अध्यक्ष इंद्रमोहन गोस्वामी ने कहा कि डा. शिवकुमार शर्मा के विचार हमेशा प्रासंगिक रहेंगे। सभा के महासचिव डा. देशबंधु ने कहा कि डा. शिव कुमार शर्मा का जीवन प्रेरणादाई था। महावीर दल के अध्यक्ष महंत स्वरूप बिहारी शरण ने कहा कि डा. शर्मा का जीवन अनुकरणीय है। कार्यक्रम का संचालन डा. नंदकिशोर शर्मा ने किया। सभा के उपाध्यक्ष सुधीर कुमार गुप्ता, मिथिलेश सनातन धर्म इंटर कालेज की प्रबंध समिति के सचिव प्रबंधन सत्यपाल ब्रह्मचारी और प्रधानाचार्य मीनाक्षी शर्मा ने शुभकामनाएं प्रेषित की।

महंत स्वामी देवानंद सरस्वती ने किया प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन

चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन करते पंच दशनाम जूना अखाड़ा के सचिव महंत स्वामी देवानंद सरस्वती महाराज, साथ हैं हवन यज्ञ करते सभा के अंतरिम अध्यक्ष इंद्र मोहन गोस्वामी, महासचिव डा. देशबंधु व अन्य। (आनंद)

हरियाना, 24 जनवरी (आनंद): सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के दिवंगत अध्यक्ष डा. शिव कुमार शर्मा की याद में आज सप्तऋषि आश्रम में डा. शिव कुमार सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र का उद्घाटन पंच दशनाम जूना अखाड़ा के सचिव महंत स्वामी देवानंद सरस्वती महाराज ने किया।

इस दौरान हवन यज्ञ भी करवाया गया, जिसमें सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरिम अध्यक्ष इंद्र मोहन गोस्वामी, महासचिव डा. देशबंधु शर्मा, सनातन धर्म महावीर दल के राष्ट्रीय प्रधान महंत स्वरूप बिहारी शरण, सनातन धर्म शिक्षा समिति के राष्ट्रीय महासचिव डा. गुरदीप सिंह, डा. नंद किशोर शर्मा, सुभाष राई, जगदेव सिंह संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य डा. राजेन्द्र कुमार गोनियाल, सप्तऋषि आश्रम के प्रबंधक विनोद सैनी आदि ने आहुतियां डालीं।

इस दौरान महंत जी ने कहा कि डा. शिव कुमार महामानव थे। उनकी चिकित्सा के क्षेत्र में की गई सेवाओं को कभी भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने 22 वर्षों तक सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर रहकर कई सामाजिक कार्य किए, जिनमें हिमाचल प्रदेश में अपने गृह क्षेत्र पालमपुर में एक बड़ा नेत्र चिकित्सालय खोला। इंद्रमोहन गोस्वामी ने कहा कि डा. शिव कुमार शर्मा के योगदान को कभी नहीं भुलाया जा सकता। डा. देशबंधु शर्मा ने कहा कि डा. शिव कुमार शर्मा हमेशा अपने सिद्धांतों के लिए समर्पित रहे। महंत स्वरूप बिहारी शरण ने कहा कि डा. शर्मा का जीवन अनुकरणीय है। कार्यक्रम का संचालन डा. नंद किशोर शर्मा ने किया। इस अवसर पर सभा के उपाध्यक्ष सुधीर कुमार गुप्ता, मिथिलेश सनातन धर्म इंटर कालेज की प्रबंध समिति के सचिव प्रबंधन सत्पाल ब्रह्मचारी और प्रधानाचार्य मीनाक्षी शर्मा ने शुभकामनाएं भेंट कीं।

डॉ. शिव कुमार स्मृति

सनातन धर्म प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र

सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार

Individual Therapy Rates

1.	Hot Bottle	10
2.	Mitti Pack	50
3.	Enema	50
4.	Body Massage	300
5.	Steam Bath	300
6.	Hot & Cold	200
7.	Mud Bath	200
8.	Jal Neti	80

Package Rates

For 1 Day Rs. 400/-

For 3 Day Rs. 900/-

For 7 Days Rs. 2400/-

For 15 Days Rs. 4800/-

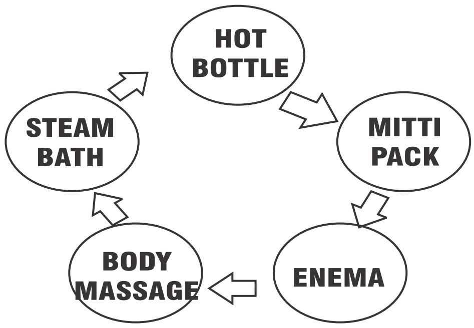

For further details please contact:

Dr. Ved Parkash

Phone 9416473904, E-mail: saptrishiashram170@gmail.com

प्राकृतिक चिकित्सालय

गोस्वामी गणेश दत्त भवन चण्डीगढ़ में करुण स्पर्श सेवा का आरम्भ

यह एक सन्तोष का विषय है कि सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ने अपनी स्थापना के उद्देश्यों में से एक स्वास्थ्य सेवा को ध्यान में रखते हुए रोटरी अम्बाला कैंसर एवं जनरल अस्पताल में चल रही स्नेह स्पर्श सेवा योजना से प्रेरित करुण स्पर्श सेवा योजना का केन्द्र गोस्वामी गणेशदत्त भवन चण्डीगढ़ में आरम्भ करने में अपना सहयोग एवं स्थान देकर किया है। दिनांक 29 मई 2022 को इस केन्द्र का उद्घाटन समारोह हुआ, जिसमें प्रधान डॉ. देशबन्धु मुख्य अतिथि रहे। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. देशबन्धु ने इस अत्यन्त उपायोगी सेवा योजना की प्रशंसा की और याद किया कि रोटरी क्लब अम्बाला के सदस्य और प्रधान के रुप में भी वे इस सेवाकार्य का हिस्सा बने हुए हैं उन्होंने विश्वास दिलाया कि स.ध.प्र.सभा एवं स.ध. शिक्षा समिति हमेशा इसमें अपना सहयोग करते रहेंगे।

इस सेवा योजना के अन्तर्गत लाईलाज हो चुके कैंसर से पीड़ित निर्धन रोगियों के लिए, जिन्हें डाक्टरों ने जवाब दे दिया है और जो जीवन की अंतिम सांसे गिन रहे हैं, उनकी पीड़ा कम करने के लिए इंजेक्शन, गुलुकोस, पीड़ा निवारक दवाओं एवं आवश्यकतानुसार मरहम पट्टी की सेवा उनके घर जाकर करुण स्पर्श की टीम द्वारा की जाएगी। इसके अतिरिक्त अन्य रोगों से पीड़ित निर्धन रोगियों के लिए मुफ्त परामर्श और दवाओं की डिस्पेंसरी भी शुरु की गई है। जो सुबह 10.00 बजे से दोपहर 2:00 बजे तक खुली रहेगी।

चण्डीगढ़ में इस करुण स्पर्श सेवा का आरम्भ करने का बीड़ा रोटरी क्लब अम्बाला के पूर्व प्रधान श्री पी.सी.जैन ने उठाया है। इस सेवा का लाभ चण्डीगढ़ के साथ-साथ मोहाली और पंचकूला के गरीब कैंसर रोगियों को भी मिलेगा। इस केन्द्र के प्रभारी श्री हरी राम भारद्वाज हैं और डॉ. एस.के. बंसल परामर्शदाता हैं।

उद्घाटन समारोह में 19 सैक्टर के अनेक निवासी, मन्दिर और भवन से जुड़े लोग तो उपस्थित थे ही, अम्बाला से भी अनेक गणमान्य लोग आए। डॉ. विनय मल्होत्रा ने अम्बाला में स्नेह स्पर्श के नाम से 8 वर्ष से सफलतापूर्वक संचालित रोटरी क्लब के सेवाकार्य का विस्तार से परिचय दिया। इस कार्यक्रम में रोटरी क्लब अम्बाला के प्रधान श्री इन्द्रजीत गुगलानी, आगामी प्रधान श्री नरेश ढींगरा तथा अन्य रोटरी सदस्य उपस्थित रहे। श्री सुभाष बंसल ने मंच संचालन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सहित बहुत से उपस्थित व्यक्तियों ने 2100/- से 21000/- तक की राशि दान की, जिससे करुण स्पर्श के लिए वहीं 1 लाख से अधिक की राशि एकत्रित हो गई।

श्री पी.सी. जैन ने इस सहयोग के लिए सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया और सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के प्रति भी हार्दिक आभार ज्ञापित किया।

आशा है कि सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के सहयोग से गोस्वामी गणेशदत्त भवन सैक्टर 19, चण्डीगढ़ में आरम्भ हुई इस 'करुण स्पर्श' सेवा योजना से चण्डीगढ़, मोहाली, पंचकूला में रहने वाले निर्धन कैंसर रोगियों को मुफ्त सहायता मिल पाएगी। सहायता प्राप्त करने के लिए श्री हरिराम भारद्वाज को फोन नं. 99155-95804 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

Shri Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha along with Rotary Ambala Cancer Detection and Welfare Society is thankful to the following benefactors who have generously given donations at the inaugural function of Karun Sparsh started at Goswami Ganesh Dutt Bhawan Sector 19A Chandigarh on 29/5/2022:

1.	Sh. P.C Jain	-	₹ 51000
2.	Mrs. Nidhi Gupta	-	₹ 21000
3.	Mrs. Veena Chadha	-	₹ 21000
4.	Dr. Desh Bandhu	-	₹ 11000
5.	Dr. Sandeep Kukkar	-	₹ 11000
6.	Sh. Ashok Goel	-	₹ 11000
7.	Sh. Anshul Aggarwal	-	₹ 11000
8.	Sh. Naresh Dhingra	-	₹ 5100
9.	Sh. Baldev Singh	-	₹ 5100
10.	Sh. Rajesh Choudhary	-	₹ 5000
10.	Sh. Inderjit Guglani	-	₹ 2100
11.	Sh. Ajay Gupta	-	₹ 5000
12.	Sh. Vinay Malhotra	-	₹ 5000
13.	Mrs. Sangita Aggarwal	-	₹ 5000
14.	Col. S.S. Jowandah	-	₹ 5000
15.	Sh. Chander Mohan Vasudeva	-	₹ 5000
16.	Sh. Inderjit Guglani	-	₹ 2100

All these donations are exempted from Income Tax u/s 80 G.

श्री सनातन धर्म सभा, भवानी मन्दिर, गुलहा चीका में श्री सनातन धर्म सभा के प्रचार मन्त्री डॉ. नन्द किशोर जी का अभिनन्दन

सनातन संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन: डा. शर्मा

गुल्हा चीका, 27 मार्च (कपिल): सनातन संस्कृति विश्व की सबसे पुरातन संस्कृति है और यह संस्कृति एक वैचारिक है। ये उद्गार सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा संस्था के प्रचार मंत्री डा. नंदकिशोर शर्मा ने शनिवार सायं श्री भवानी मंदिर चीका में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोलते हुए व्यक्त किए। डा. शर्मा ने कहा कि सनातन संस्कृति हमें जहां ईश्वर के प्रति आस्थावान बनाती है वहीं दूसरी तरफ दयावान भी बनाती है।

उन्होंने कहा कि सनातन संस्कृति मात-पिता, गुरु जनों का आदर सिखाती है वहीं अतिथि देवो भव: की परंपरा भी दर्शाती है नतीजतन यही परम्परा भारत देश से पूरे विश्व में सनातन संस्कृति से ही चली हुई है। डा. शर्मा ने कहा कि हमारे देश में नारी के सम्मान को लेकर भी शास्त्रों में विदित है कि यत्र पूज्यंते नारी, तत्र रमंते देवता:। डा. शर्मा ने कहा कि सनातन धर्म में ऐसे सिखाया जाता है कि व्यक्ति किस तरह से अपने जीवन को उच्च कोटि का आदर्शवादी बना सकता है।

उन्होंने कहा कि वैचारिक तौर पर भी देखा जाए तो सनातन संस्कृति में हर बात बड़ी बारीकी से समझाई गई है और आम और खास सबके लिए एक समान विचारों का समावेश भी इस संस्कृति में है। डा.शर्मा ने संस्था के सदस्यों व पदाधिकारियों को सनातन संस्कृति का प्रचार करने बारे भी आह्वान किया।

इस मौके पर संस्था के प्रधान राजेश शर्मा, पूर्व प्रधान डा. राम कुमार शर्मा, मोती राम गर्ग, कुलदीप मारवा, दीपक मालानी, मुकेश गर्ग, भूषण शर्मा, जय प्रकाश सिंगल, शशि भूषण शर्मा आदि सहित संस्था के कई सदस्य उपस्थित थे।

डा. एन.के. शर्मा को सम्मानित करते संस्था के सदस्य व पदाधिकारी। (कपिल)

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब का पंचवर्षीय अधिवेशन कई प्रस्ताव पास करता हुआ संपन्न

संविधान में किए गए संशोधनों की सभासदों ने की पुष्टि।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष बने डा. देशबंधु शर्मा

■ कार्यकारिणी के गठन का भी मिला अधिकार

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के पंचवर्षीय अधिवेशन में कई प्रस्ताव पास

■ अध्यक्ष ने पास की सभाओं व संस्थाओं की पंचवर्षीय कार्रवाई रिपोर्ट

डा. देशबंधु सर्वसम्मति से श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के अध्यक्ष नियुक्त

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली का पंचवर्षीय अधिवेशन संपन्न

हरियाना (सरहद केसरी ब्यूरो): गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कालेज हरियाना में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, नई दिल्ली का पंचवर्षीय अधिवेशन संपन्न हो गया। अधिवेशन के अध्यक्षता मंडल में आई. एम. गोस्वामी, पूर्व मंत्री उपेन्द्र शर्मा, डी. आर. मदान, डा. गुरुदीप शर्मा, सुभाष शर्मा, महावीर दल के अध्यक्ष स्वामी स्वरूप बिहारी शरण सुशोभित हुए। जबकि सभा के अध्यक्ष डा. देश बन्धु शर्मा बतौर

पूर्व मंत्री उपेन्द्र शर्मा ने कालेज को दी 8 लाख रुपए की सहायता राशि

हरियाना, 4 मार्च (आनंद): जी.जी.डी.एस.डी. कालेज की प्रबंधक कमेटी के सचिव डा. गुरदीप कुमार शर्मा की अध्यक्षता में हुई बैठक में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के पदाधिकारी

जीजीडीएसडी कॉलेज हरियाना के विकास के लिए 8 लाख रुपए दिए

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामंत्री और पूर्व मंत्री उपेंद्र शर्मा की

जीजीडीएसडी कॉलेज हरियाना के विकास के लिए 8 लाख रुपए दिए

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामंत्री और पूर्व मंत्री उपेंद्र शर्मा की सचिव डॉ. गुरदीप कुमार शर्मा, प्रिं. डॉ. राजीव कुमार शर्मा व अन्य।

हरियाना| जीजीडीएसडी कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली के महामंत्री और पूर्व मंत्री उपेंद्र शर्मा ने कॉलेज के विकास के लिए 8 लाख रुपए की राशि दान करते हुए कॉलेज की प्रगति के लिए शुभकामना की। कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के सचिव डॉ. गुरदीप कुमार शर्मा, प्रिं. डॉ. राजीव कुमार शर्मा ने बताया कि पूर्व मंत्री उपेंद्र शर्मा की ओर से दी गई राशि दो स्कॉलरशिप, यशपाल शर्मा और शुभलता शर्मा मेमोरियल स्कॉलरशिप के लिए उपयोग की जाएगी। कॉलेज मैनेजिंग कमेटी के सचिव डा. गुरदीप कुमार शर्मा, प्रिं. डॉ. राजीव कुमार शर्मा, कॉलेज स्टाफ और विद्यार्थियों ने इस सराहनीय कार्य के लिए उनका धन्यवाद किया।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महासचिव तथा शिक्षा समिति के कार्यकारी अध्यक्ष बने डा. गुरदीप शर्मा

हरियाना कालेज पहुंचने पर गणमान्य व्यक्तियों ने किया भव्य अभिनन्दन

हरियाना (आनंद)। उत्तरी भारत की प्रसिद्ध श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब नई दिल्ली के अध्यक्ष डा देश बन्धु शर्मा की अध्यक्षता में हुई उच्च स्तरीय बैठक में डा. गुरदीप कुमार शर्मा को श्री सनातन धर्म सभा का महासचिव तथा सनातन धर्म

भव्य अभिनन्दन किया। इस मौके डा. गुरदीप कुमार शर्मा ने पत्रकारों से बातचीत दौरान बताया कि सनातन धर्म विश्व का सबसे अधिक प्राचीन, परिपक्व, अनादि तथा अनंत है। सनातन धर्म निरन्तर गतिशील है। भारत रत्न पंडित महामना मदन मोहन

100 के करीब स्कूल, 22 कालेज आधुनिक तथा संस्कारित शिक्षा मुहैया करवा रहे है जबकि 145 सभाएं तथा 125 के करीब महावीर दलों का गठन किया गया है जो कि धार्मिक, समाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में अहम योगदान डाल रहे है। कालेज प्रिं. डा. राजीव कुमार ने सभा के महासचिव डा. गुरदीप शर्मा के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए कालेज की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। डा. गुरदीप शर्मा ने समूह कालेज स्टाफ की बैठक में कालेज के विकास कार्यों संबंधी जानकारी हासिल करते हुए संतुष्टी का इजहार किया। उन्होंने समूह उपस्थिति के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा तथा शिक्षा समिति अपने निर्धारित धार्मिक, शैक्षणिक, एवं समाजिक कार्यों के प्रचार एवं प्रसार में निरन्तर क्रियाशील है। इस अवसर पर प्रिं.

डॉ. देशबंधु सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गए

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने डा. देशबंधु

उत्तर भारत सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष बने डा. देशबंधु शर्मा

पालमपुर, 27 फरवरी (भृगु): शिक्षाविद् डा. देशबंधु शर्मा उत्तर भारत सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष चुने गए हैं।

पंजाब के होशियारपुर में आयोजित चुनाव प्रक्रिया में डाक्टर देशबंधु शर्मा को यह दायित्व सर्वसम्मति से सौंपा गया। डाक्टर देशबंधु शर्मा से पहले प्रसिद्ध समाजसेवी एवं पालमपुर के पूर्व विधायक डा. शिव कुमार उत्तर भारत सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष थे। डा. शिव कुमार ने लंबे समय तक उत्तर भारत सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष के रूप में दायित्व संभाला तथा सभा के प्रचार-प्रसार में अपनी उल्लेखनीय भूमिका अदा की। कुछ समय पूर्व डा. शिव कुमार का निधन हो गया था।

इसके पश्चात सभा के अध्यक्ष को लेकर के लगभग 400 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डा. देशबंधु शर्मा को उत्तर भारत सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा का अध्यक्ष चयनित करने के लिए पंजाब के पूर्व मंत्री ... कुमार ने उनका नाम सुझाया, जिसका सभी प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से अनुमोदन किया। ऐसे में डाक्टर देशबंधु शर्मा को उत्तर भारत सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा का नया अध्यक्ष चुन लिया गया। डा. देशबंधु शर्मा इससे पहले सभा के महामंत्री के पद का दायित्व संभाल रहे थे। शिक्षाविद् डाक्टर देशबंधु शर्मा सनातन धर्म महाविद्यालय चंडीगढ़ तथा सनातन धर्म महाविद्यालय अंबाला के प्राचार्य के पद का दायित्व संभाल चुके हैं तथा शिक्षा क्षेत्र में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है।

डाक्टर देशबंधु शर्मा ने कहा कि जिस उद्देश्य के लिए सभा का गठन किया गया है तथा जिस प्रकार से डा. शिव कुमार शर्मा ने इस संस्था का नेतृत्व करते हुए इसका प्रचार-प्रसार किया, उन्हीं उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए वह कार्य करेंगे। उन्होंने कहा कि डा.

350 संस्थाओं का संचालन करने वाली सभा के अध्यक्ष बने पूर्व प्रिंसिपल डॉ.

भास्कर न्यूज | अम्बाला

कैंट के एसडी कॉलेज के प्रिंसिपल रहे डॉ. देशबंधु सर्वसम्मति से श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली के प्रधान चुने गए हैं। पंजाब के होशियारपुर में गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म कॉलेज में हुए चुनाव में उन्हें 5 वर्षों के लिए इस पद पर चुना गया। वह श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के अध्यक्ष भी होंगे।

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) के अधीन दिल्ली, चंडीगढ़, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान और जम्मू में 147 सभाएं व मंदिर, 52 स्कूल, 22 कॉलेज, 125 श्री सनातन धर्म

डॉ. देशबंधु का अभिनंदन करते सभा के सदस्य।

महावीर दल की यूनिटें, सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार, चंडीगढ़ का गोस्वामी गणेश दत्त भवन समेत कई संस्थान हैं। उल्लेखनीय है कि डॉ. देशबंधु ने 18 साल चंडीगढ़ के गोस्वामी गणेश दत्त एसडी कॉलेज में पढ़ाया। फिर कैंट एसडी कॉलेज के प्रिंसिपल बने और रिटायर हुए। वह कॉलेज प्रबंधक समिति के उपाध्यक्ष हैं। वह बैजनाथ (हिमाचल) ... कैंट के ... आदर्श संस्कृ... और द एसडी... भी हैं। चुना... हाईकोर्ट के ... चुनाव अधि... डॉ. आरपी ... का संचालन।

Felicitation Ceremony Of Dr Deshbandhu Hel

Many Standards Will Be Set In The Field Of Education: Dr Band

सनातन संस्थाओं को एक मंच पर लाएं

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष का हरिद्वार में हुआ अभिनं

फुटबॉल खिलाड़ियों के पास एक भी सके।

डॉ देशबन्धु को सनातन धर्म शिक्षा समिति व... जाने पर द. एस.डी. विद्या स्कूल में सम्मान...

अंबाला छावनी, 11 मार्च (हरी वर्मा) : द. एस.डी. विद्या स्कूल, अम्बाला छावनी में विद्यालय के प्रबंधक व सनातन धर्म महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ देशबन्धु को सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब), नई दिल्ली एवं श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर उनके लिए विद्यालय में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय की निदेशक प्राचार्या नीत इंद्रजीत कौर सन्धु, शैक्षणिक कोऑर्डिनेटर अनुरूप कौशल व विद्यालय कोऑर्डिनेटर रश्मि भसीन ने मुख्यातिथि डॉ देशबन्धु एवं उनकी धर्मपत्नी भारती बन्धु को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका अभिनन्दन किया। इस अवसर पर विद्यालय की छात्रा अकालिनवला द्वारा स्वागतम नृत्य

डॉ देशबन्धु को पुष्प देकर सम्मानित करती निदेशक प्राचार्या नीत इंद्रजीत कौर सन...

प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण में डॉ देशबन्धु की उपलब्धियों और जीवन परिचय के बारे में विद्यालय की प्राचार्या ने सनातन धर्म की महान विरासत के बारे में विस्तार से बताया कि डॉ देशबन्धु को 27 फरवरी 2022 को

होशियारपुर के गोस्वामी... सनातन धर्म महाविद्यालय... अधिवेशन में अगले पाँ... सनातन धर्म प्रतिनिधि स... नई दिल्ली एवं श्री सन... समिति का अध्यक्ष नि...

डॉ देशबन्धु सनातन धर्म शिक्षा समिति के अध्यक्ष नियुक्त, द एसडी विद्या स्कूल में सम्मान समारोह आयोजित

अंबाला कवरेज@ अंबाला। द. एसडी विद्या स्कूल अंबाला छावनी में विद्यालय के प्रबंधक व सनातन धर्म महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ देशबन्धु को सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा ...

की महान विरासत के बारे में विस्तार से बताया। डॉ देशबन्धु ने बताया कि कितनी मेहनत से सनातन धर्म सभा से जुड़े विद्वानों ने घर-घर से चन्दा एकत्रित करके, समाज के हर वर्ग को शिक्षित ...

डॉ. देशबंधु सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अध्यक्ष नियुक्त

आज समाज नेटवर्क

अंबाला। सनातन धर्म कालेज अंबाला छावनी में कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य डा. देशबन्धु को सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब), नई दिल्ली एवं श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर उनके लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डा. राजेन्द्र सिंह एवं वरिष्ठ शिक्षकों ने मुख्यातिथि डा. देशबन्धु एवं उनकी धर्मपत्नी भारती बन्धु को पुष्पगुच्छ एवं शाल भेंट कर उनका अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का सफल मंच संचालन रसायन शास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर एवं कालेज स्टाफ काउंसिल के सचिव डा. जोगिन्द्र रोहिल्ला ने किया। डा. देशबन्धु की उपलब्धियों के बारे में डा. आशुतोष अंगिरस ने एवं सनातन धर्म की महान विरासत के बारे में डा. बलेश कुमार ने प्रकाश डाला। गौरतलब है कि डॉ. देशबन्धु को 27 फरवरी को होशियारपुर के गोस्वामी गणेश दत्त सनातन धर्म महाविद्यालय में आयोजित अधिवेशन में अगले पांच वर्षों के लिए सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब),

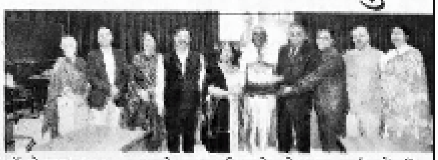

डॉ. देशबन्धु का स्वागत करते हुए एसडी कालेज के प्रधानाचार्य राजेंद्र सिंह

नई दिल्ली एवं श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। जिसके अन्तर्गत जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब हरियाणा, चण्डीगढ़, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, दिल्ली एवं राजस्थान में स्थापित 147 संस्थाएं व मंदिर, 52 स्कूल, 22 कालेज, 125 श्री सनातन धर्म महावीर दल की इकाईयां, सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार व चण्डीगढ़ का गोस्वामी गणेशदत्त भवन शामिल है। इससे पूर्व डॉ. देशबन्धु ने 18 साल चंडीगढ़ के एसडी कॉलेज में प्राध्यापक के रूप कार्य किया एवं 1997 से 2014 तक सनातन धर्म महाविद्यालय अंबाला छावनी में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया वर्तमान में वह सनातन धर्म महाविद्यालय प्रबन्धन कार्यकारिणी के उपाध्यक्ष भी हैं। इस अवसर पर सनातन धर्म सभा एवं विभिन्न शिक्षा संस्थाओं को आगे ले जाने वाली

महान विभूतियों जैसे भारतरत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय, पंडित दीनदयाल वानप्रस्थी, गोस्वामी गणेशदत्त एवं डा. राजेन्द्र प्रसाद इत्यादि के योगदान को भी सराहा गया। मुख्यातिथि डा. देशबन्धु ने बताया कि कितनी मेहनत से सनातन धर्म सभा से जुड़े विद्वानों ने घर-घर से चन्दा एकत्रित करके इन संस्थाओं की नींव रखी। अब इस धरोहर एवं परम्परा को सहेज कर रखना हम सब युवाओं की जिम्मेदारी है। कार्यक्रम के अन्त में मुख्यातिथि को महाविद्यालय की ओर से सम्मान चिन्ह भेंट किया गया। इस अवसर पर डा. आशुतोष, डॉ. अलका शर्मा, डॉ. हररूप विर्क, डॉ. विजय शर्मा, डॉ. नवीन गुलाटी, डॉ. हरविन्द्र कौर, डॉ. चिमन लाल, डा. सुनील गोस्वामी, डॉ. मदन, डॉ. सुशील पीजान एवं समस्त स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

डा. देशबंधु व उनकी पत्नी को सम्मानित करते प्राचार्य और अन्य।

पूर्व प्राचार्य डा. देशबंधु को एस.डी. कालेज में सम्मान समारोह में किया सम्मानित

अम्बाला छावनी, 9 मार्च (कोचर): कैंट के एस.डी. कालेज पूर्व प्राचार्य डा. देशबंधु को सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब), नई दिल्ली एवं श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर उनके लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

प्राचार्य डा. राजेंद्र सिंह व अन्य शिक्षकों ने मुख्य अतिथि डा. देशबंधु व उनकी धर्मपत्नी भारती बंधु को शॉल भेंट कर उनका अभिनंदन किया। कार्यक्रम का मंच संचालन रसायन शास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफैसर एवं कॉलेज स्टॉफ काउंसिल के सचिव डा. जोगिंद्र रोहिल्ला ने किया। डा. आशुतोष अंगिरस और डा. बलेश कुमार ने डा. देशबंधु की उपलब्धियों व सनातन धर्म की महान विरासत के बारे में प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि डा. देशबंधु ने बताया कि कितनी मेहनत से सनातन धर्म सभा से जुड़े विद्वानों ने घर-घर से चंदा एकत्रित करके इन संस्थाओं की नींव रखी। अब इस धरोहर एवं परम्परा को सहेजकर रखना हम सब युवाओं की जिम्मेदारी है। इस मौके पर आशुतोष, डा. अल्का शर्मा, डा. हररूप विर्क, डा. विजय शर्मा, डा. नवीन गुलाटी ... आदि मौजूद रहे।

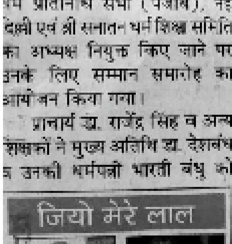

ਪੰਜਾਬ ਫੈਕਸ

ਹਰ ਖਬਰ ਆਪ ਲਈ

RNI NO:PUNBIL/2014/62126 7986036795

★ महंत स्वरूप बिहारी शरण जी ऑल इंडिया ब्राह्मण फ्रंट के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत ★

ब्राह्मण समाज में खुशी की लहर : कैप्टन सुभाष शर्मा

[illegible]

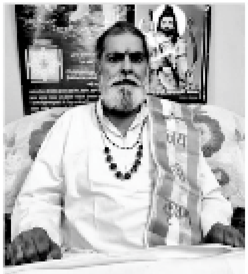

महंत स्वरूप बिहारी शरण जी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
ऑल इंडिया ब्राह्मण फ्रंट

पंजाब केसरी FRI, 29 APRIL 2022
EDITION: SANGRUR KESARI, PAGE NO. 2
शुक्रवार FRIDAY 29 अप्रैल 2022

हैदराबाद में मालेरकोटला के मंहत स्वरूप बिहारी शरण बने आल इंडिया ब्राह्मण फ्रंट राष्ट्रीय अध्यक्ष

[illegible]

ਮਹੰਤ ਸਰੂਪ ਬਿਹਾਰੀ ਸ਼ਰਨ ਆਲ ਇੰਡੀਆ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਫ਼ਰੰਟ ਦੇ ਕੌਮੀ ਪ੍ਰਧਾਨ ਚੁਣੇ

ਮਲੇਰਕੋਟਲਾ, 27 ਅਪ੍ਰੈਲ (ਪਾਰਸ ਜੈਨ) ... ਆਪਣੀਆਂ ਮੰਗਾਂ ਲਈ ਇਕੱਠੇ ਹੋਣਾ ਚਾਹੀਦਾ ਹੈ. ਉਨ੍ਹਾਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਸਮਾਜ ...

ਮਹੰਤ ਸਰੂਪ ਬਿਹਾਰੀ ਸ਼ਰਨ ਦਾ ਆਲ ਇੰਡੀਆ ਬ੍ਰਾਹਮਣ ਫਰੰਟ ਦਾ ਪ੍ਰਧਾਨ ਚੁਣੇ ਜਾਣ 'ਤੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਸਨਮਾਨ ਕਰਦੇ ਹੋਏ ਆਗੂ। ਤਸਵੀਰ: ਪਾਰਸ ਜੈਨ

महंत स्वरूप बिहारी शरण जी ऑल इंडिया ब्राह्मण फ्रंट के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोनीत

ब्राह्मण समाज में खुशी की लहर : प्रदीप भारती

महंत स्वरूप बिहारी शरण जी को बधाई देते अन्य।

प्रदीप भारती, अध्यक्ष ब्राह्मण सभा (मोगा)

मोगा (कैप्टन सुभाष शर्मा) गत दिवस हैदराबाद में आयोजित ऑल इंडिया ब्राह्मण फ्रंट के राष्ट्रीय अधिवेशन में भारत वर्ष के अलग अलग प्रांतों से ब्राह्मण समाज के गणमान्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया। पंजाब से माननीय महंत स्वरूप बिहारी शरण जी उक्त अधिवेशन में विराजमान हुए थे। सर्व सम्मति से ब्राह्मण कुल गौरव माननीय महंत स्वरूप बिहारी शरण जी को राष्ट्रीय अध्यक्ष चुन कर इस उच्च पद पर मनोनीत किया गया एवं कार्यकारणी का गठन करने हेतु भी उन्हें अधिकार दिए। महंत जी ने प्रेस वार्तालाप में बताया कि इस अधिवेशन में विशेष मुद्दों पर जैसे कि गौमाता को राष्ट्रीय पशु घोषित करना,ब्राह्मण वैल्फेयर बोर्ड का गठन करना, संस्कृत विद्यालयों की स्थापना,संस्कृत भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर लागू करवाना एवं भगवान श्री परशुराम जी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय अवकाश करवाना इत्यादि पर भी प्रस्ताव पारित हुआ। महंत जी की नव पद प्रतिष्ठा हेतु ब्राह्मण समाज में खुशी की लहर है। ब्राह्मण सभा मोगा के अध्यक्ष एडवोकेट प्रदीप भारती एवं समाज की अन्य सभाओं संगठनों की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ बधाई भेंट की जा रही हैं।

IV www.punjabkesari.in (पटियाला केसरी)

श्री सनातन धर्म महावीर दल ने 11 लड़कियों के करवाए विवाह : रमेश गर्ग

श्री सनातन महावीर दल द्वारा 303 लड़कियों के विवाह करवाना प्रशंसनीय : सतिंदरपाल कौर वालिया

■ विधायक चेतन सिंह जोड़ा माजरा ने नव-विवाहित जोड़ों को दी शुभकामनाएं

नव-विवाहित जोड़ों को सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए आशीर्वाद देते हुए मुख्य मेहमान हलका विधायक चेतन सिंह जोड़ा माजरा व आयोजन में पहुंची प्रमुख शख्सियतें। (अनेजा)

समाना, 27 मार्च (अनेजा) : श्री सनातन धर्म महावीर दल समाना की तरफ से श्री अग्रवाल धर्मशाला में संस्था प्रधान व उद्योगपति रमेश गर्ग की अध्यक्षता में 11 लड़कियों के विवाह करवाए गए। इससे पहले श्री सनातन धर्म महावीर दल समाना 292 जरूरतमंद परिवारों की लड़कियों के विवाह करवा चुका है। इस दौरान मुख्य मेहमान के तौर पर हलका विधायक चेतन सिंह जौड़ा माजरा व अमित सिंगला चेयरमैन एस.आर.एस विद्यापीठ ने भाग लिया।

आयोजन में विशेष तौर पर पटियाला से समाज सेविका मैडम सतिन्दरपाल कौर वालिया, पवन बांसल प्रधान आढ़ती एसोसिएशन समाना, ललित सिंगला सी.ए. भी शामिल हुए। विवाह समारोह में पहुंची [illegible]

समाज सेवी कार्यों के लिए हम सभी को आगे आना होगा। इसलिए जरूरतमंदों की मदद हमें समय-समय पर व हैसियत अनुसार जरूर करनी चाहिए क्योंकि समाज सेवी संस्थाएं लोगों के सहयोग के बिना नहीं चल सकतीं।

इसलिए समाना निवासी किस्मत वाले हैं कि यहां बड़ी संख्या में दानवीर रहते हैं।

संस्था सचिव रजत गोयल ने बताया कि संस्था द्वारा यह विवाह समारोह पूरे रीति रिवाजों के साथ करवाए जाते हैं क्योंकि विवाह [illegible] बच्चियों के अलावा काफी समान दिया जाता है।

उन्होंने कहा कि बड़ी खुशी की बात है कि यह सारा समान संस्था को कभी खरीदना नहीं पड़ा, क्योंकि यह सारा समाना दानवीरों द्वारा संस्था को दिया जाता है, जो इन विवाहिता [illegible]

पर स्वर्णकार संघ समाना, जनरल मर्चेंट एसोसिएशन समाना, श्री श्याम संकीर्तन मंडल समाना, न्यू कृष्णा सेवा समिति समाना, श्री सिद्धिविनायक गणेश मंडल समाना, श्री श्याम बाबा लंगर समिति समाना, जय मां चिंतपूर्णी क्लब व पेपर ट्रेडर्स समाना [illegible]

समाना में संस्था ने 11 जरूरतमंद परिवारों की बेटियों की शादी करवाई

श्री सनातन धर्म महावीर दल ने अग्रवाल धर्मशाला में किया सामूहिक विवाह का आयोजन

अजीत समाचार

श्री सनातन धर्म महावीर दल ने निर्धन लड़कियों की सामूहिक शादी कार्रवाई

अग्रवाल धर्मशाला में जरूरतमंद परिवारों की लड़कियों की सामूहिक शादी का दृश्य। (छाया : जतिंदर गोयल)

समाना 27 मार्च (जतिंदर गोयल) श्री सनातन धर्म महावीर दल की तरफ से संस्था के प्रधान रमेश गर्ग के नेतृत्व में अग्रवाल धर्मशाला में 11 जरूरतमंद परिवारों की लड़कियों की सामूहिक शादी का कार्यक्रम आयोजित किया गया। [illegible]

विभिन्न संस्थाओं की गतिविधियां

श्री हनुमान मंदिर में राम नवमी पर दुर्गा स्तुति पाठ करवाया व कंजक पूजन किया

रामनवमी पर महामाई का आशीर्वाद प्राप्त करते मंदिर प्रबंधक कमेटी के मैंबर। (बिराज)

छेहर्टा, 10 अप्रैल (जगजीत सिंह): श्री सनातन धर्म पंजाब महावीर दल श्री हनुमान मंदिर जीटी रोड छेहर्टा में श्री राम नवमी बड़ी धूमधाम से मनाई गई, इसमें श्री दुर्गा स्तुति का पाठ करवाया गया और भोग डाला गया कंजकों का पूजन किया गया। उसके उपरांत प्रसाद बांटा गया। इसमें मुख्य मेहमान श्री वीरेंद्र ऐरी और रमन रम्मी, पार्षद रजनी शर्मा मौजूद रहे और मंदिर कमेटी के प्रधान पवन कुमार, चेयरमैन श्री दविंदर भनोट, सेक्रेट्री नरेंद्र कुमार, हरीश चंद्र,पलविंदर कुमार, रमेश कुमार, दीनानाथ, सुरेंद्र कुमार, राकेश कुमार, रमन कुमार, डॉ रमेश कुमार, सुशील कुमार,पंडित राकेश शर्मा सभी मौजूद थे।

हवन यज्ञ कर धूमधाम से मनाया भारतीय नववर्ष

• सनातन संस्कृति का प्रचार प्रसार करने के लिए किए विचार

श्री परशुराम वाटिका में समागम की जानकारी देते गणमान्य।

पटियाला, 3 अप्रैल (धीर): अखिल भारतीय सनातन समाज वैल्फेयर फ्रंट की तरफ से आज श्री परशुराम वाटिका पटियाला में भारतीय नववर्ष धूमधाम के साथ हवन यज्ञ कर मनाया। इस नववर्ष समारोह में सनातन संस्कृति का पूरे पंजाब में प्रचार प्रसार करने के लिए विचार किए गए। जैसे कि चेत का पहला नवरात्र भारतीय नववर्ष था, जहां यह नया साल पूरे भारत में धूमधाम के साथ मनाया जाता था अब यह प्रथा लगभग लुप्त हो गई। इस मौके अश्वनी भास्कर शास्त्री ने बताया की इसी दिन ब्रह्मा जी ने सृष्टि की रचना आरंभ की थी और सतयुग भी इस दिन से शुरू हुआ था, भारत की भूमि पर यह एक बड़े त्यौहार के रूप में मनाया जाता था, अब हमारा सभी का फर्ज बनता है कि राष्ट्रीय एकता का नारा बुलंद करते हुए अपने राष्ट्र के हित में दोबारा से सनातन संस्कृति को घर-घर पहुंचाएं। अखिल भारतीय सनातन समाज वैलफेयर फ्रंट ने अपील की की सब मिलकर सनातन संस्कृति की लहर को घर घर पहुंचाएं और बिखरी हुई माला को फिर सुरजीत करें। इस मौके ब्राह्मण भलाई बोर्ड के चेयरमैन हरिन्दर पाल शर्मा कौरजीवाला ने कहा कि सनातन समाज के हकों की लड़ाई आखिरी सांस तक लड़ता रहेंगे। इस मौके पर ईश्वर चंद शर्मा, नितिन पंजोला, गोबिंद राम सेठ, यादविंदर शर्मा, राज कुमार शर्मा, रोबिन खोसला, पवन कुमार, अश्वनी गग्गी, डा धर्मपाल रायपुर मंडला, आत्मा राम धबलान, दर्शन सिंह पी आर टी सी, महेन्दरपाल बहादुरगढ़, पवन पंजोला, अजय जैनगर, जितेश जोली, राम गोपाल शर्मा, भूषण शर्मा, अशोक शर्मा मौजूद रहे।

हनुमान मंदिर छेहर्टा में नवरात्रि के पहले दिन दुर्गा स्तुति पाठ करवाया

छेहर्टा, 2 अप्रैल (जगजीत सिंह) : श्री सनातन धर्म पंजाब महाबीर दल श्री हनुमान मंदिर छेहर्टा अमृतसर में नवरात्रि के पहले दिन और हिंदू नव वर्ष की शुरुआत पर दुर्गा स्तुति पाठ पढ़ते हुए मंदिर को सजाया गया और दीपमाला की गई। इस अवसर पर प्रधान पवन कुमार चेयरमैन, दविंदर भनोट, नरेंद्र कुमार, सुरेंद्र कुमार, प्रदीप कुमार, राकेश कुमार, रमेश कुमार, महेश चंद्र, परमिंदर शर्मा, पंडित राकेश कुमार भी थे।

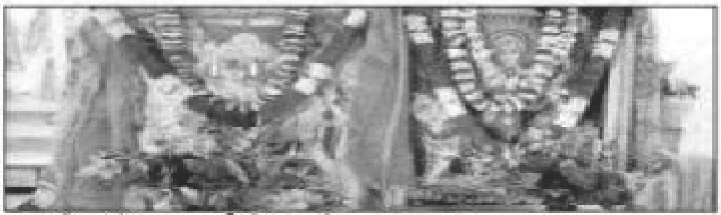

मंदिर में महामाई के सजे हुए सुंदर स्वरूप।

पहले नवरात्रि पर पाठ करती संगत। (विराज)

श्री सनातन धर्म सभा अम्बाला छावनी

सनातन धर्म सभा अम्बाला छावनी के पदाधिकारी, बी.पी.एस. प्लेनीटोरियम में श्री हनुमान मन्दिर का नींव पत्थर रखते हुए।

अम्बाला भास्कर 05-05-2022

एसडी स्कूल में पोक्सो एक्ट पर किया नुक्कड़ नाटक का मंचन

बच्चों को बताया अच्छे और बुरे स्पर्श में अंतर

अंबाला। सनातन धर्म सीनियर सेकेंडरी स्कूल में गांधी मेमोरियल नेशनल कॉलेज के विद्यार्थियों ने नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया। महाविद्यालय रेडक्रॉस सोसायटी के समन्वयक डॉ. राकेश कुमार ने बताया कि नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समझाया कि पॉक्सो एक्ट बच्चों के लिए एक अच्छा हथियार है। नाटक के माध्यम से बताया कि यौन अपराध केवल लड़कियों के साथ ही नहीं होता, अपितु लड़कों के साथ भी होता है। अगर ऐसा किसी के साथ होता है तो बच्चे को यह बताते हुए शर्माना नहीं चाहिए।

मास कम्युनिकेशन विभाग के सहायक प्रवक्ता अनिल कुमार यादव ने बच्चों को बताया कि अगर कोई भी आपका मित्र आपको गलत तरीके से स्पर्श करता है तो आप इसकी शिकायत कर सकते हैं। नुक्कड़ नाटक के माध्यम से सरल शब्दों में समझाया कि किस तरह से आप एक अच्छे और बुरे स्पर्श में अंतर कर सकते हैं। विद्यालय के चेयरमैन उमा कांत ने नुक्कड़ नाटक टीम को बधाई दी। मंच का संचालन प्राध्यापिका पिंकी शाह ने किया। विद्यालय के प्राचार्य शशि शर्मा ने कहा कि आज के समय में यह आवश्यक है कि इस तरह के विषयों को लेकर विद्यार्थियों को जागरूक किया जाए। संवाद

सनातम धम सा.स.स्कूल म पाक्सा एक्ट पर नुक्कड़ नाटक का किया गया आयोजन

श्री सनातन धर्म सभा मण्डी (हि.प्र.) तथा बठिण्डा (पंजाब) की गतिविधियां

हवन में आहुतियां देकर मांगी सुख और समृद्धि

जासं, बठिंडा : श्री सनातन धर्म सभा की तरफ से हाथी वाला मंदिर में श्री हनुमान जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सुबह 10:30 बजे हवन किया गया। इसमें श्रद्धालुओं ने आहुतियां देकर सुख और समृद्धि की कामना की। शाम सात बजे से आठ बजे तक बालाजी का संकीर्तन किया गया। संकीर्तन के उपरांत सभी श्रद्धालुओं में प्रसाद वितरित किया गया। इस मौके पर श्री सनातन धर्म सभा के प्रधान सीए प्रमोद मित्तल, वित्त सचिव पवन कुमार गुप्ता, समाजसेवी ठेकेदार विजय जिंदल, महासचिव रमेश गोयल, मंदिर प्रबंधक सुरेश बंसल, सभा के मैनेजर सुरिंदर मित्तल, अजय गोयल सहित काफी संख्या में श्रद्धालु हाजिर थे।

बठिंडा में श्री सनातन धर्म सभा की तरफ से श्री हनुमान जन्मोत्सव पर आयोजित हवन के दौरान उपस्थित प्रधान प्रमोद मित्तल, पीके गुप्ता, विजय जिंदल ● जागरण

जागरण सिटी बठिंडा/मानसा

गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल

गतिविधियों की झलकियाँ

संसद में कानून में बदलाव कराने को लेकर ज्ञापन सौंपा

अजय प्रताप सिंह

प्लास्टिक पर प्रतिबंध विषय पर हुई प्रतियोगिता

...न विषय पर सेमिनार का...

Discourse on “Literature: A Mirror of Life”

Palwal: English department of GGDSD College, Palwal organised a discourse on 'Literature: mirror of life' today.

Dr Vidushi Bhardwaj of NDIM, New Delhi was invited for the talk on this very pertinent

...सडी कालेज में गणित एक फोबिया विषय पर वेबिनार हुआ

...पर सेमिनार लगाया

एसडी कालेज में गांधी अंबेडकर विवाद पर बेबिनार हुआ

अजय प्रताप सिंह

पलवल। एसडी कालेज पलवल में आज इतिहास और राजनीति विज्ञान विभाग के संयुक्त तत्वाधान में गांधी आंबेडकर विवाद, जाति उन्मूलन के तरीके विषय पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

...न" विषय पर सेमिनार का आयोज...

फ्लोरेसेंस बेस्ड एनालिसिस विषय पर आधारित सेमिनार का आयोजन

एसडी कालेज में चुबकत्व विषय पर व्याख्यान हुआ

अजय प्रताप सिंह

पलवल। एसडी कालेज पलवल में आज भौतिकी विभाग द्वारा 'चुम्बकत्व' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें प्रमुख वक्ता नेहरू कालेज फरीदाबाद की सहायक

गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय पलवल
गतिविधियों की झलकियाँ

गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय हरियाणा (होशियारपुर)
गतिविधियों की झलक

गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज राजपुर (पालमपुर)
गतिविधियों की झलक

गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज राजपुर (पालमपुर)
गतिविधियों की झलक

नई शिक्षा नीति समय की मांग : डॉ. सतीश

राजपुर (कांगड़ा)। कृषि विवि पालमपुर के पूर्व अनुसंधान निदेशक डॉ. सतीश शर्मा ने जीजीडीएसडी कॉलेज राजपुर में छात्रों और कर्मचारियों को व्यावसायिक शिक्षा के नए आयाम, चुनौतियां और प्राथमिकताओं पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने संस्थान के मुख्य मिशन पर प्रकाश डाला। कहा कि उच्च शिक्षा ने वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में प्रवेश किया है और गुणवत्ता शिक्षा आश्वासन पर ध्यान केंद्रित करते हुए उच्च शिक्षा में अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता की आवश्यकता है। उन्होंने एनएएसी की उच्च ग्रेडिंग के लिए प्रमुख कार्यक्रमों का वातावरण बनाने में सक्षम संकाय के साथ एक रचनात्मक और अभिनव दूरदर्शी दृष्टिकोण विकसित कर उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने की वकालत की। उन्होंने नई शिक्षा नीति 2020 को लागू करने की आवश्यकता पर भी बल दिया, ताकि भारत को 21वीं सदी के अनुकूल शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, बहुविषयक बनाकर एक जीवंत ज्ञान समाज में परिवर्तित किया जा सके। डॉ. विवेक कुमार शर्मा, निदेशक सह प्राचार्य ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया। संवाद

रोटरी क्लब के सदस्यों और राजपुर कॉलेज के छात्रों ने किया रक्तदान

नई शिक्षा नीति लागू करने की जरूरत

पालमपुर। बुधवार को डा. सतीश सी शर्मा, पूर्व निदेशक अनुसंधान हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर ने जीजीडीएसडी कालेज पालमपुर रिम के संकाय छात्रों, कर्मचारियों और निकाय के सदस्यों को व्यावसायिक शिक्षा के नए आयाम-चुनौतियां और प्राथमिकताओं पर एक व्याख्यान दिया। उन्होंने एनएएसी की उच्च ग्रेडिंग के लिए प्रमुख कार्यक्रमों का वातावरण बनाने में सक्षम संकाय के साथ एक रचनात्मक और अभिनव दूरदर्शी दृष्टिकोण विकसित करके उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने की पुरजोर वकालत की। उन्होंने नई शिक्षा नीति 2020 को लागू करने की आवश्यकता पर भी बल दिया। डा. विवेक कुमार शर्मा, निदेशक सह प्राचार्य ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया और उद्योग की आवश्यकता के अनुसार छात्रों को कुशल बनाने और उद्यमी बनने के लिए कौशल विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया।

राजपुर में छात्रों को जी.एस.टी. का दिया प्रशिक्षण

पालमपुर, 23 मार्च (भूपु): जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज राजपुर ने इंस्टीच्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया हिमाचल ब्रांच और हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम के सहयोग से जी.एस.टी. में 40 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। 17 छात्रों के पहले बैच ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा किया। उन्हें बुधवार कॉलेज में आयोजित एक समारोह में पूर्णता प्रमाण पत्र वितरित किए। इस अवसर पर आई.सी.ए.आई. की हिमाचल शाखा के सी.ए. पार्थ गरोड़ा विशिष्ट अतिथि थे। उन्होंने छात्र को पाठ्यक्रम के महत्व पर जोर दिया। कॉलेज के निदेशक डा. विवेक शर्मा ने छात्रों पर जोर देते हुए कहा कि इस कोर्स में प्रशिक्षण लेकर छात्र जी.एस.टी. अकाउंटेंट असिस्टेंट के रूप में अपने करियर की शुरूआत एक कर्मचारी या फ्रीलांसर अकाउंटेंट के रूप में कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यवसायी को जी.एस.टी. के नियमों और विनियमों का पालन करने की आवश्यकता है और इसके लिए उसे योग्य जी.एस.टी. लेखा सहायक की सहायता की आवश्यकता है। इस अवसर पर कार्यक्रम के संयोजक अश्विनी शर्मा, सी.ए. नवनीत शर्मा, अध्यक्ष आपदा, हिमाचल शाखा उत्तर भारत क्षेत्रीय परिषद चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान ने उत्तीर्ण प्रशिक्षु को शुभकामनाएं दीं।

पालमपुर: जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज राजपुर में जी.एस.टी. में 40 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित प्रशिक्षार्थी। (छाया)

फेस पेंटिंग प्रतियोगिता में दीक्षा प्रथम

पालमपुर, 22 मार्च (भूपु): गोस्वामी गणेश दत्त महाविद्यालय राजपुर में ... [illegible]

पालमपुर: प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों के साथ।

राजपुर कालेज में 80 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

अंतरराष्ट्रीय रोटरी दिवस पर रोटरी-रोट्रैक्ट क्लब के सदस्यों-छात्राओं ने किया खूनदान

[illegible]

THU, 24 FEBRUARY 2022
EDITION: KANGRA KESARI, PAGE NO. 8

रोटरी दिवस पर 80 ने किया महादान

[illegible]

राजपुर और सल्याणा बाल आश्रम में बच्चों को बांटी कॉपियां-पे

[illegible]

गर्व के क्षण

सनातन धर्म शिक्षा संस्थाओं की अद्भुत खेल प्रतिभाएं

Saurav won silver medal in Karate in a ISKF KARATE CUP CHAMPIONSHIP held at Jalandhar on 22-05-2022

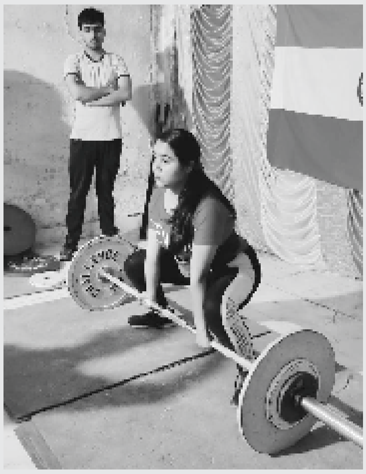

चांद पब्लिक स्कूल की छात्रा सेजल गौतम ने पावर वेट लिफ्टिंग में जिला स्तर पर 80 कि.ग्रा. भार उठा कर सिल्वर मेडल जीता तथा साथ ही उनका चयन स्टेट लेवल के लिए हुआ।

दी एस.डी.विद्या स्कूल अम्बाला छावनी
गतिविधियों की झलकियाँ

सनातन धर्म पुल्लरवान गर्ल्ज़ सी.सै. स्कूल जालंधर
गतिविधियों की झलक

श्री रामचरित मानस के अखंड पाठ के साथ, सत्र का शुभारंभ

बैसाखी उत्सव

राष्ट्रीय कैडेट कोर के दिवस रात्रि शिविर की झलक

नन्द कुमार सनातन धर्म चांद पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल, पालमपुर (हि.प्र.)

गतिविधियों की झलकियाँ

नव सत्र का शुभारम्भ हवन से

स्वच्छता अभियान

स्लोगन लेखन प्रतियोगिता

मेडिकल जांच शिविर

पोस्टर मेंकिंग प्रतियोगिता

मातृ दिवस उत्सव

नन्दकुमार सनातन धर्म पब्लिक स्कूल सिद्धपुर सरकारी स्कूल की गतिविधियों की झलकियाँ

एस एम एस डी इंटर कॉलेज

कनखल हरिद्वार

प्रधनाचार्या
मीनाक्षी शर्मा

प्रवेशोत्सव 2022

20 अप्रैल 2022 एस एम एस डी इंटर कॉलेज कनखल हरिद्वार में प्रवेशोत्सव उल्लास पूर्वक मनाया गया। नव प्रवेशी छात्र छात्राओं का स्वागत कर उन्हें विद्यालय की परम्पराओ एवं उद्देश्यो से अवगत कराया गया।

उपहार वितरण कार्यक्रम

2 मई 2022 एस एम एस डी इंटर कॉलेज कनखल हरिद्वार में समाजसेवी गिरीश चंद्र कोल की प्रेरणा से पूर्व विधायक श्री संजय गुप्ता जी ने छात्रों को स्कूल बैग वितरित किये। इस अवसर पर प्रबंधक श्री सतपाल ब्रह्मचारी पूर्व प्रबन्धक श्री सुनील पाण्डेय समाज सेवी श्री कमल बोरा जी उपस्थित रहे। श्री गिरीश चन्द्र कोल जी ने बच्चो को आशीर्वचन एवं शुभकामनाएं दी।

प्रतिभा दिवस

21 मई 2022 को एस एम एस डी इंटर कॉलेज कनखल हरिद्वार में प्रतिभा दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । विधार्थियो द्वारा लोक संगीत एवं लोक नृत्य प्रस्तुत किये गए। सुलेख भाषण एवं पेंटिंग प्रतियोगिताओ का आयोजन किया गया।छात्र छात्राओं को सम्मान पूर्वक जीवन यापन हेतु उत्तराखण्ड के लघु उद्योगों की जानकारी दी गई।

सावधानी में ही सुरक्षा है

4 मई 2022 एस एम एस डी इंटर कॉलेज कनखल में इनर व्हील क्लब के सहयोग से हरिद्वार पुलिस की नारकोटिक सेल एवन साइबर क्राइम ब्रांच ने छात्रों को साइबर क्राइम ह्यूमेन ट्रेफिकिंग ड्रग्स के बारे में जागरुकता कार्यक्रम किया। सी ओ सिटी श्री शेखर सुयाल ने रोचक कहानियों के माध्यम से छात्रों को नशे के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा दी। सी ओ ऑपेरशन सु श्री निहारिका सेमवाल ने ह्यूमेन ट्रेफिकिंग के बारे में जानकारी दी। नारकोटिक सेल से आए श्री शक्ति सिंह एवं श्री देशराज ने छात्रों को ड्रग्स के दुष्प्रभाव एवं साइबर क्राइन से बचने के उपाय बताए।

पं. अमरनाथ सनातन धर्म पब्लिक स्कूल, बैजनाथ - गतिविधियों की झलक

On the occasion of Death Anniversary of Pt. Amar Nath Sharma Ji

Flower Making Competition

Celebrating Mother's Day
Poster Making Competition

On the Birth Annivesary of Madan Mohan Malviya Ji

On the Event of Republic Day

On the occasion of Death Anniversary of Pt. Amar Nath Sharma Ji

Our Little Children Showing their Creativity

Donation of Books, Dresses and Shoes by the students

बचपन स्कूल नगरोटा - गतिविधियों की झलक

आसा राम पब्लिक स्कूल, कुलदीप नगर जी.टी. रोड, अम्बाला छावनी
गतिविधियों की झलक

एल.एस.डी. सीनियर सैकण्डरी स्कूल बस्सी, दौलत खान
गतिविधियों की झलकियाँ

अर्न्तकक्षा बास्केट बाल प्रतियोगिताएं

हस्तलेख प्रतियोगिता

रस्साकूद प्रतियोगिता

लुधियाना महावीर दल (रजि.) मन्दिर श्री बांके बिहारी लाल जी के निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

प्रधान	राज कुमार गोयल	प्रचार मंत्री	नवीन मल्होत्रा
उप प्रधान	बलवीर कुमार शर्मा	प्रेस इंचार्ज	सचिन गुप्ता
महामन्त्री	सुभाष चन्द्र खुराना	नायक	जतिंदर कुमार राजू
सहमन्त्री	अरविंद कुमार गोयल	उपनायक	विपन कुमार जग्गी
कोषाध्यक्ष	नन्द किशोर अग्रवाल	संरक्षक	केवल कृष्ण अग्रवाल एवं वेद प्रकाश अरोड़ा

श्री सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार की गौ-शाला का सदस्यता प्रपत्र

मैं .... श्री सत्पऋषि आश्रम हरिद्वार की गौ-शाला का .... रुपये का आजीवन / वार्षिक सदस्य बनना चाहता हूँ। इसके लिए नकद/चैक/ड्राफ्ट नं .... श्री सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार के नाम भेज रहा हूँ।

नाम: ....

पता: ....

....

दूरभाष नं. .... ई-मेल ....

1. आजीवन सदस्य : रु 11000/-

   वार्षिक सदस्य : (क): रु 3100/-, (ख): रु 2100/-, (ग): रु 1100/-

नोट : दान राशि आयकर की धारा 80 जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

Sapat Rishi Ashram Gaushala, Haridwar
Bank Name: Punjab National Bank, Shanti Kunj, Haridwar
A/c No. 4694000100047524 **IFSC Code:** PUNB0469400

''सनातन संवर्धिनी'' - सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

दूरभाष नं. .... ई-मेल ....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी०) द्वारा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के सौजन्य से प्रकाशित की जा रही ''सनातन संवर्धिनी'' नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 200/- रु. (दो सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती हूँ।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद / चैक / ड्राफ्ट द्वारा श्री सनानत धर्म शिक्षा समिति (पंजी.) अम्बाला छावनी के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही हूँ।

Sanatan Dharma Education Board
Bank Name: Central Bank of India, Mahesh Nagar Branch, Ambala Cantt
A/c No. 1852019141 **IFSC Code:** CBIN0281156

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

संस्थापक

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) रजि०

भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्किट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055

(कार्यक्षेत्र : दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान)

Shri Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha (Punjab) Regd.

Bhupendra Bhawan, Krishna Market, Pahar Ganj, New Delhi- 110055

E-mail : sdprsabha@gmail.com **Phone:** 9820694600, 7977193471

संयोजक

दिनांक...........................

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली की आजीवन सदस्यता का प्रपत्र

APPLICATION FOR LIFE MEMBERSHIP OF SHRI SANATAN DHARMA PRATINIDHI SABHA (PANJAB) NEW DELHI

Name (In Capital Letters)/ नाम ....

Father's Name/ पिता का नाम ....

Mother's Name/ माता का नाम ....

Date of Birth/ जन्म तिथि ....

Permanent Address/ स्थाई पता ....

....

Address for correspondence/ पत्राचार का पता ....

....

Mail id/ ई-मेल ....

Mobile No./ मोबाईल न. ....

Are you member of any local sabha ? If yes mention the name of the Sabha and position being held by you/ क्या आप किसी स्थानीय सभा के सदस्य है। अगर हाँ, तो सभा का नाम तथा अपना पद लिखें ....

....

Give reference of a member of the local Sabha with address and designation/ किन्ही दो स्थानीय सभा के सदस्यों का पद सहित विवरण दें। ....

....

मैं वचन देता हूँ कि श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली के सब नियमों का पालन करूंगा। मैं श्री स. ध. प्र. स. की आजीवन सदस्यता के लिए निर्धारित शुल्क 11000/- रुपये (ग्यारह हजार रुपये) का चैक/ड्राफ्ट साथ संलग्न कर रहा हूँ या बैंक मे निम्न खाते में जमा करवा रहा हूँ।

I undertake to abide by all the rules and regulations of Shri Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha (Panjab) New Delhi and am depositing the Life membership fee of Rupees Eleven Thousand only (Rs. 11000/-) through cash / cheque / Bank Draft (Cheque/ Draft is being sent in favour of Shri Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha (Panjab) New Delhi payable at New Delhi)

Sanatan Dharma Pratinidhi Sabha

Bank Name: Punjab National Bank, Paharganj, New Delhi | **A/c No.** 02822010056000 **IFSC Code:** PUNB0028210

Place / स्थान

Signature/हस्ताक्षर

Admitted

Date / तिथि

Recommended

President / Working President

प्रधान/कार्यकारी प्रधान

ॐ श्री परमात्मने नमः

श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (पंजीकृत)

SHRI SANATAN DHARMA EDUCATION BOARD (Regd.)

कार्यालय : गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैक्टर 19-ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, **दूरभाष :** 94676-80690
उप-कार्यालय : 1117, प्रभू प्रेमपुरम, जगाधरी रोड, अम्बाला छावनी- 133 001
Phone: 9812053283 **email:** sanatandharmaeducationboard@gmail.com

अन्तर्गत : श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब)

(भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्किट पहाड़गंज, नई दिल्ली) दूरभाष : 9820694600, 7977193471
(कार्यक्षेत्र : दिल्ली, चण्डीगढ़ पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर)

APPLICATION FOR LIFE MEMBERSHIP OF
SHRI SANATAN DHARMA EDUCATION BOARD (REGD.) CHANDIGARH

Name (In Capital Letters) ....

Father's Name ....

Mother's Name ....

Date of Birth ....

Permanent Address ....

....

Address for correspondence ....

....

Mail id ....

Mobile No. .... Landline with STD Code ....

Are you member of any Institution ? If yes mention the name of the Institution and position being held by you ....

....

Give reference of a member of the local Institute with address and designation ....

....

....

I undertake to abide by all the rules and regulations of Shri Sanatan Dharma Education Board (Regd.) Chandigarh and am depositing the Life membership fee of Rupees Eleven Thousand only (Rs. 11000/-) through cash / cheque / Bank Draft (Cheque/ Draft is being sent in favour of Shri Sanatan Dharma Education Board payable at Ambala)

Sanatan Dharma Education Board
Bank Name: Central Bank of India, Mahesh Nagar Branch
A/c No. 1852019141 **IFSC Code:** CBIN0281156

Place — Signature

Date — Admitted

Recommended — President / Working President

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) एवं सनातन धर्म शिक्षा समिति के पंचवर्षीय चुनाव की झलकियाँ जो गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज हरियाना (होशियारपुर) में दिनांक 27.2.2022 को सम्पन्न हुआ

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) एवं सनातन धर्म शिक्षा समिति के पंचवर्षीय चुनाव की झलकियाँ जो गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज हरियाना (होशियारपुर) में दिनांक 27.2.2022 को सम्पन्न हुआ